नीति, कृषि और ज्योतिष की अनोखी पुस्तक

सम्पादक—

पं० हरिहरप्रसाद त्रिपाठी

भूमिका

प्राचीनकाल से ही भारत में कृषि-कार्य होता आ रहा है। इस देश के लोग कृषि-कर्म में बहुत ही प्रवीण हुआ करते थे तथा इस कार्य को आदर की दृष्टि से देखते थे। परन्तु, आधुनिक युग में इस कर्म को हेय समझा जाता है। क्षुधा निवारणार्थ तथा बल-वृद्धि के हेतु भोजन परमावश्यक है और भोजन कृषि-कर्म से मिलता है। जितना अच्छा भोजन होगा उतना ही अधिक बल बढ़ेगा और जितना अच्छा अनाज होगा, उससे उतना ही अच्छा भोजन तैयार होगा। अतएव, खेती सर्वोत्तम कार्य है। इसीसे आत्मिक, शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति होती है अर्थात् प्रत्येक प्राणियों का जीवन इसी पर आश्रित है।

इस पुस्तक में 'घाघ तथा भड्डरी के दोहों का समावेश किया गया है। घाघ कवि कन्नौज प्रान्त के बहुत ही दक्ष कृषक माने जाते हैं। इनके दोहों का सर्वत्र प्रचार है। अस्तु, प्रत्येक कृषक को यह अनोखी पुस्तक अपने पास रखने योग्य है।

जो व्यक्ति इनके कथनानुसार कृषि कार्य करेंगे, उन्हें अवश्य ही सफलता मिलेगी।

विषयानुक्रमणिका

घाघ की कहावतें			पृष्ठ संख्या

घाघ की कहावतें

नीति-विषयक बातें

अगसर खेती अगसर मार।
घाघ कहैं ये कबहुँ न हार॥ १॥

घाघ कवि का कहना है कि जो व्यक्ति खेती और युद्ध में सबसे पहले डट जाता है वह कभी असफल नहीं होता॥ १॥

नित्तै खेती दूसरे गाय।
जे नहिं देखै तेकर जाय॥ २॥

जो लोग प्रतिदिन खेती और दूसरे दिन गाय की रखवाली नहीं करते, उनकी ये दोनों चीजें नष्ट हो जाती हैं॥ २॥

प्रातःकाल खटिया से उठिके, पिये जो ठण्डा पानी।
ता घर कबहूँ वैद न अइहैं, बात घाघ का जानी॥ ३॥

जो व्यक्ति सवेरे सोकर उठते ही ठण्डा पानी पी लेता है, वह सदैव स्वस्थ रहता है। घाघ की इस बात को सत्य मानना चाहिये॥ ३॥

सावन घोड़ी भादों गाय।
माघ मास में भैंस बिआय॥
घाघ कहैं यह साँची बात।
आप मरे या मालिकै खात॥ ४॥

घाघ कहते हैं कि अगर सावन के महीने में घोड़ी, भादों में गाय तथा माघ में भैंस बिआय तो वह मर जायगी अन्यथा अपने मालिक को ही नष्ट कर डालेगी। यह बात सत्य है॥ ४॥

भुइयाँ खेड़े, हर है चार।
घर होय गिहथिन, गऊ दुधार॥
रहर की दाल, जड़हने क भात।
पाकल नीबू, औ घिव तात॥
दही खाँड़ जो, घर में होय।
तिरछे नैन, परोसे जोय॥
घाघ कहैं, सबही है झूठा।
वहाँ छाँड़ि, इहवैं बैकुण्ठा॥ ५॥

घाघ कवि का कथन है कि यदि खेत घर के पास हो, चार हलों की खेती हो, गृह-कार्य में कुशल स्त्री हो, दूध देने वाली गाय हो, खाने के लिए अरहर की दाल, जड़हन चावल का भात रहै, साथ ही साथ उसमें पके हुए नीबू का रस और घी मिला हो, घर में दही और खाँड़ हो, खाना को तिरछी आँखों वाली स्त्री परोसे तो स्वर्ग-सुख की सब बातें झूठ है अर्थात् ऐसे भाग्यवानों के लिए तो बैकुण्ठपुरी यहीं है॥५॥

पर हथ बनिज संदेशे खेती।
बिन देखे नर ब्याहे बेटी॥
द्वार पराये गाड़े थाती।
ये चारों मिल पीटे छाती॥ ६॥

दूसरे लोगों के विश्वास पर व्यवसाय, संदेश से खेती, बिना घर-द्वार देखे लड़की की शादी करने और अपने धन को दूसरे के दरवाजे पर गाड़ने वाले व्यक्ति अन्त में छाती पीटकर पश्चाताप ही करते हैं॥ ६॥

जिसकी छाती पर नहिं बार।
उसकी मत कीजै इतबार॥ ७॥

जिसकी छाती के ऊपर रोम न हों, उस मनुष्य की बातों में न फँसना चाहिये॥ ७॥

घर में नारी आँगन सोवै।
रन में जाकर छत्री रोवै॥
रात को सतुआ करे बियारी।
घाघ मरै तिनकी महतारी॥ ८॥

घर में स्त्री के रहते हुए भी जो कोई आँगन में सोता हो, जो क्षत्रिय लड़ाई के मैदान में जाकर रोता हो तथा जो रात्रि के समय सतुआ खाता हो तो इनकी माताओं को अपार शोक होता है॥ ८॥

खेती बारी कामिनी अरु घोड़े की तंग।
अपने हाथ सँवारिये, चहे लाख हों संग॥ ६॥

खेती, बागवानी, स्त्री और घोड़े की तंग को अपने ही हाथ से सँवारना चाहिये, चाहे साथ में लाखों आदमी क्यों न हों अर्थात् इन सबकी देख-रेख स्वयं करनी चाहिये॥ ६॥

बाढ़ै पूत पिता के धर्मा।
खेती होवै अपने कर्मा॥ १०॥

पिता के धर्मात्मा होने पर पुत्र की बढ़ती होती है, परन्तु खेती अपनी ही मेहनत और तकदीर से हो सकती है॥ १०॥

काँटा बुरा करील का, औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून की, अरु साझे का काम॥ ११॥

करील का काँटा, बदली की धूप, आटे की सौत और शरीकत का व्यापार बहुत ही खराब होता है॥ ११॥

चैते गुड़ बैसाखे तेल।
जेठ में पेठा असाढ़े बेल॥
सावन साग न भादों मही।
क्वार करेला कातिक दही॥
अगहन जीरा पूसे धना।

माहे मिश्री फागुन चना ॥
इन बारह से बचे जो भाई।
ता घर सपनेहुँ वैद्य न जाई ॥ १२ ॥

चैत्र के महीने में गुड़, बैशाख में तेल, ज्येष्ठ में पेठा, आषाढ़ में बेल, सावन में साग, भादों में मट्ठा, क्वार में करेला, कार्तिक में दही, अगहन में जीरा, पूस में धनियाँ, माघ में मिश्री तथा फाल्गुन के महीने में जो व्यक्ति चना नहीं खाता तो उसके यहाँ वैद्य को जाने की जरूरत नहीं पड़ती अर्थात् वह सदैव नीरोग रहता है ॥ १२ ॥

साधुबै दासी चोरबै खाँसी, प्रेम बिगारै हाँसी।
घग्घा उनकी बुद्धि बिगारै, खाय जो रोटी बासी ॥१३॥

साधुजनों को दासी, चोरों को खाँसी और प्रेम को हँसी नष्ट कर डालती है, उसी प्रकार जो आदमी बासी रोटी खाते हैं उनकी बुद्धि भी बिगड़ जाती है ॥१३॥

गया पेड़ जब बकुला बैठा।
गया गेह जब जोगिया पैठा ॥
गया राज जहँ राजा लोभी।
गया खेत जहँ जामी गोभी ॥१४॥

वृक्ष पर बगला के बैठने से वह वृक्ष नष्ट हो जाता है घर में जोगियों का आवागमन होने से घर का नाश होता है, राजा के लालची होने से उसका राज्य चला जाता है तथा जिस खेत में गोभी (एक प्रकार की छोटी घास) पैदा हो तो वह खेत भी नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है ॥१४॥

बगड़ बिराने जो रहै, सुनै त्रिया की सीख।
तीनों यों ही जायँगे, पाही बोवै ईख ॥१५॥

जो लोग आपस में झगड़ा करके दूसरे के घर में रहते हैं, जो केवल स्त्री की शिक्षा पर ही काम करते हैं, जो घर से बहुत दूर

ईख की खेती करते हैं—ये तीनों व्यक्ति बहुत शीघ्र ही नाश को प्राप्त होते हैं ॥१५॥

एक तो बसो सड़क पर गाँव।
दूजे बड़े बड़ेन में नाँव॥
तीजे रहे द्रव्य से हीन।
घग्घा ये हैं विपता तीन ॥१६॥

सड़क के पास बसने वाले गाँव, बड़े लोगों में ख्याति और धन का अभाव ये तीनों ही महान दुखदायी हैं ॥१६॥

आलस नींद किसानै नासै, चोरवै नासै खाँसी।
अखियाँ मैली वेश्या नासै, बाबै नासै दासी ॥१७॥

सुस्ती और निद्रा किसान को, खाँसी चोर को, मैली आँखें वेश्या को तथा दासी (सेविका) साधुओं को निकम्मा बना देती है ॥१७॥

ओछा मंत्री राजा नासै, तालै नासै काई।
सान साहिबी फूट विनासै, घग्घा पैर बेवाई ॥१८॥

तुच्छ विचार वाला मंत्री राजा को नष्ट कर देता है, काई तालाब को नष्ट करती है, आपसी झगड़ा प्रतिष्ठा का तथा बेवाई (पैरों में होने वाला एक रोग) पैर को खराब डालती है ॥१८॥

सावन हर्रै भादों चीत
क्वार मास गुड़ खायउ मीत॥
कातिक मूली अगहन तेल।
पूस में करो दूध से मेल॥
माघ मास घिउ खिचड़ी खाय।
फागुन निस उठि प्रात नहाय॥
चैत मास में नीम बेसहती।
बैसाखे में खाय अबहती॥

जेठ मास जो दिन में सोवै ।
तेकर जर असाढ़ में रोवै ॥१६॥

जो लोग सावन के महीने में हर्रे, भादों में चीता, क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पौष में दुग्ध, माघ में घी-खिचड़ी, फाल्गुन में नित्यप्रति तड़के का स्नान, चैत्र में नीम, बैसाख में भात खाते और ज्येष्ठ के महीने में दिन के समय सोते हैं, वे लोग सदा निरोग रहते हैं। आषाढ़ के महीने में ऐसे व्यक्तियों के लिए ज्वर रोता ही रह जाता है अर्थात् उन लोगों के ऊपर ज्वरादि का आक्रमण नहीं होता ॥१६॥

बैल चौंकना जोत में, अरु चटकीली नार ।
ये बैरी हैं प्रान के, कुशल करे करतार ॥२०॥

जोतने के समय भड़कने वाला बैल और तड़क-भड़क वाली औरत ये दोनों ही प्राण के शत्रु होते हैं। इनसे भगवान ही बचावे ॥२०॥

बैल बगौधा, निरघिन जोय ।
तेहि घर ओरहन, कबहुँन होय ॥२१॥

जिस घर में बगौधा अर्थात् सीधा बैल और मैले कुचैले वेश में स्त्री रहेगी तो उस घर में कभी भी किसी का उलहना सुनने को नहीं मिलेगा ॥२१॥

साँझ समय पर रहलो खाट, पड़ी भँड़ेहर बारह बाट ।
घर आँगन सब घिन घिन होय, घग्घा उनको देव डुबोय ॥२२॥

जो स्त्री शाम से ही बिस्तरे पर जाकर पड़ जाती है, जिसके बासन आदि इधर-उधर बिखरे पड़े रहते हैं, जिसका घर और आँगन न लीपे जाने की वजह से गन्दा रहता है, उस स्त्री को नष्ट हो जाना उचित है अर्थात् उसके रहने से कोई लाभ नहीं है ॥२२॥

निहपछ राजा मन हो हाथ ।
साधु परोसी नीमन साथ ॥

हुक्मी पूत धिया सतवार।
तिरिया भाई करे विचार॥
घाघ कहैं हम करत विचार।
बड़े भाग्य से दे करतार॥२३॥

घाघ कवि का कथन है कि न्यायी राजा, अपने कब्जे में मन, नेक पड़ोसी, सच्चे मित्र, आज्ञाकारी पुत्र, साध्वी पुत्री, विचारशील स्त्री और भाई बड़ी नसीब से ही प्राप्त होते हैं॥२३॥

बूढ़ा बैल बिसाहै, झीना कपड़ा लेय।
आपहिं करै नसौनी, दूषन दैवै देय॥२४॥

जो मनुष्य बूढ़ा बैल और पतला कपड़ा खरीदता है, वह जान-बूझकर अपने हाथों काम बिगाड़ता है तथा अन्त में ईश्वर के ऊपर मिथ्या दोषारोपण करता है॥ २४॥

ढीठ पतोहु धिया गरियार।
खसम बेपीर न करै विचार॥
घरे अतावन अन्न न होय।
कहते घाघ अभागी जोय॥ २५॥

ढीठ पुत्रवधू, सुस्त लड़की, क्रूर स्वभाव का तथा विचारहीन पति, ईंधन तथा अन्न से रहित घरवाली स्त्रियाँ बड़ी ही अभागिनी होती हैं॥ २५॥

बिप्र टहलुआ चीक धन, अरु बेटी की बाढ़।
यतनेहु पर धन ना घटे, करहु बड़न से राढ़॥ २६॥

ब्राह्मण से सेवा-कार्य कराने, कसाई का व्यापार करने तथा कन्याओं की वृद्धि पर भी यदि म धन न घटे तो बड़े आदमियों से लड़ाई मोल लेनी चाहिये। इस अन्तिम उपाय से अवश्य ही धनका नाश हो जायगा॥ २६॥

जेहि घर साला सारथी, नारी की हो सीख।
सावन में बिन हल रहे, तीनों माँगै भीख॥ २७॥

जिसके घर मे साला मालिक हो, जिस घर मे स्त्री के कथनानुसार काम हो और जो कृषक सावन मास में हल रहित हो तो ये तीनों बर्बाद हो जाते हैं॥ २७॥

खाय के मूतै सूते बावँ।
काहे बैद बुलावै गावँ॥ २८॥

अगर भोजन करने के बाद ही पेशाब करले तथा बाएँ करवट सोवे तो उस मनुष्य को अपने गाँव में वैद बुलाने की आवश्यकता नहीं होती यानी वह हमेशा नीरोग रहता है॥ २८॥

भेदिया सेवक, सुन्दरि नारि।
जीरन पट कुराज, दुख चारि॥ २९॥

स्वामी का भेद बतलाने वाला नौकर, रूपवती स्त्री, जीर्ण-शीर्ण कपड़ा और दुष्ट राजा, ये चारों ही दुःखदायी होते हैं॥ २९॥

रहै निरोगी, जो कम खाय।
काम न बिगरै, जो गम खाय॥ ३०॥

जो लोग थोड़ा भोजन करते हैं वे रोगी नहीं होते और जो सहनशील होते हैं उनका कोई काम नहीं बिगड़ने पाता॥ ३०॥

ना अति बरखा, ना अति धूप।
ना अति बकता, ना अति चूप॥ ३१॥

बहुत वृष्टि ही न तो अच्छी होती है और न तो बहुत धूप ही। ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं होता और अधिक चुप रहना भी ठीक नहीं है। अति का सर्वत्र वर्जन करना चाहिये॥ ३१॥

नसकट पनही, बतकट जोय।
पहले पहल जो, बिटिया होय॥

पातर कृषी, बौरहा भाय।
कहैं घाघ दुःख, कहाँ समाय ॥ ३२ ॥

नस काटने वाला जूता, बात काटने वाली औरत, सबसे पहले लड़की का पैदा होना, कमजोर कृषि और पागल भाई से बहुत ही तकलीफ उठानी पड़ती है। ऐसा घाघ का कथन है ॥ ३२ ॥

भैंस खुशी जब, मँड़िया परै।
राँड़ खुशी जब, सबका मरै ॥ ३३ ॥

भैंस कीचड़ में बैठने से खुश रहती है और राँड़ स्त्री को दूसरी सभी स्त्रियों के विधवा हो जाने पर खुशी प्राप्त होती है ॥ ३३ ॥

खेती करै बनिज को धावै।
ऐसा बूड़ै थाह न पावै ॥ ३४ ॥

जो आदमी खेती करने के साथ ही साथ रोजगार भी करना चाहता है, वह किसी ओर का नहीं होता। उसके दोनों काम बिगड़ जाते हैं ॥ ३४ ॥

भूरी हथिनी, चँदुली जोय।
पूस की बरखा, बिरलै होय ॥ ३५ ॥

भूरे रंग की हथिनी, गंजे सिर वाली स्त्री अर्थात् जिसके सिर पर बाल न हों तथा पूस के महीने की वर्षा बिरलै ही हुआ करती है। ये सब चीजें भाग्यशालियों को ही प्राप्त होती हैं ॥ ३५ ॥

धवले नीके कापड़े, धवल न नीके बार।
आछी काली कामरी, नीक न काली नार ॥ ३६ ॥

सफेद वस्त्र अच्छे होते हैं, परन्तु सफेद केश अच्छे नहीं होते। उसी प्रकार काली कमरी अच्छी, पर काली स्त्री अच्छी नहीं ॥ ३६ ॥

बैल मरकहा, चमकुल जोय।
तेहि घर ओरहन, नित उठि होय ॥ ३७ ॥

जिस घर में मरकहा बैल और नाज-नखरे वाली स्त्री होगी, उस

घर में किसी न किसी का राजाना उलहना सुनने का मिलेगा ॥ ३७ ॥

घर घोड़ा पैदल चले, तीर चलावे बीन।
थाती रखै दमाद घर, जग में भकुआ तीन ॥ ३८ ॥

पास में घोड़ा होते हुए भी जो लोग पैदल चलते हैं, जो लोग बीन-बीनकर तीर चलाते हैं तथा जो अपनी रक्‍षित दामाद के घर में जमा करते हैं, तो इन तीनों को बेवकूफ समझना चाहिये ॥ ३८ ॥

घर की कलह, औ जर की भूख।
छोट दमाद, बराहे——ऊख ॥
पातर खेती, भकुआ भाय।
कहैं घाघ दुःख, कहाँ समाय ॥ ३९ ॥

आपस का झगड़ा, बीमारी के बाद लगने वाली भूख, कन्या से छोटा दामाद, सूखती हुई ईख, कमजोर खेती और मूर्ख भाई से अपार दुःख मिलता है ॥ ३९ ॥

परमुख देखि अपन मुँह गोवै।
चूरी, कंकन, बेसरि टोवै ॥
आँचर टारि के पेट दिखावै।
कहु छिनार का ढोल बजावै ॥ ४० ॥

जो स्त्री दूसरे पुरुष को अपनी ओर निहारते देखकर अपना मुँह छिपा लेती है और चूड़ी, कंगन, नथिया आदि अनावश्यक वस्तुओं को टटोलने लगती है तथा आँचल उघारकर पेट दिखाती है, तो उसे छिनाल समझना चाहिये। इसके आगे क्या वह ढोल बजाकर अपनी जबान से कहेगी कि मै छिनाल हूँ। उपरोक्त लक्षणों से ही बदचलन औरतों की पहचान होती है ॥ ४० ॥

बिन बैलन खेती करै, बिन भाइन के रार।
बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार ॥ ४१ ॥

जो किसान बिना बैल के खेती करता है, जो लोग बिना भाई के बैर मोल लेते हैं तथा जो बिना औरत के गृहस्थी का काम करता है तो उसे चौदह पुश्तों का झूठा जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

खाय के पर जाय, मार के टर जाय ॥ ४२ ॥

भोजन करने के पश्चात् लेटना और किसी को मारकर वहाँ से हट जाना ही उचित है ॥ ४२ ॥

नसकट खटिया दुलकन घोर।
कहैं घाघ यह, बिपति क ठोर ॥ ४३ ॥

घाघ कहते हैं कि नस काटने वाली खटिया और दुलकी चाल से चलने वाला घोड़ा, ये दोनों ही दुःख के घर हैं ॥ ४३ ॥

फूटे से बहि जात हैं, ढोल, गवाँर, अँगार।
फूटे से बनि जातु हैं, फूट कपास, अनार ॥ ४४ ॥

ढोलक, बेवकूफ आदमी और आग का अंगारा, ये सब फूटकर नष्ट हो जाते हैं लेकिन ककड़ी, कपास और अनार के फूटने पर उसकी सुन्दरता बढ़ जाती है ॥ ४४ ॥

ओछे बैठक, ओछे काम।
ओछी बातें, आठों जाम ॥
घाघ कहैं ये, तीन निकाम।
भूलि न लीजै, इनको नाम ॥ ४५ ॥

तुच्छ प्रकृति के लोगों के पास बैठना, छोटा काम करना तथा आठों प्रहर ओछी बातें करना बुरा है। इसलिए इन सब कामों से दूर रहना चाहिये ॥ ४५ ॥

नारि करकसा कटहा घोर, हाकिम होइके लेय अँकोर।
कपटी मित्र पुत्र है चोर, 'घग्घा इन सबको दे बोर ॥ ४६ ॥

कर्कशा स्त्री, काटने वाला घोड़ा, घूसखोर हाकिम, कपटी साथी और चोर पुत्र को पानी में डुबो देना उचित है ॥ ४६ ॥

रूठे दैव, मेघ ना होय।
खेती सूखति, नैहर जोय॥
पूत विदेश, खाट पर कंत।
घाघ कहैं ई विपति क अंत॥ ४७॥

यदि दैव के रुष्ट होने से वर्षा न हो, खेती सूखती जा रही हो, स्त्री अपने नैहर गयी हो, पुत्र विदेश में हो तथा पति बीमारी की अवस्था में चारपाई पर पड़ा हो तो घाघ कवि कहते हैं कि इससे बेहद विपत्ति और क्या हो सकती है ! ॥ ४७ ॥

चाकर चोर, राज बेपीर।
घाघ कहैं को राखै धीर॥ ४८॥

घाघ कहते हैं कि चोर नौकर और कठोर राजा के होने पर कोई कब तक धीरज रख सकता है॥ ४८॥

पूत न मानै, अपना डाँट।
भाई लड़ै चहै, नित बाँट॥
तिरिया कलही, करकस होई।
नियरे रहैं, दुष्ट सब कोई॥
मालिक नाहिन, करै विचार।
कहैं घाघ ये विपति अपार॥४९॥

यदि पुत्र अपना कहना न मानता हो, बँटवारा करने के लिए भाई रोजाना लड़ाई-झगड़ा करता हो, स्त्री झगड़ने वाली और कर्कशा हो, पड़ोसी दुष्ट स्वभाव के हों तथा स्वामी उचित-अनुचित का मन में विचार न करता हो तो ये सब महान आपत्तियाँ होती हैं॥४९॥

जेकर ऊँचा बैठना, जेकर खेत निचान।
तेकर बैरी का करै, जेकर मीत दिवान॥५०॥

जो लोग प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ में उठते-बैठते हैं, जिनका

खेत समीप में हैं तथा दीवान जिनके मंत्री है, उसका दुश्मन क्या कर सकता है अर्थात् उन्हें शत्रुओं से कोई भय नहीं है ॥५०॥

छज्जे की बैठक बुरी, परिछाईं की छाँह।
नियरे का प्रेमी बुरा, नित उठि पकरै बाँह ॥५१॥

छज्जे पर का बैठना और परछाईं की छाया दोनों ही बुरी होती हैं। उसी प्रकार पास में रहने वाला प्रेमी भी बुरा होता है जो नित्य ही बात बात पर बाँह पकड़ने के लिए तैयार रहा करता है ॥५१॥

बिना माघै घिउ खिचड़ी खाय।
बिना गौना ससुरारी जाय॥
बिना समय के, पहिरै पौवा।
कहैं घाघ ये, तीनों कौवा ॥५२॥

बिना माघ घी-खिचड़ी खाने वाला, बिना गौना हुए ससुराल जाने वाला, कुसमय में पौवा, (एक तरह का खड़ाऊँ, जिसे खटनही कहते हैं) पहननेवाला नासमझ होता है ॥५२॥

राँड़ मेहरिया, अनाथ भैंसा।
जब बिगड़ै, तब होवै कैसा ॥५३॥

विधवा स्त्री और नकेल न लगा हुआ भैंसा अगर बिगड़ जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है ॥५३॥

नीचन से ब्योहार बिसाहा, हँसि के माँगत दामा।
आलस नींद निगोड़ी घेरे, घघा तीन निकामा ॥५४॥

जो मनुष्य नीच लोगों के साथ व्योहार करते हैं, जो दूसरे से अपना पावना हँसकर माँगते हैं और जिसे आलस्य तथा निद्रा सताये रहती है वे किसी काम के नहीं होते। ऐसा घाघ का वचन है ॥५४॥

अहिर मिताई बदर छाहीं।
होवे होवे नाहीं नाहीं ॥५५॥

अहिर की मित्रता और बदली की छाँह पर कभी भी भरोसा नहीं करना चाहिये। क्योंकि ये बहुत ही शीघ्र खतम हो जाते हैं ॥५५॥

चोर जुआरी गिरहकट, जार और नार छिनार।
सौ सौगंधे खायँ जो, घाघ न कर इतबार ॥५६॥

चोर, जुवाड़ी, जेबकतरा, पर स्त्री-गामी और छिनाल स्त्रियाँ यदि सैकड़ों शपथ खायँ तो भी घाघ कहते हैं कि इन पर विश्वास नहीं करना चाहिये ॥५६॥

ऊँचा कोठा, मधुर बतास।
कहैं घाघ घर में कैलास ॥५७॥

यदि रहने का मकान ऊँचा हो और मन्द मन्द वायु बह रही हो तो घाघ कहते हैं कि स्वर्ग का सुख घर में ही है ॥५७॥

खेत न जोते राड़ी, न भैंस बिसाहे पाड़ी।
न मेहरी मरद क छाड़ी, क्यों लावे बिपदा गाढ़ी ॥५८॥

बंजर भूमि को जोतकर, भैंस का बच्चा मोल लेकर और दूसरे पुरुष की परित्यक्ता स्त्री को रखकर अपने सिर पर भारी विपत्ति को क्यों बुलाते हो ? ॥५८॥

रीन काढ़ि ब्योपार चलावे, छप्पर डारे तारो।
सारे के सँग भगिनी पठवै, तीनों का मुँह कारो ॥५९॥

कर्ज लेकर महाजनी करने वाले, छप्पर के मकान में ताला लगाने वाले और साले के साथ अपनी बहन को भेजने वाले के मुँह में कालिख पोत देनी चाहिये ॥५९॥

अँतरे खोतरे डंड करै।
ताल नहाय ओसमाँ परै॥
दैव न मारै आपुहिं मरै ॥६०॥

अनियमित रूप से कसरत करनेवाले, ताल में स्नान करने के बाद ओस में सोने वाले अपने से ही अपनी मृत्यु बुलाते हैं ॥६०॥

जुये घाम से घाम कटावै, जुइ सँकरी माँ सोवै।
कहैं घाघ ये तीनों भकुआ, निकरी गये पर रोवै ॥६१॥

घाघ कवि का कथन है कि जो लोग तंग जूता पहनते हैं, संकुचित स्थान में जमीन पर सोते हैं तथा स्त्री के निकल जाने पर रोते हैं, वे तीनों ही अज्ञानी होते हैं ॥६१॥

माघ माँह की बादरी, और कुआरा घाम।
जो कोइ यह दोनों सहै, करै पराया काम ॥६२॥

जो मनुष्य माघ महीने की ठण्डक और कुआर के घाम की गर्मी सह लेता है, वही दूसरों की नौकरी भी करता है। अर्थात् जिस प्रकार से ये दोनों कार्य कठिन हैं, उसी तरह दूसरे की नौकरी भी बड़ी कठिन होती है ॥६२॥

बाछा बैल, बहुरिया जोय।
घर ना रहै, न खेती होय ॥६३॥

बछड़े बैल और नई-नवेली दुलहन से न तो खेती ही हो सकती है और न तो घर का काम-धंधा ही। क्योंकि ये दोनों कार्य भार सँभालने में सर्वथा अयोग्य होते हैं ॥६३॥

आपन आपन सब कोइ होई।
दुख माँ साथी नाहीं कोई ॥
अन्न वस्त्र खातिर झगड़न्त।
कहैं घाघ ये विपति कै अन्त ॥ ६४ ॥

कहने के लिए तो सब अपने ही बन्धु-बान्धव हैं, पर मुसीबत पड़ने पर कोई भी काम नहीं आता। सब लोग अन्न-वस्त्र के लिए ही झगड़ते रहते हैं। घाघ कवि का कहना है कि ऐसे स्थान में असीम आपत्ति है ॥ ६४ ॥

सावन सोवै ससुर घर, भादों खाये पूआ।
खेत खेत में घूमत पूछै, तोहरे केतिक हूआ ॥ ६५ ॥

जो सावन के महीने में ससुराल जाकर निश्चिन्त सोता रहता है, भादों में मालपूआ खाता है तो फसल के समय सब लोगों से उनकी पैदावारों के बारे में घूम-घूमकर पूछा करता है ॥ ६५ ॥

कुतवा मूतनि भरकनी, सरबलील कुचकाट ।
घाघा चारो परिहरौ, तब तुम सोओ खाट ॥ ६६ ॥

जिस चारपाई पर कुत्ते पेशाब करते हों, जो चरमराने वाली हो, किसी के बैठने से जो नीचे धंस जाती हो तथा जो एड़ी की नस काटने वाली हो तो ऐसी चापाई को छोड़ देना ही श्रेयस्कर है ॥ ६६ ॥

झिलँगा खटिया बातल देह ।
तिरिया लम्पट, हाटे गेह ॥
भाय बिगरि के मुदई मिलन्त ।
कहैं घाघ ये बिपति कै अन्त ॥ ६७ ॥

टूटी-फूटी चारपाई, वायु से तना हुआ शरीर, धूर्त स्त्री, बाजार में मकान तथा भाई का घर से बिगड़कर दुश्मन से जो मिलना, ये सब बेहद मुसीबतें हैं । ऐसा घाघ का वचन है ॥ ६७ ॥

हँसुआ ठाकुर, खँसुआ चोर ।
इन्हें ससुर बन, देओ बोर ॥ ६८ ॥

हँसोड़ ठाकुर और खाँसने वाले चोर को पानी में बोर देना चाहिये ॥ ६८ ॥

जाको मारा चाहिये, बिन मारे बिन घाव ।
ताको यही बताइये, घुइयाँ पूरी खाव ॥ ६९ ॥

अगर किसी आदमी को बिना घाव मार डालना चाहते हो तो अरवी की तरकारी के साथ पूड़ी खाने की राय दो । क्योंकि इन चीजों का निरन्तर भोजन करते रहने पर रक्तातिसार की बीमारी से पीड़ित वह व्यक्ति शीघ्र ही काल-कवलित हो जायगा ॥ ६९ ॥

हलकन बेंट कुदारी, हो गोहरावै नारी।
भैया कहिके माँगै दामा, ये तीनों हैं काम निकामा ॥ ७० ॥

कुदाल की बेंट (मुठिया) का ढीला होना, 'हो' शब्द का सम्बोधन करके स्त्री को बुलाना, आरज़ू-मिन्नत के साथ तगादा करना ये तीनों काम बुरे होते हैं ॥ ७० ॥

ताका भैंसा गादर बैल।
नारि कुलच्छिन बालक छैल ॥
बाँचै इनसे चातुर लोग।
राज छाँड़ि के साधै जोग ॥ ७१ ॥

घूरकर देखने वाला भैंसा, सुस्त बैल, कुलटा स्त्री, और शौकीन बेटे से हमेशा चौकन्ना रहना चाहिये। इनलोगों के साथ चाहे कितना भी सुख क्यों न हो, छोड़कर अलग रहना उत्तम है ॥ ७१ ॥

सुथना पहिरे हर जोते, औ पौला पहिर निरावै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुआ, रखे बोझ सिर गावै ॥ ७२ ॥

पायजामा पहनकर हल जोतने वाले, पौला (खटनही) पहने हुए निराई करने वाले और माथे पर बोझ रखकर गाते हुए जाने वाले मूर्ख होते हैं। ऐसा घाघ का वचन है ॥ ७२ ॥

अम्बा नीबू बानियाँ, दाबे पर रस देयँ।
कायथ कौवा करहटा, मुर्दन से भी लेयँ ॥ ७३ ॥

आम, नीबू और बनियाँ को दबाने पर रस मिलता है और कायस्थ, कौवा तथा करहटा नामक पक्षी मुर्दे से भी रस लेते हैं ॥ ७३ ॥

बगुला आपने मन में गुनहीं।
ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं ॥ ७४ ॥

घाघ कवि का ख्याल है कि ठाकुर लोग भक्त नहीं बन सकते, उसी प्रकार मूसल भी धनुष नहीं हो सकता है ॥ ७४ ॥

जोइगर बसँगर बुझगर भाइ।
तिरिया सतवन्ती, नीक सुभाइ॥
धन सुत हो मन रहे विचार।
कहैं घाघ यह, सुक्ख अपार॥ ७५॥

जिन लोगों के पास स्त्री, वंश, समझदार भाई, सुशीला स्त्री, धन-पुत्र और अच्छा विचार हो, उन्हें इस संसार में असीम सुख प्राप्त होता है॥ ७५॥

जहाँ चारि काछी, वहाँ बात आछी।
जहाँ चारि कोरी, वहाँ बात बोरी॥
जहाँ चारि भुंजी, वहाँ बात उंझी॥ ७६॥

जिस जगह चार काछी रहते हैं वहाँ अच्छी-अच्छी बातें होती हैं, जहाँ पर चार कोइरी रहते हैं वहाँ की सब बातें डूब जाती हैं, लेकिन जहाँ पर चार भँड़भूजे होते हैं वहाँ की सब बातें उलझी ही रह जाती हैं॥ ७६॥

माँ से पूत पिता से घोड़ा।
अधिक नहीं तो थोड़ा थोड़ा॥ ७७॥

माता का थोड़ा बहुत गुण पुत्र में और पिता का घोड़े में अवश्य विद्यमान होता है॥ ७७॥

हरहट नारी, बास एक बाह।
परुवा बरद, सुहुस हरवाह॥
रोगी होइ रहे इकलन्त।
घाघ कहैं ई विपति क अन्त॥ ७८॥

घाघ का कहना है कि कर्कशा औरत, एकाकी जीवन, किसी दूसरे का खोया हुआ बैल, सुस्त हरवाहा और बीमारी हालत में अकेले पड़े रहना विपत्ति की हद है॥ ७८॥

आठ कठौती मट्ठा पीवे, सोरह मकुनी खाय।
तिसके मुये न रोइये, घर का दरिद्दर जाय ॥ ७९ ॥

जो लोग आठ कठौती मट्ठा (छाछ) पीते हों, मकुनी की सोलह रोटी खाते हों तो ऐसे दरिद्र आदमी की मृत्यु पर शोक नहीं करना चाहिये ॥ ७९ ॥

मडुवा कोदो अन नहीं। जोलहा धुनिया जन नहीं ॥ ८० ॥

मडुवा और कोदो अन्न नहीं होते, उसी प्रकार जुलाहे और धुनियों की गणना मनुष्यों में नहीं होती। ये दोनों बहुत ही निम्नश्रेणी के समझे जाते हैं ॥ ८० ॥

बालक ठाकुर, बूढ़ दिवान।
ममिला बिगरै साँझ बिहान ॥ ८१ ॥

अगर मालिक लड़का हो तथा दीवान वृद्ध हो तो सारा काम शीघ्र ही बर्बाद हो जाता है। क्योंकि ये कार्य-भार सँभालने में अयोग्य होते हैं ॥ ८१ ॥

बनिये क सखरच, ठाकुर क हीन।
बैद क पूत, रोग नहिं चीन ॥
पंडित चुपचुप, बेसवा मइल।
भाष कहैं घर, पाँचों गइल ॥ ८२ ॥

बनिये का खर्चीला पुत्र, क्षत्रिय का तेजरहित बालक, रोग न पहचानने वाला वैद्य का लड़का, चुप्पा पंडित और मैली-कुचैली अवस्था में रहने वाली वेश्या को गया-गुजरा जानो अर्थात् ये बहुत ही निकम्मे होते हैं ॥ ८२ ॥

बाँध बाँस बिगहा बिया, बारी बेटा बैल।
ब्योहर बढ़ई बन बबुर, बात सुनो यह छैल ॥
जामें बकार बारह बसें, सो पूरन गिरहस्त।
औरन को सुख दै सदा, आप रहै अलमस्त ॥ ८३ ॥

जिन लोगों के पास निम्नलिखित ये बारह बकारें हों वही पूरा गृहस्थ कहा जाता है। वह अपने को सदैव सुखी रहकर दूसरों को भी सुख पहुँचाता है—बाँध, बाँस, बिगहा (खेत) बीज, बगीचा, बेटा, बैल, ब्योहर, बढ़ई, बन, बबूर का पेड़ तथा बात की सत्यता ॥ ८३ ॥

तीन बैल दो मेहरी, बैठ काल तेहि डेहरी ॥ ८४ ॥

जिन लोगों का तीन बैल और दो औरते हों, उसकी मृत्यु करीब समझनी चाहिये ॥ ८४ ॥

सबको कर, हरि को डर ॥ ८५ ॥

सब लोगों के साथ नेकी करनी चाहिये और ईश्वर से डरना चाहिये ॥ ८५ ॥

चार छावें छः निरावें, तीन खाट दो बाट ॥ ८६ ॥

छप्पर छाने में चार आदमी, खेत की निराई करने में छः आदमी, चारपाई बीनने में तीन आदमी तथा रास्ता चलने के समय दो आदमी साथ में रहें तो अच्छा होता है ॥ ८६ ॥

कलियुग में दो भगत हैं, बैरागी अरु ऊँट।
वे तुलसी बन काटहीं, ये पीपल करते ठूँठ ॥ ८७ ॥

कलियुग में बैरागी और ऊँट दो भक्त होते है। बैरागी लोग तुलसी का बन काटते फिरते हैं और ऊँट पीपल के पेड़ को ठूँठा (पत्ता-रहित) बना देते हैं ॥ ८७ ॥

कीरी संचै तीतर खाय। लोभी को धन पर ले जाय ॥ ८८ ॥

चीटियों के अनाज इकट्ठा करने पर तीतर चुग जाते हैं वैसे ही लोभी मनुष्यों का धन दूसरे लोग खा जाते हैं ॥ ८८ ॥

बोआई का समय

रोहनी खाट, मृगसिर छौनी।
आये अद्रा, धान की बोनी ॥ ८९ ॥

किसान को चाहिये कि रोहिणी नक्षत्र में खटिया की बिनाई, मृगशिरा में छप्पर की छवाई करले। आर्द्रा नक्षत्र चढ़ने पर धान की बोआई का काम करे ॥ ८९ ॥

सावन साँवाँ, अगहन जवा।
जेतो बोवे, तेतो लवा ॥ ९० ॥

सावन के महीने में साँवाँ और अगहन में जौ की बोआई करने से उपज अच्छी नहीं होती अर्थात् जितना बीज बोया जाता है उतना ही रह जाता है ॥ ९० ॥

पुख पुनर्वसु, बोवै धान।
असलेषा में, जोन्हरी मान ॥ ९१ ॥

पुष्य और पुनर्वसु, नक्षत्र में धान तथा आश्लेषा में जोन्हरी की बोआई करनी उचित है ॥ ९१ ॥

बजरा बोवै, आये पुख।
फिर मन में होवे नहिं सुख ॥ ९२ ॥

पुष्य नक्षत्र में बाजरे की बोआई करने वाला किसान सुखी नहीं हो सकता अर्थात् इस नक्षत्र में बाजरा नहीं बोना चाहिये ॥ ९२ ॥

आधे चित्रा, फूटै धान।
विधि का लिखा, झूठ नहिं जान ॥ ९३ ॥

चित्रा नक्षत्र के आधा बीत जाने पर धान की बालें अवश्य फूट जायेंगी। ऐसा सत्य समझना चाहिये ॥ ९३ ॥

कन्या धान मीन जौ। जब चाहे तब लौ ॥ ६४ ॥

कन्या राशि की संक्रान्ति आने पर धान तथा मीन की संक्रान्ति पर जौ की कटाई करनी चाहिये ॥ ६४ ॥

रोहिनी मृगसिर बोवे मक्का।
मडुवा उरदो दे नहिं टका ॥
मृगसिर जो कोई बोवै चेना।
जमींदार को कुछ नहीं देना।
बजरा बोवै आये पुख।
फिर मन करे कभी नहीं सुख ॥ ९५ ॥

रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र में मक्का (बोन्हरी) मडुआ और उड़द बोने से एक पैसा पर भी अनाज नहीं मिलेगा। चने की बोआई मृगशिरा नक्षत्र मे करने से जमींदार को लगान देने भर के लिये भी पैदावार नहीं होगी। पुष्य नक्षत्र मे बाजरा बोने से किसान को कभी भी सुख नसीब नही होता ॥ ६५ ॥

बुध बृहस्पति दो भले, शुक्र न भले बखान।
रवि मंगल बोनी करै, घर नहि आवे धान ॥ ९६ ॥

धान की बोआई में बुधवार और बृहस्पतिवार शुभ होते हैं, शुक्रवार का दिन अच्छा नहीं होता। रविवार और मङ्गलवार को धान बोने से घर में एक दाना भी नहीं आता ॥ ६६ ॥

चित्रा गेहूँ आद्रा धान, न लागे गेरुइ न लागे घाम ॥ ९७ ॥

चित्रा में गेहूँ और आद्रा नक्षत्र में धान की खेती करने से गेहूँ में गेरुई (एक प्रकार का रोग) नहीं लगती और धान मे धूप का असर नहीं होता ॥ ६७ ॥

फूली हरिनी, फूलो कास।
अब का होये, बोये मास ॥ ६८ ॥

हस्ती तारा और कास के फूल जाने पर उड़द की बोआई करने से कोई फायदा नहीं होता ॥ ६८ ॥

पुरवा में मत रोपो भैया । एक धान में सोलह पैया ॥ ६६ ॥

पूर्वा नक्षत्र में धान की रोपाई करने से ज्यादातर खाली धान (बिना चावल का) ही पैदा होगा ॥ ६६ ॥

शुक लवनी, बुध बउनी ॥ १०० ॥

शुक्रवार का कटाई और बुधवार के दिन बोआई का काम अच्छा होता है ॥ १०० ॥

मारूँ हरिनी, तोड़ूँ कास ।
उरदो बो हथिया की आस ॥ १०१ ॥

हस्ती तारा और कास की परवाह किये बिना ही हथिया नक्षत्र के भरोसे पर उड़द की बोआई कर लेनी चाहिये ॥ १०१ ॥

मघा मारै पुरवा सवारै ।
भर उतरा खेत निहारै ॥ १०२ ॥

जो किसान मघा नक्षत्र में जड़हन धान बोकर पूर्वा में देख-रेख करे तो उत्तरा में खेत हरा-भरा रहेगा ॥ १०२ ॥

चना चितरा चौगुना ।
गेहूँ स्वाती होय ॥ १०३ ॥

चित्रा में चना और स्वाती में गेहूँ की बोआई करने से चौगुनी उपज होती है ॥ १०३ ॥

आधे हथिया मूरि मुराई ।
आधे हथिया तीसी राई ॥ १०४ ॥

हस्त नक्षत्र के आधा बीत जाने पर मूली और आखीर में तीसी, राई आदि की खेती करनी चाहिये ॥ १०४ ॥

अगहन में जो, बोवै जौवा ।
होन न पावै, खावै कौवा ॥ १०५ ॥

अगहन के महीने में बोये हुए जौ को कौवे ही खा जायेंगे अर्थात् उसकी पैदावार नहीं हो सकती ॥ १०५ ॥

अद्रा धान पुनर्बसु पैया।
रुवै किसान जो बुवै चिरैया ॥ १०६ ॥

आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से अच्छा फल मिलता है। पुनर्बसु में बोने से बिना चावल का धान होता है और पुष्य नक्षत्र में बोने वाला किसान रोता ही रह जाता है यानी उसे कुछ भी प्राप्ति नहीं होती ॥ १०६ ॥

आर्द्रा रेंड़ पुनर्बसु पाती।
लगे चिरैया दिया न बाती ॥ १०७ ॥

आर्द्रा नक्षत्र में धान की बोआई करने से डंठल कड़े और पुनर्बसु में पत्तियाँ ही पत्तियाँ होती हैं तथा पुष्य की बुआई से तो अन्धकार ही हो जाता है यानी नाममात्र की उपज होती है ॥ १०७ ॥

बोआई की रीति

पौधे तो न्यारे रहें, और पुरुष सब संग।
सुखी होन का जगत में, यही एक है ढंग ॥ १०८ ॥

फसल के पौधों को अलग-अलग रखना चाहिये, तथा और सब लोगों को साथ में। संसार में सुखी होने का एक मात्र यही साधन है ॥ १०८ ॥

पास-पास में सनई बोवै।
तब सुतरी की आशा होवै ॥ १०९ ॥

सनई को नजदीक में रख कर बोने से सुतरी की आशा होती है अर्थात् अच्छी उपज की आशा की जाती है ॥ १०९ ॥

बाड़ी में बाड़ी करै, करै ईख में ईख।
वे घर यों ही जायेंगे, गहै पराई सीख ॥ ११० ॥

जो लोग कपास के खेत मे दुबारा कपास की तथा ईख के खेत में दुबारा ईख की बोआई करते हैं तथा दूसरों की शिक्षा ग्रहण करते हैं, उन लोगों का घर नष्ट-भ्रष्ट हो जाया करता है ॥ ११० ॥

गाजर गंजी मूरी।
इनको बोवै दूरी ॥ १११ ॥

गाजर, शकरकन्द और मूली की बोआई दूर-दूर पर करनी चाहिये ॥ १११ ॥

खेती कीजै, ऊख कपास।
घर कीजै, व्यवहरिया पास ॥ ११२ ॥

यदि सुखपूर्वक रहने की अभिलाषा हो तो ईख और कपास की खेती करे तथा कर्ज देने वाले महाजन के गाँव में रहे ॥ ११२ ॥

ऊख गोड़ि के तुरत दबावै।
फिर तो ऊख बहुत सुख पावै ॥ ११३ ॥

ऊख की गोड़ाई करने के बाद उस पर मिट्टी डाल देनी चाहिये, ऐसा करने से पैदावार अच्छी होती है ॥ ११३ ॥

सन घना बन बेगरा, मेढ़क फन्दे ज्वार।
पैर पैर पर बाजरा, दुखको देवे टार ॥ ११४ ॥

सन की बोआई घनी, कपास की बीड़र (फासले पर), ज्वार की मेढ़क की छलाँग की दूरी पर तथा बाजरे की पग-पग पर होनी चाहिये। ऐसा करने से दुःख दूर हो जाता है अर्थात् अच्छी उपज होती है ॥११४॥

बजरी मक्का जोन्हरी।
इनको बोवै कुछ बिछुरी ॥ ११५ ॥

बाजरा, मक्का और जोन्हरी को कुछ दूरी के फासले पर बोना उचित है ॥ ११५ ॥

कदम कदम पर बाजरा, मेढ़क कुदौनी ज्वार।
ऐसे बोवैं जो कोई, कस कस भरै कोठार ॥११६॥

कदम की दूरी पर बाजरा और मेंढ़क की कुदान की दूरी पर ज्वार की बोआई करे तो कोठार (अन्न रखने का बड़ा बरतन) को खूब ठूँस ठूँस कर भरने में आता है यानी बहुत ही ज्यादा पैदावार होती है ॥ ११६ ॥

रूँध बाँध के फाग दिखाये।
सोई चतुर किसान कहाये ॥ ११७ ॥

फगुआ तक जो लोग ईख को रूँधकर बाँध रखते हैं, वे ही चतुर किसान कहे जाते हैं ॥ ११७ ॥

कुड़हल भदई बोओ यार।
फिर चिउरा की लेय बहार ॥ ११८ ॥

खोदी हुई जमीन में भदईं का धान बोने से अच्छी तरह चिउड़ा खाने में आता है ॥ ११८ ॥

हरिन छलाँगन काकरी, पैगे-पैग कपास।
जाकर कहो किसान से, बोवै घनी उखार ॥ ११९ ॥

हरिन के छलाँग की दूरी पर ककड़ी और पग-पग पर कपास की बोआई की जानी चाहिये। परन्तु ईख की खेती खूब घनी करने के लिए किसान को सावधान कर दो ॥ ११९ ॥

पहले काँकर पीछे धान। कहिये उसको पूर किसान ॥ १२० ॥

पहले पहल ककड़ी बोकर फिर उसी खेत में धान की बोआई करने वाले ही पक्के किसान समझे जाते हैं ॥ इस प्रकार की बोआई बड़ी लाभकारी होती है ॥ १२० ॥

दाना अरसी। बोओ सरसी ॥ १२१ ॥

पोस्त और तीसी की बोआई के लिए नम भूमि की आवश्यकता होती है ॥ १२१ ॥

बो सके तो बवै । नहिं बरी बनाकर खवै ॥ १२२ ॥

यदि उड़द बोने की पूरी जानकारी हो तो बोना चाहिये नहीं तो बरी (कोंहड़ौरी) बनाकर खा डालना ही अच्छा होता है ॥ १२२ ॥

जिनकी छीछी बखड़ी, तिनकी नाहीं आस ॥ १२३ ॥

जौ चना अलग-अलग बो सकते हैं तथा कपास को भी दूर पर बोने में कोई दोष नहीं है, लेकिन बीढ़र ईख बोने वाले की कोई आशा नहीं ॥ १२३ ॥

बीज का परिमाण

सवा सेर बीघा, साँवाँ जान ।
तिल सरसों, अँजुरी परमान ॥
कोदो बरैं, सेर बोआओ ।
डेढ़ सेर बीघा, तीसी नाओ ॥ १२४ ॥

प्रति बीघे में सवा सेर साँवाँ, तिल्ली और सरसों एक-एक अंजली, कोदों और बरैं (कुसुम) एक सेर तथा तीसी (अलसी) को डेढ़ सेर तक खेत में डालना चाहिये ॥ १२४ ॥

गेहूँ जौ बोवै पाँच पसेर, मटरै बीघा तीस सेर ।
बोवै चना पसेरी तीन, तीन सेर बीघा जोन्हरी लीन ॥१२५॥

गेहूँ और जौ हर बीघे में पाँच पसेरी, मटर तीस सेर, चना तीन पसेरी तथा जोन्हरी (मक्का) के बीज को ३ सेर बोना चाहिये ॥१२५॥

डेढ़ सेर बजरा बजरी साँवाँ, काकुन कोदो सवाया नावा ।
इसी रीति से बोवै किसान, दूने लाभ की खेती जान ॥१२६॥

बजरी-बजरा तथा साँवाँ को डेढ़ सेर, काकुन और कोदों को आध

सेर की मात्रा में बोना उचित है। इस प्रकार से जो किसान खेती करते हैं, उन्हें दुगुनी फसल का लाभ होता है ॥ १२६ ॥

डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास, दो सेर मोथी अरहर मास।
पाँच पसेरी बिगहे धान, तीन पसेरी जड़हन जान ॥१२७॥

कपास प्रति बीघे में डेढ़ सेर, मोथी, अरहर, मास (उड़द) को दो सेर के हिसाब से बोना लाभप्रद है। हर बीघे में पाँच पसेरी धान तथा जड़हन तीन पसेरी बोना उचित है ॥ १२७ ॥

फसलों की सिंचाई

धान पान औ केला। ये तीनों पानी के चेला ॥ १२८॥

धान, पान और केले की खेती के लिए पानी की अत्यधिक आवश्यकता होती है। पानी के अभाव में ये फसलें कदापि नहीं हो सकतीं ॥ १२८ ॥

साँवाँ साठी साठ दिना। जब बारिश होवै रात दिना ॥ १२९ ॥

यदि लगातार वर्षा होती रहे तो साँवाँ और साठी (एक प्रकार का धान) साठ दिन अर्थात् दो मास में पककर तैयार हो जाते हैं ॥ १२९॥

तरकारी है तरकारी। याको पानी चहिये भारी ॥ १३० ॥

सब्जियों को पानी की बड़ी ही जरूरत होती है। इन्हें पानी से हमेशा भिगोये रखना चाहिये, जिसमें कि सूखने न पावें ॥ १३० ॥

साठी होवै साठ दिना में। जब पानी पावै आठ दिना में ॥१३१॥

साठी धान में यदि प्रति सप्ताह पानी मिलता रहे तो वह दो महीने में ही तैयार हो जाता है ॥ १३१ ॥

सभी किसानी हेठी, अगहन का पानी जेठी ॥ १३२ ॥

सभी महीनों की सिंचाई से बढ़कर अगहन की सिंचाई होती है अर्थात् खेती के लिए अगहन मास में सिंचाई करना बहुत ही लाभदायक है ॥ १३२ ॥

काले फूल न पाया पानी । मरे धान अध बीच जवानी ॥१३३॥

धान के फूल में काला हो जाने के समय निश्चय ही पानी देना चाहिये नही तो वह आधी जवानी मे ही मर जाता है अर्थात् पूर्ण रूप से विकसित नहीं होने पाता ॥ १३३ ॥

चेना है जी लेना, सोलह पानी देना ।
बीस-बीस के बाछा थाके, थाके पिया नगीना ॥
हाथ में सोटी, बगल में पैना ।
एक बार बहे पुरवाई, लेना है न देना ॥ १३४ ॥

चेना बहुत ही परिश्रम से पैदा होने वाला अनाज होता है, इसमें सोलह बार सिंचाई करनी पड़ती है । सिंचाई करने के समय बीस-बीस मुट्ठी के बैल तथा मजबूत से मजबूत आदमी भी थक जाते हैं । हाथ मे सोटी और बगल में पैना (बैल चलाने की लकड़ी) लिये हर समय जुटे रहते हैं । इतने पर भी अगर एक बार पुरवा हवा बह जाय तो सारी फसल चौपट हो जाती है । अर्थात् पैदावार मारी जाती है ॥१३४॥

काले फूल मिला नहिं पानी ।
धान मरा अधखिली जवानी ॥ १३५ ॥

धान के फूल के काला होने के समय सिंचाई जरूर ही करनी चाहिये । नहीं तो वह अधखिली जवानी में ही मुरझा जाता है अर्थात् पूर्ण रूप से विकसित नहीं होने पाता ॥ १३५ ॥

धान पान अरु खीरा । ये सब हैं पानी के कीरा ॥ १३६ ॥

धान, पान और खीरा की फसल में बराबर पानी देते रहना चाहिये । पानी के अभाव में इन सभों की फसल मारी जाती है ॥१३६॥

बारिश

बरसे पानी आधे पूस, आधा गेहूँ आधा भूस ॥ १३७ ॥

यदि आधे पूस के बीत जाने पर वर्षा हो जाय तो गेहूँ की उपज अधिकता से होती है ॥ १३७ ॥

दिन कै गर्मी रात कै ओस।
घाघ कहैं बरखा सौ कोस ॥ १३८ ॥

'घाघ' कहते हैं कि अगर दिन के समय गर्मी रहे और रात को ओस पड़े तो वर्षा की आशा नहीं करनी चाहिये ॥ १३८ ॥

जेठ मास जो तपै निरासा।
तो होवे बरखा की आसा ॥ १३९ ॥

जब ज्येष्ठ मास में जोरों की गर्मी पड़े तो बारिश की सम्भावना होती है ॥ १३९ ॥

लाल पियर जब होय अकास।
मत कीजो बरखा कै आस ॥ १४० ॥

बरसात की मौसिम में आकाश कभी लाल और कभी पीला दीख पड़े तो वर्षा की आशा नहीं रखनी चाहिये ॥ १४० ॥

करिया बादर जी डरवावै।
भूरे बादर पानी आवै ॥ १४१ ॥

काले बादलों को देखने से भान होता है कि पानी जोरों से बरसेगा; परन्तु काले बादलों से वर्षा नहीं होती, भूरे रंग के बादलों के उमड़ने पर अच्छी बारिश होती है ॥ १४१ ॥

जो कहुँ मग्घा बरसे जल।
सब नाजों में लावे फल ॥ १४२ ॥

यदि मघा नक्षत्र में पानी बरसे तो सभी फसलें अच्छी तरह से होती हैं ॥ १४२ ॥

चढ़ते बरसै चित्रा, उतरत बरसे हस्त।
राजा कितनों दंड ले, हारे नहिं गृहस्त ॥ १४३ ॥

यदि चित्रा नक्षत्र के शुरू में और हस्तनक्षत्र के आखीर में वर्षा हो तो किसान राजा का लगान देने से हिम्मत नहीं हारता अर्थात् उसको किसी तरह की कमी नहीं रहती ॥ १४३ ॥

एक बार जो बरसै स्वाती।
कुर्मी पहरैं सोने क पाती ॥ १४४ ॥

यदि स्वाति नक्षत्र में एक बार भी वर्षा हो जाय तो कुर्मी (कुनबी) की औरतें भी सोने का आभूषण पहनेंगी। यानी सब लोग सुख पूर्वक रहेंगे ॥ १४४ ॥

लगे अगस्त फूले बन कासा।
अब नाहीं बरखा की आसा ॥ १४५ ॥

अगस्त तारा के उदित होने तथा वन में कास के फूल जाने पर वर्षा की उम्मीद नही रखनी चाहिये ॥ १४५ ॥

जो कहुँ बरसै उत्तरा, नाज न खावे कुत्तरा ॥ १४६ ॥

उत्तरा नक्षत्र में बारिश होने से कुत्ते भी अनाज नहीं खाते अर्थात् पैदावार इतनी होती है कि सभी लोग सन्तुष्ट हो जाते हैं ॥ १४६ ॥

सावन माह चलै पुरवाई।
बरधा बेंचि बिसाहो गाई ॥ १४७ ॥

यदि सावन के महीने में पुरवा हवा चले तो बैलों को बेंचकर गाय खरीद लेनी चाहिये। क्योंकि ऐसी स्थिति में वर्षा नहीं होती, इसलिए बैल रखना बेकार है। गाय रहने से कुछ लाभ तो होगा ॥ १४७ ॥

ढेले पर जब चील बोलै।
गली गली में पानी डोलै ॥ १४८ ॥

जब ढेले पर बैठकर चील बोलने लगे तो समझना चाहिये कि सब स्थान पानी से पूर्ण हो जायगा ॥ १४८ ॥

साँझै धनुष सकारे पानी।
घाघ कहैं सुनु पंडित ज्ञानी ॥ १४९ ॥

यदि आकाशमण्डल में सन्ध्या समय इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो दूसरे दिन अवश्य ही पानी बरसता है। ऐसा घाघ का कहना है ॥ १४९ ॥

चमकै उत्तर-पश्चिम ओर।
बरसै पानी बहुतै जोर ॥ १५० ॥

अगर उत्तर-पश्चिम के कोन पर बिजली चमकती हो तो जानना, चाहिये कि बहुत जोर से पानी बरसेगा ॥ १५० ॥

उलटे गिरगिट ऊपर चढ़ै।
बरखा होई भूमि जल बुड़ै ॥ १५१ ॥

यदि गिरगिट ऊपर को उलटा होकर चढ़े तो समझना चाहिये कि पृथ्वी जलमग्न हो जायगी यानी घोर वृष्टि होगी ॥ १५१ ॥

साँझै धनुष बिहाने मोर। ये दोनों पानी के बोर ॥ १५२ ॥

अगर सन्ध्या समय इन्द्रधनुष दिखाई पड़े और सबेरे मोर की बोली सुनाई दे तो समझना चाहिये कि बहुत जोर की वृष्टि होगी ॥ १५२ ॥

हवा बहै ईसाना।
खेती ऊँची करो किसाना ॥ १५३ ॥

अगर ईशान (पूर्व और उत्तर) कोण से हवा बहने लगे तो जान लेना चाहिये कि बहुत ही अच्छी बारिश होने वाली है ॥ १५३ ॥

पहले पानि नदी उतराय।
तो जानो कि बरखा नाय ॥ १५४ ॥

अगर पहली बरसात में ही नदी उतराने लगे अर्थात् बाढ़ आ जाय तो समझना चाहिये कि आगे चलकर अच्छी वृष्टि नहीं होगी ॥ १५४ ॥

पूनो परवा गाजे । तो दिना बहत्तर बाजे ॥ १५५ ॥

अगर आषाढ़ की पूर्णिमा और प्रतिपदा को बिजली चमके तो बहत्तर दिनों तक वर्षा होने की आशा की जाती है ॥ १५५ ॥

रात करे घाप धूप दिन करे छाया ।
घाघ कहै तब बरखा गया ॥ १५६ ॥

जब रात को [illegible] और दिन के समय बादल फट जायँ तथा उनकी छाया जमीन पर पड़े तो समझना चाहिये कि अब वर्षा नहीं होगी । ऐसा 'घाघ भड्डर' का कथन है ॥ १५६ ॥

बोली गोह फुली बन कांस ।
अब छांड़ो बरखा की आस ॥ १५७ ॥

गोह के बोलने और वन में कांस के फूल आने पर बरसात की आशा नहीं रह जाती है ॥ १५७ ॥

पूरब धनुही पच्छिम भान ।
कहैं घाघ बरखा नगिचान ॥ १५८ ॥

शाम को यदि पूर्व दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो समझना चाहिये कि वर्षा जल्दी ही होने वाली है ॥ १५८ ॥

चमकै उत्तर बजुरी, पूरब बहनो बाउ ।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, बरधा भीतर लाउ ॥ १५९ ॥

अगर उत्तर की ओर बिजली चमकै और पूर्व दिशा से हवा बहने लगे तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी, बैल को भीतर लाकर बाँध दो अर्थात् पानी बरसना ही चाहता है ॥ १५९ ॥

पहिले बतास पुरब से आवै ।
बरसै मेघ अन्न झरि लावै ॥ १६० ॥

वर्षाऋतु में अगर पहले पहल पुर्वी हवा चले तो बहुत ही उत्तम वृष्टि होगी और अनाजों का ढेर लग जायगा ॥ १६० ॥

पुरुवा पछुवाँ संग में बहै, हँसि के नार पुरुष से कहै।
वह बरसै यह करै भतार, कहै घाघ यह सगुन विचार ॥१६१॥

अगर बरसात के दिनों में पुर्वा और पछुवाँ हवा एक साथ बहने लगे तथा स्त्री पर-पुरुष से हँसकर बात करे तो 'घाघ' कहते हैं कि वह (हवा) पानी बरसायेगी और यह (स्त्री) दूसरे पुरुष के साथ चली जायेगी ॥ १६१ ॥

बोलै ढेकी जाय अकास।
फिर नाहीं बरखा की आस ॥ १६२ ॥

जब ढेकी पक्षी आकाश में जाकर बोलने लगे तो बारिश होने की कोई आशा नहीं ॥ १६२ ॥

बायू में जब बायु समाय।
कहैं घाघ जल कहाँ अमाय ॥ १६३ ॥

जब एक ओर से बहती हुई हवा दूसरी ओर की हवा में मिल जाय तो घाघ कहते हैं कि बहुत जोरों की वर्षा होगी ॥ १६३ ॥

माघ पूस जो दखिना चलै।
तो सावन के आगम भलै ॥ १६४ ॥

जब माघ-पूस के महीने में दक्षिणी हवा चले तो सावन में वर्षा की अच्छी आगम होती है ॥ १६४ ॥

पुख पुनर्बसु भरे न ताल।
फेर भरेगा अगली साल ॥ १६५ ॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्रों के पानी से भी ताल न भर जाय तो फिर अगले साल ही भरने की आशा करनी चाहिये, अर्थात् फिर वृष्टि नहीं होगी ॥ १६५ ॥

सावन सुकुला सत्तमी, निरमल मेघ जो होय।
घाघ कहै भड्डर से, पुहुमी खेती खोय॥ १६६॥

अगर श्रावण शुक्ला सप्तमी का आकाश साफ रहे तो धरती खेती खो देती है अर्थात् अकाल पड़ता है॥ १६६॥

औआ बौआ बहै बतास।
तब कीजै बरखा की आस॥ १६७॥

जब हवा का रुख एक ओर न होकर चारों तरफ हो तब वर्षा की आशा रखनी चाहिये॥ १६७॥

आदि न बरसै अद्रा, हस्त न बरसै निदान।
घाघ कहैं सुनु भड्डरी, सबै किसान नसान १६८॥

अगर आर्द्रा नक्षत्र के शुरू में और हस्त नक्षत्र के आखीर में पानी न बरसे तो किसान लोग नष्ट हो जाते हैं यानी पैदावार की आशा नहीं रह जाती॥ १६८॥

धन है राजा धन है देश।
जहवाँ बरसै अगहन सेस॥
पूसे दुगुना, माघ सवाई।
फागुन बरसै घर से जाई॥ १६९॥

जिस जगह अगहन मास के अन्त में बारिश हो वहाँ का राजा और देश बहुत ही भाग्यशाली होता है। पूस में पानी बरसने से दुगुना और माघ में सवाई पैदावार होती है। अगर कहीं फाल्गुन में वर्षा हो तो सब अनाज चौपट हो जाता है॥ १५९॥

चित्रा में जौ बरखा होय।
सगरी खेती जावे खोय॥ १७०॥

चित्रा में वर्षा होने से सारी फसल बर्बाद हो जाती है॥ १७०॥

हथिया बरसै तीन होय, सक्कर साठी मास।
हथिया बरसै तीन खोय, कोदो तिल्ली और कपास॥१७१॥

हस्त नक्षत्र में पानी बरसने से ईख, धान तथा उड़द की उपज बहुतायत से होती है। परन्तु कोदो, तिल्ली और कपास के लिए हानिकारक है॥ १७१ ॥

सब दिन बरसै दखिना बाय॥
कभी न बरसै बरखा आय॥ १७२॥

दक्षिणी हवा के बहने से सभी ऋतुओं में पानी बरस सकता है, लेकिन वर्षाऋतु मे नहीं बरसता ॥ १७२ ॥

रात निबद्दर दिन में छया।
कहैं घाघ फिर बरखा गया॥ १७३॥

'घाघ कवि' कहते हैं कि अगर रात्रि के समय आसमान साफ रहे और दिन में बादल घिर आवे तो समझना चाहिये कि अब वर्षाऋतु खतम हो गयी है॥ १७३ ॥

सावन पछुवाँ दिन दुइ चार।
चूल्हे के पाछे, उपजे सार॥ १७४॥

यदि सावन के महीने में दो-चार दिन भी पश्चिमी हवा चल जाय तो चूल्हे के पीछे सूखे स्थान में भी खेती की जा सकती है अर्थात् घोर वृष्टि होगी ॥ १७४ ॥

खन पुरवैया खन पछियाँव।
खन में बहै बबूरा बाव॥
जो बादर बादर माँ जाय।
कहैं घाघ जल कहाँ समाय॥ १७५॥

बरसात के दिनों में अगर किसी क्षण पुरवा और किसी क्षण पछुवाँ हवा चले, कभी-कभी बवंडर का आक्रमण हो जाय और बादलों के ऊपर बादल दौड़ने लगे तो समझना चाहिये कि बहुत जोरों की वर्षा होने वाली है॥ १७५ ॥

राम बाँस जहँ गड़ै अचूका ।
तहँ पानी की आस अकूता ॥ १७६ ॥

जिस जगह रामबाँस बिना कठिनाई के जमीन में गड़ जाय तो उस स्थान में अथाह पानी जानना चाहिये ॥ १७६ ॥

रात दिना घमछाहीं । कहैं घाघ फिर बरखा नाहीं ॥ १७७ ॥

जब लगातार कभी धूप और कभी छाँह हो तो वर्षा होने की आशा नहीं करनी चाहिये ॥ १७७ ॥

तपै मृगसिरा जोय । तो हरदम बरखा होय ॥ १७८ ॥

मृगशिरा नक्षत्र के तपने के बाद होने वाली वर्षा अच्छी होती है ॥ १७८ ॥

आवत आदर ना दियो, जात दियो नहिं हस्त ।
ये दोनों पछतायेंगे, पाहुन अरु गृहस्त ॥१७९॥

अपने यहाँ आये हुए मेहमानों का यदि सत्कार न किया जाय और जाते समय उन्हें खाली हाथ बिदा करदे तो वे अप्रसन्न हो जाते हैं, उसी प्रकार आर्द्रा नक्षत्र के आने और हस्त नक्षत्र के जाने पर पानी न बरसे तो किसानों को बड़ा कष्ट होता है ॥ १७९ ॥

पुख पुनर्वसु भरे न ताल ।
फिर बरसेगा पाय असाढ़ ॥ १८० ॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्रों की वर्षा से भी ताल-तलैया न भरी तो अगले साल के आषाढ़ महीने में ही भरेगी ॥ १८० ॥

दूर गुड़ासा डूरे पानी ।
नियर गुड़ासा नियरै पानी ॥ १८१ ॥

बहुत दूर से गुड़ासा (एक प्रकार का कीड़ा) के बोलने पर पानी बरसने की आशा भी दूर होती है और पास से बोलने पर पानी की आशा करीब होती है ॥ १८१ ॥

हथिया बरसै चित्रा मँड़राय ।
बैठे घर किसान रिरियाय ॥ १८२ ॥

यदि हस्तनक्षत्र मे पानी बरसे और चित्रा में बादल उमड़ते रहें तो किसान लोग घर मे बैठकर खुशी की गीत गाया करते हैं ॥१८२॥

बरसै चित्रा तीन जात, मोथी मास उखार ॥ १८३ ॥

चित्रा नक्षत्र में पानी बरसने पर मोथी, उड़द और ऊख, इन तीनों फसलों की हानि होती है ॥ १८३ ॥

सिंह गरजै, हथिया बरसै ॥ १८४ ॥

सिंह नक्षत्र में बादलों के गरजने से हस्तनक्षत्र में वर्षा होती है ॥ १८४ ॥

रोहिनी बरसै मृग तपै, फिर कुछ अद्रा जात ।
घाघ कहैं सुनु घाघिनी, स्वान भात नहिं खात ॥१८५॥

रोहिणी नक्षत्र के बरसने, मृगशिरा के तपने और इसके बाद फिर थोड़ा आर्द्रा नक्षत्र के बरस देने से कुत्ते भी भात खाकर ऊब जाते हैं। अर्थात् पैदावार बहुत ही उत्तम होती है ॥ १८५ ॥

चैते पछुवाँ भादों जला ।
भादों पछुवाँ माघे पाला ॥ १८६ ॥

चैत्र के महीने में पछुवाँ हवा बहने से भादों में अच्छी वर्षा होती है और भादों के महीने मे यदि पश्चिमी हवा चले तो माघ में पाला पड़ता है ॥ १८६ ॥

दिन में बद्दर रातनिबद्दर, चले पुरवैया झब्बर-झब्बर ॥
कहैं घाघ कुछ होनी होई, कुआँ के पानी धोबी धोई ॥ १८७ ॥

घाघ कवि कहते हैं कि यदि दिन के समय बादल हो और रात को आकाश मेघरहित हो, धीरे-धीरे पुरवा हवा चले तो होनहार अच्छा नहीं जान पड़ता है। घोर अकाल पड़ेगा, यहाँ तक कि धोबियों को

कुएँ से पानी लेकर कपड़ा धोना पड़ेगा। अर्थात् उन्हें तालों में इतना पानी नहीं मिलेगा कि वे कपड़ों को साफ कर सकें ॥ १८७ ॥

धनुष उगे बंगाली।
मेह साँझ या सकाली ॥ १८८ ॥

यदि पूर्व दिशा की ओर इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो साँझ-सबेरे में ही बारिश की उम्मीद करनी चाहिये ॥ १८८ ॥

जब हथिया पूँछ डुलावै।
सब घर में गेहूँ आवै ॥ १८६ ॥

हस्तनक्षत्र के आखीर में वर्षा हो जाने पर गेहूँ की पैदावार प्रचुरता से होती है ॥ १८६ ॥

मघा के बरसे, मात के परसे।
भूखा न चाहे, फिर कुछ हर से ॥ १९० ॥

मघा नक्षत्र में पानी बरसने और माता के द्वारा रसोई के परोसे जाने पर मनुष्य अघा जाता है, फिर उसे ईश्वर से किसी वस्तु की चाह नहीं रह जाती ॥१६०॥

चटका मघा सूखिगा ऊसर।
दूध-भात में परिगा मूसर ॥ १६१ ॥

मघा नक्षत्र में पानी न बरसने से बंजर भूमि भी सूख जाती है, जिससे चरागाह का अभाव हो जाता है। इसलिए पानी की कमी से दूध और चावल का मिलना कठिन है ॥ १९१ ॥

दिनवाँ बादर, सुमवाँ आदर ॥ १९२ ॥

दिन के समय होने वाली बदली और कंजूस का आदर करना निरर्थक है ॥ १६२ ॥

पुरुब के बादर पश्चिम जाय।
मोटी बनावै, मोटी खाय ॥

पछुवाँ बादर, पुरुब क जाय।
पतरी खावै, पतरी बनाय ॥ १६३ ॥

यदि पूर्व दिशा से बादल पश्चिम की ओर जाता हो तो शीघ्र ही वर्षा होने वाली समझना चाहिये, इसलिए मोटी रोटी बनाकर खाना चाहिये और यदि पश्चिम का बादल पूर्व की ओर जाता हो तो सूखा पड़ेगा। इसलिए पतली रोटी बनाकर खाना चाहिये ॥१६३॥

अद्रा चौथ, मघा के पंचम ॥ १६४ ॥

आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होने से आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा इन चारों नक्षत्रों में पानी बरसता ही जाता है। यदि मघा में वृष्टि होती है तो मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्रा ये पाँचों नक्षत्र क्रमशः बरसते ही जाया करते है ।। १९४ ।।

एक बूँद जो चैत में परै।
सकल बूँद सावन में टरै ॥ १९५ ॥

चैत्र मास में थोड़ी वर्षा होने से भी सावन की पूरी बारिश मारी जाती है। अर्थात् सूखा पड़ता है ॥ १६५ ॥

वर्षा होय पुनर्वसु स्वाती।
चरखा चले न बोले ताँती ॥ १९६ ॥

पुनर्वसु और स्वाति नक्षत्र में वृष्टि होने से कपास की फसल नष्ट हो जाती है। इसलिए रूई के अभाव में चरखे का चलना बन्द हो जाता है ॥ १६६ ॥

जब चलै हड़हवा कोन।
तब बनजारा लादै नोन ॥ १६७ ॥

जब दक्षिणी-पश्चिमी हवा चलती है, तब बारिश होने की आशा जाती रहती है। ऐसे मौसिम में बनजारे लोग नमक का व्यापार करने के लिए बाहर जाते हैं ।। १९७ ।।

अद्रा गइले तीनों जाय, सन-साठी कपास।
हथिया गइले सबही जाय, आगिल पाछिल नास॥१९८॥

आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होने से सन, साठा का चावल और कपास की खेती नष्ट हो जाती है, परन्तु हस्त में सूखा पड़ने से सभी फसलों को हानि पहुँचती है ॥ १९८ ॥

खाद

खाद देय तो होवे खेती।
नहीं तो रहे नदी की रेती ॥ १९९ ॥

खाद देने से ही खेती हो सकती है, जिस खेत में खाद नहीं दी जाती वह खेत नदी की रेती के समान होता है ॥१९९॥

खेते पाँसा जो न दियाना।
सो नर रहे दरिद्र समाना ॥ २०० ॥

जो किसान अपने खेतों में खाद नहीं छोड़ता वह हमेशा दरिद्र होकर दुःख भोगता है ॥ २०० ॥

जिसके खेत पड़े नहिं गोबर।
सो किसान है, सबसे दूबर ॥ २०१ ॥

जिस किसान के खेत में गोबर नहीं पड़ता है, उसे बहुत ही कमजोर जानना चाहिये। अर्थात् उसके खेत में कोई भी फसल नहीं हो सकती ॥ २०१ ॥

गोबर मैला पाती सड़ै।
फिर खेतो में दाना बढ़ै ॥ २०२ ॥

जब खेती में गोबर, मैला और पत्तियाँ सड़ती है, तभी अन्नों की बढ़ती होती है ॥ २०२ ॥

गोबर, चँकवर, चोकर, रूसा।
इनके छोड़े, होय न भूसा॥ २०३॥

जो लोग खेत में गोबर, चँकवड़, चोकर और अडूस की पत्तियों को बिना अच्छी तरह सड़ाये ही डाल देते हैं तो उन लोगों की पैदावार अच्छी नहीं होती॥ २०३॥

गोबर विष्ठा नीम की खली।
इनसे खेती दुगुनी फली॥ २०४॥

खेत में गोबर, विष्ठा और नीम की खली देने से दुगुना लाभ होता है और फसलों को कीड़े आदि से हानि पहुँचने का भी डर नहीं रहता॥ २०४॥

खेती करै खाद से भरै।
भर भर कोठिला में लै धरै॥ २०५॥

यदि खेती करने की इच्छा हो तो खूब अच्छी तरह से खाद देनी चाहिये। ऐसा करने से पैदावार बहुत अधिकता से होती है॥ २०५॥

बैलों की पहचान

बरद बिसाहन जाओ कन्ता।
खैरा का मति देखो दन्ता॥
जहाँ परै खैरे की खुरी।
तो कर डारै चापर पुरी॥
जहाँ गिरै खैरा की लार।
लेके बढ़नी बुहारो सार॥ २०६॥

बैल खरीदते समय खैरे रंग वाला बैल नहीं लेना चाहिये। जिस स्थान में खैरे बैल का खुर पड़ जाता है वह चौपट हो जाता है और

जहाँ उसकी लार गिरी हो, वहाँ झाड़ू से बटोर कर साफ कर देना उचित है ॥ २०६ ॥

छोटा मुँह औ ऐंठा कान ।
भले बैल की है पहचान ॥ २०७ ॥

जिस बैल का मुँह छोटा और कान मुड़ा हुआ हो वह अच्छा समझा जाता है ॥ २०७ ॥

लम्बे-लम्बे कान, औ ढीली है मुतान ।
छोड़ो-छोड़ो किसान, नतो जात है जान ॥ २०८ ॥

लम्बे कान और लटकती हुई मुतान (मूत्रेन्द्रिय) वाले बैलों को कभी न खरीदना चाहिये, क्योंकि वे शीघ्र ही मर जाते हैं ॥ २०८ ॥

नीला कन्धा बैगन खुरा ।
सो नहिं होवे कन्त बुरा ॥ २०६ ॥

नीले कन्धे और बैंगनी रंग के खुर वाले बैल निकम्मे नहीं होते हैं ॥ २०६ ॥

झँपा पूँछ औ छोटे कान ।
ऐसे बरद मेहनती मान ॥ २१० ॥

गुच्छेदार पूँछ और छोटे-छोटे कान वाले बैल बड़े ही परिश्रमी होते हैं ॥ २१० ॥

बरद बिसाहन जाओ कन्ता ।
कबरे का मति देखो दन्ता ॥ २११ ॥

बैल खरीद करने के समय चितकबरे बैल का दाँत नहीं देखना चाहिये । अर्थात् ये बैल अच्छे होते हैं ॥ २११ ॥

पतली पैंडली मोटी रान, पूँछ रहे धरती तरियान ।
जाके होवै ऐसी गोई, वाको तकै और सब कोई ॥ २१२ ॥

जिसके पास पतली पैंडुली, मोटी रान और भूमि तक लटकती हुई

लम्बी पूँछ वाले बैल होते हैं, उसकी तरफ सभी लोगों की निगाह जाती हैं यानी वह किसान बहुत ही उत्तम समझा जाता है ॥ २१२ ॥

बैल बिसाहन जाओ कन्ता।
भूरे का जनि देखो दन्ता ॥ २१३ ॥

बैल खरीदने के समय भूरे रंग वाले बैल को बिना दाँत देखे ही खरीद लेना चाहिये ॥ २१३ ॥

बैल तरकनी टूटी नाव।
एक दिना दैहैं ये दाँव ॥ २१४ ॥

चमकने वाले बैल और टूटी नाव ये दोनों एक दिन अवश्य ही धोखा देते हैं ॥ २१४ ॥

श्वेत रंग अरु पीठ बरारी।
उन्हें देख मति भूल्यो अनारी ॥ २१५ ॥

सफेद रंग और दबी पीठ वाले बैलों को खरीदने में कभी नहीं चूकना चाहिये ॥ २१५ ॥

बैल लेवै कजरा। दाम देवै अगरा ॥ २१६ ॥

काली आँख वाले बैल को पेशगी दाम देकर लेलेना चाहिये ॥२१६॥

जहाँ गिरै फुलवा की लार।
बढ़नी लेके बुहारो सार ॥ २१७ ॥

जिस जगह फुलहे बैल की लार बही हो वहाँ झाड़ू से पोंछ देना चाहिये। इस जाति के बैल अशुभ माने जाते हैं ॥ २१७ ॥

छोटी सींग औ छोटी पूँछ।
बरद खरीदो सो बे पूँछ ॥ २१८ ॥

जिस बैल की सींग और पूँछ छोटी हो, उसे बिना सोचे समझे ही खरीद लेना चाहिये ॥ २१८ ॥

जहँ देखो पटवा की कोर।
तहँ खोलो थैली की कोर ॥ २१९ ॥

पीले रंग वाले बैलों को देखकर रुपये की थैली खोल देनी चाहिये। अर्थात् इन्हें खरीदने में कंजूसी नहीं करनी चाहिये ॥२१६॥

बैल चमकना जोत में, अरु चमकीली नार।
होते बैरी प्रान के, रखैं लाज करतार ॥२२०॥

जोतने के समय भड़कने वाला बैल और चमकीली स्त्री ये दोनों जानी दुश्मन होते हैं। इनसे भगवान ही रक्षा करें ॥२२०॥

हिरन मुतान औ पतली पूँछ।
बरद बिसाहो कन्त बे पूँछ ॥ २२१ ॥

पतली पूँछ और हिरन की तरह पेशाब करने वाले बैल को बिना विचारे ही ले लेना चाहिये ॥२२१॥

कार कछौरी झबरे कान।
छाँड़ि इन्हें मति लीन्हो आन ॥ २२२॥

काली काछ और झबरे कान वाले बैलों के अतिरिक्त दूसरे बैलों को नहीं खरीदना चाहिये, क्योंकि ये बहुत ही उत्तम जाति के होते हैं ॥ २२२ ॥

मियनी बैल बड़ो बलवान।
तुरतै करते ठाढ़े कान ॥ २२३ ॥

मियनी जाति का बैल बहुत ही मजबूत होता है, यह तुरन्त ही कानों को खड़ा कर लेता है ॥ २२३ ॥

पिय देखो जब संपति थोड़ी।
बेसहो गाय बियाउर घोड़ी ॥ २२४ ॥

यदि पास में थोड़ी पूँजी हो तो ब्याने वाली गाय और घोड़ी को खरीदना चाहिये ॥ २२४ ॥

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह पर सोहे धौर।
घाघ कहैं यह बैल है, जोतेहु केहुना कौर ॥

सींग कहै भोर देखो करा।
बिन धरनी का करौं धरा ॥ २२५ ॥

सौंख जाति का बैल अर्थात् जिसके मस्तक पर दाग हो बिना स्त्री का घर बना डालता है। इस जाति का बैल कभी नहीं खरीदना चाहिये॥ २२५॥

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़।
ये नीके नहि होत हैं, चाहे बद लो होड़॥ २२६॥

बैलों का गिरा हुआ सींग और मनुष्यों का कुष्ठ रोग कभी भी अच्छा नही होता। यह पक्की बात है॥ २२६॥

उदंत बरदे उदंत ब्याये।
आप मरे या मालकै खाये॥ २२७॥

जो गाय उदंत अवस्था में यानी जब तक दूध के दाँत न गिर चुके हों, बरदाती या ब्याती है तो वह स्वयं मर जाती अथवा मालिक का ही नाश कर डालती है॥ २२७॥

जहवाँ देखो रूपा धौर।
चार सुका बरु दीजै और॥ २२८॥

सफेद रंग वाले बैल का देखकर उसकी कीमत से एक रुपया और भी अधिक देकर खरीद लेना उचित है॥ २ ८॥

बछवा बाँधा जाय मठाय।
बैठा ज्वान जाय तुँदियाय॥ २२९॥

हर वक्त बाँधकर रखने से बछड़ा सुस्त हो जाता है उसी प्रकार यदि जवान मनुष्य भी कोई काम-धंधा न करे तो वह भी बैठे-बैठे आलसी हो जाता है और तोंद निकल आती है॥ २२९॥

एक बात तुम गहो हमारी।
बूढ़ बैल से नीक कुदारी॥ २३०॥

बूढ़े बैल की अपेक्षा कुदारी अच्छा काम देती है। कुदाल लेकर अपने हाथ से काम कर लेना अच्छा है, परन्तु बूढ़े बैल को रखना ठीक नहीं॥ २३०॥

डगमग डोलत, फरका, फेकत, कहाँ चले तुम बाँड़ा।
पहिले खावे रान परोसी, खसमै को कब छाँड़ा॥ २३१॥

पूँछकटा बैल डगमगा कर चलता और छानी भी उजाड़ डालता है। पहले पहल वह पास-पड़ोस के लोगों को नष्ट करता है और अन्त में मालिक का भी सफाया कर देता है॥ २३१॥

बासड़ औ मुँह धौरा।
तिन्हें देख चरवाहा रौरा॥ २३२॥

उभरी हुई रीढ़ और सफेद मुँह वाले बैलों को देखते ही दुःख से चरवाहा रो देता है॥ २३२॥

निटिया बैल छोटिया हारी।
कहै दूब मोर काह बिगारी॥ २३३॥

नाटे कद वाले बैल और छोटे हरवाहे से दूब भी नहीं उखड़ सकती हैं॥ २३३॥

साँत दाँत उदन्त को, रंग भी काला होय।
भूल इन्हें न बेसाहिय, बहे दाम जो होय॥ २३४॥

सात दाँत के काले रंग वाले उदन्त बैल को भूलकर भी नहीं खरीदना चाहिये। इनकी कीमत चाहे भले ही कम क्यों न हो॥ २३४॥

अमहा जबहा जोतहु जाय।
भीख माँग के निश्चय खाय॥ २३५॥

अमहा और जबहा नस्ल वाले बैलों को जोतने से निश्चय ही भीख माँगने की बारी आ जाती है॥ २३५॥

देखे पोंची ओहि पार।
खोलै थैली यहि पार॥ २३६॥

मुड़ी हुई सींग वाले बैलों को उस पार देखते ही उसे खरीदने के लिए पहले से ही रुपयों की थैली खोल लेनी चाहिये॥ २३६॥

धवल बरौनी मुँह का महुआ।
देखि उन्हें हरवाहा रोवा॥ २३७॥

सफेद बरौनी और पीले मुँह वाले बैल को देखकर हरवाहा रो पड़ता है। इस जाति के बैल बहुत ही निकम्मे होते हैं॥ २३७॥

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ।
सद्दर कहै कि मलिकै खाऊँ॥
नौदर कहे मैं नौ दिशि जाऊँ।
घर कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ॥ २३८॥

छः दाँतों का बैल इधर-उधर घूमता-फिरता है, सात दाँतों वाला बैल अपने स्वामी को ही खा जाता है और नौ दाँतों का बैल नौ दिशाओं में घू -घूमकर अपने मालिक के घर, परिवार और पुरोहित का नाश करता है॥ २३८॥

मरद निरौनी बरदै दायें।
दुभरी राहे में दुःख पायें॥ २३९॥

मर्द को निराई करने के समय, बैल को हल के दाहिने चलने के वक्त तथा गर्भवती स्त्री को रास्ता चलने में कष्ट होता है॥ २३९॥

नासू करै राज का नास॥ २४०॥

थोड़ी पसलियों वाला बैल राज्य का नाश करके ही छोड़ता है॥ २४०॥

नाटा खोटा बेचि के, चार धुरन्धर लेहु।
अपनो काम चलाय के, औरन मँगनी देहु॥ २४१॥

छोटे-छोटे सभी बैलों को बेंचकर चार मजबूत बैलों को खरीद लेना चाहिये, जिससे अपना काम भी हो सके और दूसरों को समय पर मँगनी भी दे सके॥ २४१॥

भैंसा बरद को साथ में जोते,
काढ़ि के करज बिरानो खाय।

बधिया ऐंचत है बहरी को,

भैंसा ओहरी को ले जाय ॥२४२॥

भैंसा और बैल को एक साथ जोतना कर्ज लेकर खाने के समान है। क्योंकि बैल खेत की ओर जाता है और भैंसा कीचड़ की ओर जाने के लिए खींचता है ॥ २४२ ॥

वह किसान है पातर। जो रखता बैल है गादर ॥ २४३ ॥

गादर (गरियार) बैल का रखने वाला किसान बहुत ही कमजोर समझा जाता है ॥ २४३ ॥

एक समय का सुन लो खेल।

रहा चरत ऊसर में अकेल ॥

एक मुसाफिर "हर हर" कहा।

गिरा तुरन्तै होश न रहा ॥ २४४ ॥

किसी समय ऊसर जमीन में एक गादर बैल घास चर रहा था। इतने में ही अचानक एक राहगीर "हर हर" शब्द कहता हुआ आ पड़ा। उस राही के शब्द को सुनकर बैल ने समझा कि यह मुझे हल में जोतने के लिए कह रहा है। इस डर से वह गादर बैल उसी जगह वहीं गिरकर बेहोश हो गया। इसलिए गादर बैल को कभी भूलकर भी नहीं रखना चाहिये ॥ २४४ ॥

बड़ सिंगा मति लीजो मोल।

कूएँ में डारो थैली खोल ॥ २४५ ॥

बड़े-बड़े सींग वाले बैलों को कभी नहीं खरीदना चाहिये। इनको खरीद कर रुपया कुएँ में फेंकने के समान होता है ॥ २४५ ॥

कार कछौटी सुनरे वान।

छाँड़ि इन्हें मति लीजो आन ॥ २४६ ॥

काली काछ और सुन्दर रंग वाले बैलों को ही खरीदना चाहिये ॥ २४६ ॥

सींग मुड़ा माथा उठा, मुँह का होवे गोल।
बाल नरम चंचल करन, चपल बैल अनमोल ॥ २४७ ॥

जिस बैल का सींग मुड़ा हुआ हो, मस्तक उठा हो, मुँह की बनावट गोल रहे, शरीर पर के रोएँ मुलायम और कान चंचल हों, उस बैल को बहुत ही तेज और उत्तम जाति का समझना चाहिये ॥ २४७ ॥

ना मोहिं जोतो छलिया कुलिया,
ना मोहिं जोतो दायें।
बीस बरस तक खेती करिहौं,
जो नहिं मिलिहैं गायें ॥ २४८ ॥

यदि बैलों को छोटे-छोटे खेतों में न जोते, दाहिनी ओर भी न जोते तथा गायों के साथ न मिलने दिया जाय तो वे बीस साल तक ठीक से खेती का काम कर सकते हैं ॥ २४८ ॥

है उत्तम खेती उसकी। रहे मेवाती गोई जिसकी ॥ २४९ ॥

जिनके पास मेवाती जाति के बैल होते हैं, उनकी खेती बहुत ही उत्तम होती है ॥ २४९ ॥

मुँह का मोट माथ का महुआ।
इन्हें देखि मति भूल्यो रहुआ ॥
धरती नहीं हराई जोतै।
मेड़, बैठा पागुर करै ॥ २५० ॥

मोटे मुँह और पीले मस्तक वाला बैल किसी काम का नहीं होगा। यह एक हराई भी खेत की जुताई नहीं कर सकता। खेत की मेड़ पर बैठकर पागुर (जुगाली) किया करता है ॥ २५० ॥

जोतै पुरबी, लादै दमोय।
हेंगा के खातिर, देवहा होय ॥ २५१ ॥

पूर्वी जाति का बैल खेत जोतने, दमोय जाति का बोझ लादने और देवहा जाति का बैल हेंगा (पाटा) फेरने का अच्छा काम करता है ॥२५१॥

जब देखिहा लोह बैलिया।
तब दीहा खोलि थैलिया ॥ २५२ ॥

लाल रंग के बैल को देखकर खरीदने के ख्याल से अपने रुपयों की थैली खोल रखनी चाहिये ॥ २५२ ॥

मत कोई लीजै मुसरहा बाहन।
मारि गुसैंये डालै पायन ॥ २५३ ॥

मुसरहा बैल (जिसके शरीर और पूँछ का रंग अलग अलग हो) को कभी नहीं खरीदना चाहिये। यह अपने मालिक का सत्यानाश कर डालता है ॥ २५३ ॥

करिया काछी धवरे बान।
इन्हें छाँड़ि मति लीजो आन ॥ २५४ ॥

काली काछ और सफेद रंग वाले बैलों को ही खरीदना चाहिये ॥ २५४ ॥

बैल मुसरहा जो कोई लेय।
राज नाश क्षण में कर देय ॥
पुत्र कलत्र सभी छुट जाय।
भीख माँग के दर-दर खाय ॥ २५५ ॥

जो लोग मुसरहा बैल खरीदते हैं, उनकी सारी संपत्ति शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। स्त्री-पुत्र का साथ छूट जाता है और वह दर-दर का भिखारी हो जाता है ॥ २५५ ॥

कृषी सम्बन्धी अन्य कहावतें

दस हल राव आठ हल राना।
चार हलों का बड़ा किसाना ॥ २५६ ॥

जिस किसान के पास दस हल की खेती होती हो उसे राव

कहते हैं। आठ हल की खेती वालों को धना तथा चार हल वालों को बहुत बड़ा किसान समझा जाता है॥ २५६॥

एक हल हत्या, दो हल काज।
तीन हल खेती, चार हल राज॥ २५७॥

एक हल की खेती केवल हत्या भर ही है। दो हलों की खेती खाने-पीने योग्य है, तीन हलों की खेती को खेती करना कहते हैं और चार हलों की खेती राज्य के समान सुखदायी होती है॥ २५७॥

जो हल जोते, खेती वाकी।
नहीं तो होवे, जाकी ताकी॥ २५८॥

जो लोग अपने हाथ से खेती करते हैं, उन्हीं लोगों की खेती उत्तम होती है। दूसरे के हाथ से करवाई गयी खेती किसी काम की नहीं होती॥ २५८॥

उत्तम खेती मध्यम बान।
निषिद्ध चाकरी भीख निदान॥ २५९॥

कृषि-कार्य सबसे श्रेष्ठ कर्म होता है, व्यापार उससे मध्यम श्रेणी का तथा नौकरी पेशा बहुत निषिद्ध काम है। भीख माँगने का काम तो बहुत ही नीच है॥ २५९॥

जोते खेत घास न टूटै।
तेकर भाग जल्द ही फूटै॥ २६०॥

खेत की जुताई करने पर भी अगर उस खेत की घास नष्ट न हो तो उस किसान की तकदीर जल्दी ही फूट जाती है। अर्थात् जिस खेत की घास नहीं उखड़ती, उस खेत में कुछ भी उपज नहीं होती॥२६०॥

काँध कुदारी खुरपी हाथ, लाठी हँसुवा राखै साथ।
काटै घास औ खेत निरावै, सोई चतुर किसान कहावै॥२६१॥

जो लोग हाथ में कुदाल और खुरपी लिये रहते हों साथ में लाठी

और हँसिया रखें तथा घास काटकर खेत की निराई करते हों, वही लोग चतुर किसान समझे जाते हैं ॥ २६१॥

माघ मास चलै पुरवाई।
तब सरसों को माहू खाई ॥ २६२ ॥

माघ के महीने में जब पुरवा हवा बहती है तो सरसों को माहू नाम का कीड़ा खा डालता है ॥ २६२ ॥

फागुन माह चले पुरवाई।
तब गेहूँ में गेरुई धाई ॥ २६३ ॥

जब फाल्गुन मास में पुरुवा हवा चलती है तो गेहूँ में गेरुई (एक प्रकार का कीड़ा) लग जाती है ॥ २६३ ॥

माघ मास जो परै न सीत।
महँगा नाज होयगो मीत ॥ २६४ ॥

यदि माघ के महीने में ठण्ढक न पड़े तो समझना चाहिये कि अनाज महँगा हो जायगा ॥ २६४ ॥

खेती करै साँझ घर सोवै।
मूसै चोर माथ धरि रोवै ॥ २६५ ॥

खेती करके रात को घर में सोने वाले किसान की खेती नष्ट हो जाती है। क्योंकि उसकी फसल को चोर लोग काट ले जाया करते हैं और वह किसान केवल सिर पकड़ कर रोता रह जाता है ॥ २६५ ॥

विधि का लिखा न मेटे कोय॥
बिना तुला के धान न होय ॥ २६६ ॥

जब तक तुला राशि पर सूर्य नहीं आता तब तक धान कभी भी नहीं हो सकता। विधाता के इस अटल नियम को कोई भी नहीं टाल सकता ॥ २६६ ॥

कीकर पाथा सिरस हल, हरियाने का बैल।
जोथा मेड़ लगाय के, घर बैठे पाथा खेत ॥ २६७ ॥

जिस किसान के पास बबूल की लकड़ी का पाया, सिरस की लकड़ी का हल, हरियाने का बैल और लोघ का वृक्ष लगा हो वह किसान बड़ा सुखी होता है ।। २६७ ।।

मंगलवार को परै दिवारी ।
हँसैं किसान रोवैं बेपारी ।। २६८ ।।

मंगलवार के दिन दीपावली का त्योहार पड़ने से कृषक-गण सुखी और व्यापारी वर्ग दुःखी होते हैं ।। २६८ ।।

जेकरे ऊखर लगै लोहाई ।
तेकरे ऊपर बड़ी तबाही ।। २६९ ।।

जिस किसान के ऊख में लाही नाम का कीड़ा लग जाता है तो उसके ऊपर बड़ी विपत्ति आ जाती है ।। २६९ ।।

उलटा बादर होइ चढ़ै, राँड़-मूँड़ सेन्हाय ।
कहैं घाघ सुनु भड्डरी, यह बरसै वह जाय ।। २७० ।।

जब हवा के प्रतिकूल बादल चढ़े यानी पुरुवा हवा चलने के समय पश्चिम से बादल आवे और विधवा स्त्री सिर खोलकर स्नान करे तो घाघ कहते हैं कि यह (बादल) तो बरसेगा और राँड़ दूसरे पुरुष का संग करेगी ।। २७० ।।

जब हर होंगे बरसन हार ।
काह करै दक्खिणी बयार ।। २७१ ।।

यदि ईश्वर बारिश करना चाहेंगे तो दक्खिणी हवा चलने से भी वर्षा नहीं रुक सकती ।। २७१ ।।

थोड़ा जोतै बहुत हेंगावै, ऊँच न बाँधै आड़ ।
ऊँचे पर खेती करै, पैदा हो भँड़भाड़ ।। २७२ ।।

थोड़ी जुताई करे, ज्यादा हेंगावे, बिना ऊँची मेंड़ बाँधे ही खेती करे तो उसके खेत में भँड़भाड़ (एक प्रकार का कँटीला पौधा) ही

पैदा होता है। अर्थात् किसी भी चीज की पैदावार नहीं हो सकती ॥ २७२ ॥

माघ क ऊमस जेठ क जाड़ ।
पहिले बरखा भरिगो ताल ।
घाघ कहैं हम होब वियोगी ।
कुआँ क पानी धोइहैं धोबी ॥ २७३ ॥

जब माघ महीने में गर्मी और जेठ में सर्दी पड़े और पहली वर्षा में ही ताल आदि भर जाय तो घाघ कहते हैं कि हम घर-बार छोड़कर वैरागी हो जायेंगे क्योंकि इतना सूखा पड़ेगा कि धोबियों को कुएँ के पानी से कपड़ा धोना पड़ेगा। ऐसी स्थिति में भला किसानों को खेती के लिए पानी कहाँ से मिलेगा ॥ २७३ ॥

माघ में बादर लाल धरै ।
तब निहचै जानो पाथर परै ॥ २७४ ॥

जब माघ के महीने में लाल-लाल बादल दिखाई पड़ें, तब समझना चाहिये कि जरूर ही पत्थर और पाला पड़ेगा ॥ २७४ ॥

दिन के बादर रात को तारे ।
चलो पीव जहँ जीवें बारे ॥ २७५ ॥

दिन के समय बदली और रात्रि में तारों का दिखाई पड़ना अकाल के लक्षण हैं, इसलिये हे प्रीतम ! इस देश को छोड़ कर दूसरे देश में चलकर रहो जहाँ बाल-बच्चों का भरण-पोषण हो सके ॥ २७५ ॥

अम्बाझोर चले पुरवाई ।
फिर जानो पावस ऋतु आई ॥ २७६ ॥

जब जोरों से पुरवा हवा बहे और आम के फल हवा के झौंके से गिरने लगें तब वर्षाऋतु का आगमन जानना चाहिये ॥ २७६ ॥

खेती तो उनकी जो करैं अहान-अहान ।
तिनकी खेती क्या होवे, जो देखें साँझ बिहान ॥२७७॥

जो लोग स्वयं नित्यप्रति अपने खेतों की रखवाली करते हैं, उन्हीं लोगों की खेती उत्तम होती है और जो लोग यदाकदा देखभाल करते हैं उनकी खेती खराब हो जाती है ॥ २७७ ॥

माघे गरमी जेठे जाड़।
घाघ कहैं हम भये उजाड़ ॥ २७८ ॥

यदि माघ के महीने में गर्मी और ज्येष्ठ में सर्दी पड़े तो समझना चाहिए कि बहुत भारी अकाल पड़ने वाला है ॥ २७८ ॥

छिछले जोते बोवै धान।
सो घर कोठिला भरै किसान ॥ २७६ ॥

धान के खेत में हल्की जुताई करके बीज बो देने से पैदावार इतनी अच्छी होती है कि अन्न रखने का कोठिला भर जाता है ॥ २७६ ॥

पहले गेहूँ पीछे धान।
तिसको कहिये पूर किसान ॥ २८० ॥

वह किसान बहुत ही चतुर समझा जाता है जो धान से पहले गेहूँ की खेती पर विचार करता है ॥ २८० ॥

तेरह कातिक तीन अषाढ़।
जो चूका सो हुआ उजाड़ ॥ २८१ ॥

कार्तिक महीने में तेरह दिन और आषाढ़ मास में तीन दिनों की खेती होती है। ऐसे मौके पर जो किसान लापरवाही करता है वह बर्बाद हो जाता है ॥ २८१ ॥

तीन कियारी तेरह गोड़।
तब देखै ऊखी के पोर ॥ २८२ ॥

ईख के खेत में तीन बार सिंचाई और तेरह बार गुड़ाई करने से फसल तैयार होती है ॥ २८२ ॥

ओंधरी बोवे तोड़ मरोर।
फिर सो होवे ऊखै ओर ॥ २८३ ॥

जोंधरी (मकई) के खेत में उलट-पुलट कर जुताई करनी चाहिये इससे उसकी पैदावार बहुत जबर्दस्त होती है ॥ २८३ ॥

कातिक बोवै अगहन भरै !
सो किसान हाकिम नहिं डरै ॥ २८४ ॥

जो किसान कार्तिक मास में खेत की बोआई करके अगहन में सिंचाई करता है वह लगान देने में हाकिम से नहीं डरता ॥ २८४ ॥

भैंस जो जनमे पड़वा, बहू जने जो धी।
समय नीक नहिं जानिये, कातिक बरसे मी ॥ २८५ ॥

अगर भैंस से पँड़वा (बछवा) उत्पन्न हो, बहू के पेट से कन्या जन्म ले तथा कार्तिक मास में वृष्टि हो तो बुरा समय आने वाला है, ऐसा जानना चाहिये ॥ २८५ ॥

खेती करो कपास औ ईख।
नहिं तो खाओ माँग के भीख ॥ २८६ ॥

यदि खेती से आमदनी करने की इच्छा हो तो कपास और ईख की खेती करो नहीं तो भीख माँगनी पड़ेगी ॥ २८६ ॥

जो कपास नहिं गोड़ी।
तो हाथ न लागी कौड़ी ॥ २८७ ॥

जो लोग कपास के खेत में गुड़ाई नहीं करते उनको कुछ भी प्राप्ति नहीं होती ॥ २८७ ॥

पाही जोते औ घर जाय।
तेहि के हाथे कुछ नहिं आय ॥ २८८ ॥

घर से दूर पर खेती करने वाला किसान अगर निगरानी न करे तो उसके हाथ कुछ भी नहीं लगता ॥ २८८ ॥

नीचे ओद ऊपर बदराई।
कहैं घाघ अब गेरुई खाई ॥ २८९ ॥

यदि भूमि में नमी रहे और आसमान में बादल हो तो घाघ कहते हैं कि फसल में अवश्य ही गेरुई लगेगी ॥ २८९ ॥

गेहूँ गेरुई गाँधी धान ।
फिर किसान को मुरदा जान ॥ २९० ॥

जब गेहूँ की फसल में गेरुई और धान में गाँधी रोग लग जाय तब किसान को मरा हुआ समझना चाहिये । अर्थात् वह किसान किसी काम का नहीं रह जाता ॥ २९० ॥

वेश्या बिटिया नील है, बन साँवाँ पुत मान।
उसके आये घर भरै, दूसर लुटावत आन ॥ २९१ ॥

नील वेश्या की कन्या और कपास तथा साँवा उसके पुत्र के समान हैं। कन्या के आने से घर भर जाता तथा पुत्र घर को लुटा देता है। यानी नील की खेती करने से खेत को उपजाऊ शक्ति बढ़ती तथा कपास और साँवाँ से घटती है ॥ २९१ ॥

माघा मकड़ी पुरवा डाँस।
उत्तरा आये सबका नास ॥ २९२ ॥

मघा नक्षत्र में मकड़ी तथा पूर्वा में डाँस उत्पन्न होते हैं, परन्तु उत्तरा के आने से ये दोनों नष्ट हो जाते हैं ॥ २९२ ॥

आगे की खेती आगे आगे।
पीछे की खेती पाछे भागे ॥ २९३ ॥

सबसे पहले खेती करने वालों की पैदावार सबसे आगे और अच्छी होती है तथा जो लोग बादमें खेती करते हैं उनकी खेती पिछड़ जाती और फसल भी अच्छी नहीं होती है ॥ २९३ ॥

सुख सुखराती देव उठान।
तेकरे बरहें करो नेवान ॥
ओकरे बरहें खेत खरिहान।
तेकरे बरहें कोठिला धान ॥ २९४ ॥

दिवाली और देवोत्थान एकादशी के बारह दिन बाद नया अन्न ग्रहण करना चाहिये। उसके बाद बारहवें दिन धान को काटकर खलिहान में लावे फिर उसके बारहवें दिन के अन्तर भर धान को कोठिला में रख देना चाहिये॥ २६४॥

अदरा में जो बोवै साठी।
मार भगावै दुःखै लाठी॥ २९५॥

जो लोग आर्द्रा नक्षत्र मे धान की बोआई करते हैं उनका सारा कष्ट दूर हो जाता है। अर्थात् पैदावार बहुत ही अच्छी होती है॥ २६५॥

सावन सुक्ला सत्तमी, उगत न दीखै भान।
तब लगि देव बरीसिहैं, जब लगि देव उठान॥ २६६॥

यदि श्रावण शुक्ला सप्तमी को सूर्य न दिखाई पड़े तो कार्तिक शुक्ल एकादशी यानी देवउठान तक वृष्टि होती रहती है॥ २६६॥

काँसी कूँसी चौथ क चान।
अब क्या होवे रोपे धान॥ २६७॥

काँस-कुश के फूल जाने तथा भाद्रपद की उजाली चौथ बीत जाने पर धान रोपने से कोई लाभ नहीं हो सकता॥ २६७॥

जेठ में जरै माघ में ठरै।
तब ऊख को खेती करै॥ २६८॥

ज्येष्ठ महीने की तपन और माघ की ठिठुरन जो लोग सहन करते हैं वे ही ईख की खेती सफलतापूर्वक कर सकते हैं॥ २६८॥

सावन भादों खेत निरावैं।
सो किसान अतिशय सुख पावैं॥ २९९॥

सावन भादों के महीने मे खेत की निराई करने वाला किसान बहुत ही सुख पाता है॥ २९९॥

माघ असाढ़ पहुनई कीन।
ताकी खेती होवै हीन॥ ३००॥

जो लोग आषाढ़ के महीने में घूम-घूमकर मेहमानदारी करते हैं, उनकी खेती नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है ॥ २०० ॥

गेहूँ बिस्सा । ईख तिस्सा ॥ २०१ ॥

गेहूँ की उपज बीज से बीसगुनी और ईख की तीस गुनी होती है ॥ २०१ ॥

जब बरसै तब बाँधो क्यारी ।
चतुर किसान जो रखै कुदारी ॥ २०२ ॥

जब वर्षा हो तब क्यारी बनानी चाहिये । जो किसान हर समय हाथ में कुदाल रखता हो, वही चतुर समझा जाता है ॥ २०२ ॥

कातिक मास रात हल जोतो ।
टाँग पसारे घर जनि सूतो ॥ २०३ ॥

कार्तिक के महीने में रात के समय खेतों में जुताई करनी चाहिये । आराम से घर पर खर्राटे नहीं लेना चाहिये ॥ २०३ ॥

थोर जोताई ढेर हेंगाई, ऊँचे बाँधे क्यारी ।
उपजै ते उपजै नाहीं घाघै देवे गारी ॥ २०४ ॥

थोड़ी जुताई और ज्यादा हेंगाई करने तथा ऊँची मेंड़ बनाने से यदि पैदावार हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो घाघ को गाली न देना क्योंकि इस प्रकार की खेती से उपज नहीं होती ॥ २०४ ॥

बिकरै खेत पुराना बीज ।
बाकी खेती जाये छीज ॥ २०५ ॥

जिसका खेत बीकर और बीज पुराना हो तो उसकी खेती तहस-नहस हो जाती है । अर्थात् पैदावार बहुत ही कम होती है ॥ २०५ ॥

नरसी गेहूँ सरसी जवा ।
बहुतै बरखा चना बवा ॥ २०६ ॥

गेहूँ को सूखी तथा जौ को नम भूमि में बोना उचित है । चना को काफी पानी बरस जाने के बाद बोना चाहिये ॥ २०६ ॥

ऊख सरवती दिवला धान।
छाँड़ि इन्हें मत बोओ आन ॥ २०७ ।'

ईख और दिवला धान के अतिरिक्त अन्य फसलों की खेती नहीं करनी चाहिये ॥ २०७ ॥

विधि का मिटै न लिखा विधान।
आधे चित्रा फूटी धान ॥ २०८ ॥

यह विधाता का अमिट विधान है कि आधे चित्रा के पहले धान नहीं फूटता ॥ २०८ ॥

गेहूँ जौ जब पछुँवा पावै।
तब जल्दी से खेती होवै ॥ २०९ ॥

जब पछुवाँ हवा चलने लगती है तब गेहूँ और जौ दवाँई करने लायक हो जाता है ॥ २०९ ॥

खेती करे अधिया। न बैल मरे न बधिया ॥ २१० ॥

अधिया पर खेती करने से बैलों की बचत हो जाती है ॥ २१० ॥

ऊँचे पर से बोला मँडुवा।
सब अन्नों का मैं हूँ भँड़ुवा ॥
आठ दिना जो मुझ को खाय।
भले मरद से चला न जाय ॥ २११ ॥

सब अन्नों में मडुवा बहुत ही नुकसानदेह अन्न होता है। यदि स्वस्थ मनुष्य इसे आठ दिनों तक लगातार खाय तो वह शक्तिहीन हो जाता है ॥ २११ ॥

समथर बोतै पूल बढ़ावै।
लागे जेठ भुसौला छावै ॥
भादों माह बढ़े जो गरदा।
बीस बरस तक बोवो बरदा ॥ २१२ ॥

अगर बैल को समतल भूमि में जोते, किसान का लड़का उसे अपने हाथों से चरावे, जेठ का महीना शुरू होते ही भुसवल (भूसा रखने का घर) छाकर बैलों का रहने लायक सूखी जगह बना दे तो बीस साल तक बैल खेती का काम अच्छी तरह से कर सकता है ॥ २१२ ॥

जो तेरे हों कुनवा घना । तो तू बोओ निहचै चना ॥ २१३ ॥

अगर परिवार बहुत बड़ा हो तो किसान को चने की खेती अवश्य करनी चाहिये ॥ २१३ ॥

मघा में मक्कर पूर्वा डाँस ।
उतरा आये सबका नास ॥ २१४ ॥

मघा में मकड़ी और पूर्वा में डाँस उत्पन्न होते हैं तथा उत्तरा नक्षत्र में सब नष्ट हो जाते हैं ॥ २१४ ॥

पछुवाँ हवा ओसावै जोय ।
कहै घाघ घुन कबहुँ न होय ॥ २१५ ॥

घाघ कहते हैं कि यदि पछुवाँ हवा के चलने पर अनाज ओसाया जाय यानी दाना और भूसा अलग-अलग किया जाय तो कभी भी उसमें घुन नहीं लगने पाता ॥ २१५ ॥

तिल्लो कोरैं मास बिलोरैं ॥ २१६ ॥

तिल को कोरना और उड़द को बिलोरना चाहिये ॥ २१६ ॥

एकसर खेती एकसर मार ।
कहै घाघ ये निहचै हार ॥ २१७ ॥

अकेले की खेती और अकेला मार करने वाला मनुष्य निश्चय ही असफल होता है ॥ २१७ ॥

मँडुवा मीन, चीन संग दही ।
कोदो क भात, दूध संग लही ॥ २१८ ॥

मँडुवा के साथ मछली, दही के साथ चीनी और कोदों के भात के साथ दूध का खाना उत्तम होता है ॥ २१८ ॥

बहे बयार उत्तरा। माँड़ पीवैं कुत्तरा॥ ३१९॥

जब उत्तरी हवा चलती है तो कुत्ते भी माँड़ पाते हैं। अर्थात् धान की पैदावार बहुत ही अधिक होती है॥ ३१९॥

ओझा कामया बैद किसान।
बधिया बैल न खेत मसान॥ ३२०॥

मजदूर ओझा, किसान वैद्य, बिना बधिया का बैल और खेत अरघट का स्थान हानिकर होता है॥ ३२०॥

मंगल पड़े तो भू चले, बुध के पड़े कुकाल।
फगुआ होय सनीचरे, निहचै पड़ै अकाल॥ ३२१॥

यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन मंगलवार पड़े तो भूचाल आता है, बुधवार से दुर्दिन और कहीं शनिवार पड़ जाय तो निश्चय ही भारी अकाल पड़ता है॥ ३२१॥

आधे में विद्या दहे, राजा दहे अचेत।
ओछे घर तिरिया दहे, दहे कलर का खेत॥ ३२२॥

अधूरी विद्या, बेखबर राजा, नीच खानदान का स्त्री और कपास का खेत नष्ट हो जाता है॥ ३२२॥

ऊख राखै सब कोई। जो राह में जेठ न होई॥ ३२३॥

अगर जेठ का महीना न पड़े तो ईख को खेती सभी लोग कर सकते हैं। परन्तु जेठ की गर्मी सब लोग नहीं बर्दाश्त कर सकते॥३२३॥

जै दिन भादौं चले पछार।
तै दिन पूसै पड़ै तुसार॥ ३२४॥

भादों के महीने में जितने दिन तक पछुवाँ हवा चलती है, पूस में उतने ही दिन तक पाला पड़ता है॥ ३२४॥

पहले छाजै तीनों घर।
सार, भुसौला औ बखर॥ ३२५॥

बरसात आने से पूर्व जानवरों के बाँधने, भूसा तथा गोहरी रखने का स्थान छा देना चाहिये ॥ ३२५ ॥

चना में सरदी बहुतै आवै ।
ताको जान गदहिला खावै ॥ ३२६ ॥

जब चने में अत्यन्त सर्दी घुस जाती है तब उसे गदहिला नाम के कीड़े खा डालते हैं ॥ ३२६ ॥

बाउ चले जब दखिना ।
तब माँड़ कहाँ से चखना ॥ ३२७ ॥

दक्षिणी हवा चलने से माँड़ पीने तक के लिए भी धान नहीं होता ॥ ३२७ ॥

जो तू चाहे माल को । तो ईख करले नाल को ॥ ३२८ ॥

यदि तुझे धन की इच्छा हो तो नाल की भूमि में ऊख की खेती करो ॥ ३२८ ॥

चना सींच पर जब हो आवै ।
ताको पहले तुरत कटावै ॥ ३२९ ॥

जब चना सींचने लायक हो जाय तो सर्वप्रथम उसकी कलम करानी चाहिये ॥ ३२९ ॥

गेहूँ बोओ काट कपास ।
नहिं हो ढेला नहिं हो घास ॥ ३३० ॥

कपास को काटने के बाद उसी खेत में गेहूँ को बोआई करनी चाहिये, परन्तु उस खेत में ढेला या घास-पात आदि न हो ॥ ३३० ॥

दुइ हल खेती एक हल बारी ।
एक बैल से नीक कुदारी ॥ ३३१ ॥

दो हल से खेती और एक हल से बारी का काम अच्छी तरह से होता है, परन्तु खेती के लिए एक बैल रखने की अपेक्षा कुदाल ही अच्छा है ॥ ३३१ ॥

गेहूँ होय काहें। असाढ़ में दुइ बाहें।
गेहूँ होय काहें। सोलह बाहें औ नौ गाहें॥
गेहूँ होय काहें। सोलह दायँ बाहें।
गेहूँ होय काहें। कातिक के चौबाहें॥ २३२॥

गेहूँ की फसल को आषाढ़ महीने में दो बार जोत देवै, सोलह बार जुताई करके नौ बार पाटा फेरे। उसके बाद फिर सोलह जुताई करके कार्तिक मास में चार बार और जोत दे तो गेहूँ की पैदावार बहुत ही उत्तम होती है। ऐसा घाघ का कथन है॥ २३२॥

जेते गहिरा जोते खेत।
परे बीज फल तेते देत॥ २३३॥

खेत की जुताई जितनी ही गहरी की जाती है, बीज बोने से उपज भी उतनी ही अधिक होती है॥ २३३॥

बीघा बायर बाय, बाँध जो होय बँधाये।
भरा भुसौला होय, बबुर जो होय रखाये॥
बढ़ई बसे नगीच, बसूला बाढ़ धराये।
तिरिया होय सुजान, बिया तैयार बनाये॥
बरद बगौधा होय, बरदिया चतुर सुहाये।
बेटवा होय सपूत, कहे बिन करै कराये॥ २३४॥

निम्नलिखित वस्तुएँ जिस किसान के पास हों वह भाग्यशाली समझा जाता है—खेत भरपूर हो, सिंचाई के लिए बाँध हो, भूसे का घर भरा रहे, बबूल का पेड़ लगा हो, लोहार पास में हो और उसका बसूला तेज धार का रहे, स्त्री ऐसी चतुर हो कि बोने के लिए बीजों को हर समय तैयार रखे। बैल सीधे स्वभाव के हों, हरवाहा हो, लड़का लायक हो जो बिना कहे ही खेती का काम अपने हाथ से करे और मजदूरों से करावे॥ २३४॥

५

उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो संग रहा॥
जो पूछै हरवाहा कहाँ।
बीज बूड़िगे यहाँ-वहाँ ॥३३५॥

जो लोग अपने हाथ से हल चलाकर स्वयं खेती करते हैं, उनकी खेती सबसे अच्छी होती है। जो लोग हरवाहे के साथ रहकर देखभाल करते हैं, उनकी खेती मध्यम श्रेणी की समझी जाती है, लेकिन जो मनुष्य घर बैठे-बैठे पूछता है कि हरवाहा कहाँ गया है तो उसकी खेती नष्ट हो जाती है और बीज भी तितर-बितर हो जाता है। अर्थात् हरवाहे लोग कुछ बीजों को बोते हैं और कुछ उठाकर अपने घर ले जाते हैं ॥३३५॥

अहिर बरदिया बाह्मन हारी।
फसल वगै की होय न वारी ॥ ३३६ ॥

अहीर और ब्राह्मण हरवाहा के होने पर सभी फसलें मारी जाती हैं ॥ ३३६ ॥

सबै काज, हर तर।
खसम हो सिर पर ॥ ३३७ ॥

कृषि का कार्य सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है अगर स्वामी स्वयं काम को सँभाले ॥ ३३७ ॥

साठी में साठी करे, बाढ़ी में बाढ़ी।
ईख में जो धान बोवे, जारो वाकी दाढ़ी ॥ ३३८ ॥

जो लोग साठी के खेत में दुबारा साठी बोते हैं, कपास के खेत में कपास और ऊख के खेत में धान की बोआई करते हैं उन लोगों की दाढ़ी में आग लगा देनी चाहिये, क्योंकि वे बहुत ही बेवकूफ होते हैं। इस ढंग से खेती करने पर पैदावार जाती रहती है ॥ ३३८ ॥

लगे बसन्त। ईख पकन्त ॥ ३३९ ॥

वसन्त ऋतु आते ही ऊख पकने लगती है ॥ १३६ ॥

दो दिन पछुवाँ छः पुरवाई।
गेहूँ जौ की करै दवाँई॥
ताके बाद ओसावै जोई।
दाना भूसा अलगे होई ॥ १४० ॥

दो दिन तक पछुवाँ हवा और छः दिनों तक पूर्वी हवा चलने पर दँवाई करने से दाना और भूसा अलग अलग हो जाता है ॥ १४० ॥

खेती पकी और कामिन गरम।
ये दोनों हैं बहुतै नरम ॥ १४१ ॥

पकी खेती और गर्भिणी स्त्री ये दोनों ही दुर्बल होती हैं ॥ १४१ ॥

घासे पर मकड़ी का जाला।
चने का बोया भरि भरि डाला ॥ १४२ ॥

जब घास के ऊपर मकड़ी जाला बुनने लगे तब चने की बोआई करनी चाहिये ॥ १४२ ॥

भैंस कँदेलिया तू पिया लाये।
माँगे दूध कभी नहिं पाये ॥ १४३ ॥

कँदेलिया जाति की भैंस से दूध नहीं होता ॥ १४३ ॥

लगे मास दो गहना। राजा मरे कि सहना ॥ १४४ ॥

महीने में दो बार ग्रहण लगने से राजा या प्रजा का अनिष्ट होता है ॥ १४४ ॥

खन के काटे घन के मोराये।
तब बरधन का दाम सुलाये ॥ १४५ ॥

ईख को जड़सहित खोदने और जोर से दबाकर पेरने से फायदा होता है और उसी समय बैलों के खरीदने का रुपया भी वसूल हो जाता है ॥ १४५ ॥

दो तावा। घर खावा॥ ३४६॥

जिस घर में दो तवें हो अर्थात् जहाँ पर आपसी फूट हो, वह घर तबाह हो जाता है॥ ३४६॥

चना काटै अधपका, जौ काटै पका।
काटै गेहूँ ओहि समय, जब बाली लटका॥ ३४७॥

चने को अधपकी हालत में, जौ को पकने पर और गेहूँ की बालियाँ लटक जाने पर कटाई करनी चाहिये॥ ३४७॥

पाकी खेती गाभिन गाय।
तब जानो जब मुँह में जाय॥ ३४८॥

तैयार खेती और गाभिन गाय जब अपने काम में आजाय तब सफल मानना चाहिये। पहले से उस पर भरोसा नहीं रखना चाहिये॥ ३४८॥

अब्बर खेती जुट्टी खाय।
सड़ जावै से बहुत मोटाय॥ ३४९॥

कमजोर खेतों में नील की पत्ती और डंठल आदि को सड़ाने से खेत की उपजाऊशक्ति बढ़ जाती है। क्योंकि नील अच्छी खाद का काम देती है॥ ३४९॥

काँचा खेत न जोतै कोई।
बीजन में आँखुआ नहिं होई॥ ३५०॥

गीली जमीन में जुताई करने पर बीजों से अंकुर भी नहीं निकलता॥ ३५०॥

आगे बोवै। सवाया लवै॥ ३५१॥

सबसे आगे बोआई करने से सवाया पैदावार होता है॥ ३५१॥

असाढ़ जोतै लड़के बारे, सावन भादों में हरवाहे।
कुआर जोतै घर का बेटा, खेती होवे सबसे जेठा॥ ३५२॥

आषाढ़ में खेत को लड़के भी जोत सकते हैं, लेकिन सावन-भादों के महीने में हरवाहे से ही खेत की जुताई करानी चाहिये। कुआर

महीने में अगर किसान का लड़का खेत जोतता है तो उसकी खेती सबसे बढ़-चढ़कर होती है। अर्थात् पैदावार बहुत ही उत्तम होती है ॥ २५२ ॥

जब सैल खटाखट बाजै। तब चना बहुत ही गाजै ॥ २५३ ॥

जब बैलों के जुए की सैले आपस में ढेले से टकराकर बजने लगें तो चने की पैदावार जोरों से होती है ॥ २५३ ॥

खेती वह जो खड़ा रखावै।
बिन देखे हरिना खा जावै ॥ २५४ ॥

जिस खेत की प्रतिदिन देख-रेख की जाती है, उसकी खेती अच्छी होती है। जो लोग अपने खेत की निगरानी नहीं करते उनकी खेती को पशु आदि चर जाया करते हैं ॥ २५४ ॥

एक मास ऋतु आगे जावै।
आधा जेठ असाढ़ कहावै ॥ २५५ ॥

एक महीना पहले से ही मौसम का असर मालूम पड़ने लगता है। आधा जेठ बीतने पर ही आषाढ़ के लक्षण प्रतीत होने लगते हैं। किसानों को समय से पहले ही तैयार हो जाना चाहिये ॥ २५५ ॥

गेहूँ बाहाँ, धान गाहा, ऊख गोड़ाई को है चाहा ॥२५६॥

गेहूँ जोतने, धान बिदाहने और ईख गुड़ाई करने से होती है ॥२५६॥

छोटी नसी पृथ्वी हँसी।
दूर गया पताल, तो टूट गया काल ॥ २५७ ॥

हल का छोटा फार होने से पृथ्वी हँसती है यानी पैदावार बहुत कम होती है। हलकी नाक दूर तक चली जाय तो अकाल नहीं पड़ता। अर्थात् जुताई जितना गहरी होती है, उपज भी उतनी ही अच्छी होती है ॥ २५७ ॥

नौ नसी, न एक कसी ॥ २५८ ॥

नौ बार की जुताई से जितना लाभ होता है, उतना ही एक बार फावड़े से खोदकर मिट्टी पलट देने से भी ॥ ३५८ ॥

सरसे अरसी, निरसे चना ॥ ३५९ ॥

नम भूमि में तीसी और खुश्क ज़मीन में चने की बोआई करनी चाहिये ॥ ३५९ ॥

जब बर्रें बरौठे आवे ।
तब रबी की फसल बोआवे ॥३६०॥

जब बर्रें उड़-उड़कर घर में आने लगें, तब रबी की बोआई करनी चाहिये ॥ ३६० ॥

कपास चुनाई, भूमि खनाई ॥ ३६१ ॥

कपास को चुनने और खेत को खोदने से ठीक होता है ॥ ३६१ ॥

ऊख कनाई काहे से ।
सेवाती पानी पाये से ॥ ३६२ ॥

स्वाती नक्षत्र में वर्षा होने से ईख की फसल में कना नामक एक रोग लग जाता है, जिसके कारण डंठल के भीतर का रेशा लाल होकर रस सूख जाता है ॥ ३६२ ॥

मोथी मास की खेती करना ।
कुँड़िया तोर उसर में धरना ॥ ३६३ ॥

मोथी और उड़द की खेती करने से मिट्टी के बरतन को फोड़कर फेंक देना पड़ता है ॥ ३६३ ॥

करमहीन नर खेती करै ।
सूखा परै कि बैल मरै ॥ ३६४ ॥

अगर खोटी तकदीर वाला आदमी खेती करता है तो सूखा पड़ जाता है अथवा बैल ही मर जाते हैं ॥ ३६४ ॥

नीम जवा कोदो आकर ।
बेर चना गेहूँ गाडर ॥ ३६५ ॥

जिस बार नीम का फूल खूब फूलता है तो जौ की पैदावार अच्छी होती है और मदार के फूलने से कादों खूब पैदा होता है। जब बेर की फसल बहुतायत से होती है तो चना भी होता है और गाडर नाम की घास होने से गेहूँ की उपज अच्छी होती है ॥ ३६५ ॥

दखिनी कुलछनी। पूस माघ सुलछनी ॥ ३६६ ॥

खेती के लिए दक्खिणी हवा हानिकारक होती है, परन्तु यदि पूस-माघ के महीने में चले तो लाभ होता है ॥ ३६६ ॥

तीन बैल, घर में दो चाकी।
पूरब खेत, राजकर बाकी ॥ ३६७ ॥

किसान के घर में तीन बैलों का होना, दो चक्कियों का चलना यानी आपसी वैमनस्य होना, खेत का पूर्व की ओर होना तथा लगान का बाकी रहना तकलीफदेह होती है ॥ ३६७ ॥

आस पास रबी हो बीच में खरीफ।
झटपट से आय के खा गया लफोफ ॥ ३६८ ॥

खरीफ की फसल के आसपास रबी की फसल बोने से पैदावार खराब हो जाती है ॥ ३६८ ॥

सात दिना चलै जो बाँड़ा।
सुखावे जल को सातों खाँड़ा ॥ ३६९ ॥

अगर सात दिनों तक दक्षिणी-पश्चिमी हवा चलती रहे तो सातों खंड का पानी सूख जाता है ॥ ३६९ ॥

उत्तर चमके बीजुरी, दक्खिण होय निशान।
जाय कहो अहिरा से, ऊँचे करे बँधान ॥ ३७० ॥

अगर उत्तर दिशा में बिजली चमके और दक्षिण की ओर बादल दिखायी पड़ें तो पानी बरसने की सम्भावना रहती है। इसलिये ग्वाले से कह दो कि अपनी गायों को ऊँचे पर बाँधे ॥ ३७० ॥

अगहन बरसे हून, पूसे दून।
माघ सवाई, फागुन घर से जाई॥ २७१॥

अगहन के महीने में बारिश होने से पैदावार बहुत उत्तम होती है। पूस में वृष्टि होने से दुगुनी और माघ में सवाई उपज होती है, परन्तु फाल्गुन में वर्षा होने पर घर की पूँजी भी चली जाती है॥ २७१॥

सावन शुकवा ना उगै। निहचै पड़ै अकाल॥ २७२॥

यदि श्रावण के महीने में शुक्रास्त रहे तो अवश्य ही अकाल पड़ता है॥ २७२॥

पूस बोये। पीस खाये॥ २७३॥

पूस के महीने में बोआई करने की अपेक्षा पीसकर खाना अच्छा होता है, परन्तु बोआई से कोई लाभ नहीं॥ २७३॥

बहुत करै सो गैर को।
थोड़ करै सो आप को॥ २७४॥

अत्यधिक खेती करने से औरों को फायदा होता है और थोड़ी करने से स्वयं को लाभ पहुँचता है॥ २७४॥

बाँध मेंड़ दस जोतन देवे।
दस मन बिगहा मोसे लेवे॥ २७५॥

मेंड़ बाँधकर जुताई करने से प्रति बीघे दस मन की पैदावार होती है॥ २७५॥

धान बिदाहैं। गेहूँ बाहैं॥ २७६॥

धान की फसल बिदाहने यानी फसल उगने पर फिर से जुताई करने और गेहूँ के खेत को जोतने से उपज बढ़ती है॥ २७६॥

बाहैं क्यों न असाढ़ एक बार।
अब का पछताये बारंबार॥ २७७॥

यदि आषाढ़ के महीने में खेत की एक बार जुताई न की गयी तो फिर पछताने से क्या हो सकता है॥ २७७॥

जोत न भावै अरसी चना ।
पोस न गावै नीच जना ॥ ३७८ ॥

अलसी (तीसी) और चना अधिक जुताई पसन्द नहीं करते उसी प्रकार दुष्ट मनुष्य भी अपने साथ अहसान करने वाले आदमी का गुणानुवाद नहीं गाते ॥ ३७८ ॥

उठके बजरा यों हँस बोलै ।
खावैं बूढ़ जुवा होइ डोलै ॥ ३७९ ॥

बाजरा खाने वाला बूढ़ा मनुष्य भी युवापुरुष के समान बलशाली हो जाता है । अर्थात् बाजरा बहुत ही पुष्टिकर है ॥ ३७९ ॥

दो पत्ती क्यों न निराये ।
अब बीनत क्यों घबराये ॥ ३८० ॥

कपास के पोधे में दो अंकुर निकल आने पर ही उसकी निराई करनी चाहिये । जो लोग ऐसा नहीं करते उनकी फसल अच्छी नहीं होती और चुनाई के लिए घबड़ाते हैं ॥ ३८० ॥

गोहूँ गिरै अभागे का ।
धान गिरै सुभागे का ॥ ३८१ ॥

गेहूँ बदकिस्मत आदमियों का गिरता है और धान भाग्यशालियों का ॥ ३८१ ॥

पुरुवा रोपे पूर किसान ।
आधा भूसी आधा धान ॥ ३८२ ॥

पूर्वानक्षत्र में धान की रोआई करने से आधा धान और आधा भूसी निकल जाती है । इसलिए जो किसान मालदार होते हैं, वे ही पूर्वानक्षत्र में धान रोपते हैं ॥ ३८२ ॥

उत्तम खेती आपुहिं करैं ।
मध्यम खेती भाई धरैं ॥

निकृष्ट खेती नौकर करै।
बिगड़ गयी बलाय टरै॥ ३८३॥

जो लोग अपने हाथों से खेती करते हैं उनका खेती उत्तम समझी जाती है, भाई से कराई जाने वाली मध्यम और नौकरों के द्वारा होने वाली खेती बहुत ही निकम्मा होती है। क्योंकि पैदावार न होने पर भी नौकरों को कोई गम नहीं रहता॥ ३८३॥

माघ मघारै, जेठ में जारै, भादों सारै।
तेकर मेहर कोठिला डारै॥ ३८४॥

गेहूँ के खेत को पहले माघ में जोतना चाहिये। ऐसा करने से खेत की खर-पतवार नष्ट हो जाती है और पैदावार इतनी अधिक होती है कि उस किसान की स्त्री अन्न रखने के लिए मिट्टी के बड़े-बड़े बरतनों को तैयार करती है॥ ३८४॥

कोठिला पर से बोली जई।
आधे, अगहन क्यों नहिं बई॥
जो तूँ बोते बिगहा चार।
तो मैं देतूँ कोठिला फार॥ ३८५॥

जौ को आधे अगहन में क्यों नहिं बोया? अगर पूरे चार बीघा भी बो दिया होता तो मैं कोठिला में न समाती। अर्थात् उपज बहुत ही अच्छी होती॥ ३८५॥

भुअरी भैंस गले में कंठा।
काली क दूध न भुअरी क मंठा॥ ३८६॥

गले में दो सफेद धारी पड़ी हुई भूरे रंग की भैंस का मट्ठा ही काली भैंस के दूध के समान गुण रखता है॥ ३८६॥

सेवाती सात। धान लपाठ॥ ३८७॥

स्वाती के सात दिन बाद ही धान पककर तैयार हो जाता है ३८७॥

खेती करै तो अपने बह।
नहीं तो चढ़े कन्हौड़े रह ॥ ३८८ ॥

खेती करनी हो तो अपने पुरुषार्थ से काम लेना चाहिये, नहीं तो मजदूरों की खोपड़ी पर चढ़े रहना चाहिये। अर्थात् मजदूरों के साथ रहकर देख-रेख करे तो खेती हो सकती है ॥ ३८८ ॥

माघ मास में बोओ झार।
फिर राखौ रबी की डार ॥ ३८९ ॥

अगर रबी की फसल के लिए खेत बनाना चाहते हो तो माघ में उड़द को साफ करके तैयार रखो ॥ ३८९ ॥

बाउ बहे जब पुरवा। तब पियो माँड़ का कुरवा ॥३९०॥

जब पुरवा हवा चलती है तब माँड पानी में खूब आता है। अर्थात् धान की पैदावार बहुत अच्छी होती है ॥ ३९० ॥

सावन सूखे धान होवे। भादों सूखे गेहूँ खोहे ॥ ३९१ ॥

सावन में सूखा पड़ने से धान तथा भादों के महीने में सूखा पड़े तो गेहूँ की उपज बहुतायत से होती है ॥ ३९१ ॥

चिरैया में चीर फार।
असरेखा में टार टार ॥
मघा में कौंधो डार ॥ ३९२ ॥

चित्रा नक्षत्र में हल्की खोदाई करके धान रोपना चाहिये, अश्लेषा में अच्छी तरह से जोतकर तथा मघा आने पर खाद देकर धान की खेती करे तो अच्छा फल मिलता है ॥ ३९२ ॥

आये मेख। हरि न पेख ॥ ३९३ ॥

मेष राशि की संक्रान्ति आने तक खेत की फसल कट जानी चाहिये ॥ ३९३ ॥

आगहन में क्यों नहिं दी कोर।
बैल तेरे क्या ले गये चोर ॥ ३९४ ॥

अगहन के महीने में तुमने ईख की जुताई क्यों नहीं की ? तुम्हारे बैलों को क्या चोर उठा ले गये थे ? जो लोग अगहन में ईख के खेत को नहीं जोतते, उनकी फसल अच्छी नहीं होती ॥ ३९४ ॥

चना खुटाये, गेहूँ बाहे।
धान गाहे, मक्की निराये॥
ऊख कमाये ॥ ३९५ ॥

चना को खोंटने, गेहूँ को बार २ जोतने, धान में पानी देने और ईख को बोने से पहले पानी में भिगोने से अच्छा फल मिलता है ॥ ३९५ ॥

हथिया में हाथ गोड़ चित्रा में फूल।
लगत सेवाती झोंपा झूल ॥ ३९६ ॥

हस्त नक्षत्र में धान रेंड़ता है, चित्रा में फूल लगते हैं और स्वाती के शुरू में ही बालें लटक जाती हैं ॥ ३९६ ॥

अगहन बवा। थोड़ा लवा ॥ ३९७ ॥

अगहन में गेहूँ-जौ बोने से पैदावार बहुत ही कम होती है ॥३९७॥

दस बाहों का माँड़ा।
बीस बाहों का गाड़ा ॥ ३९८ ॥

गेहूँ के खेत को दस बार और ईख के खेत को बीस बार जुताई करनी चाहिये ॥ ३९८ ॥

मैदे गेहूँ। ढेले चना ॥ ३९९ ॥

गेहूँ के खेत की मिट्टी मुलायम और चने की ढेलेदार होने से फसल उत्तम होती है ॥३९९॥

पछुवाँ बादर। झूठा आदर ॥ ४०० ॥

पश्चिम से उठने वाले बादर पर भरोसा करना झूठा होता है। अर्थात् उससे पानी नहीं बरसता। उसी प्रकार झूठे मनुष्यों का आदर करना वृथा होता है क्योंकि उनसे कोई काम नहीं निकलता ॥ ४०० ॥

कुम्भे आवे मीने जाय।
पेड़ी लागे पालो खाय॥ ४०१॥

कुम्भ की संक्रान्ति से गेहूं में गेरुई रोग का लगना शुरू हो जाता है और मीन की संक्रान्ति तक नष्ट हो जाता है॥ ४०१॥

जो जौ चहै तो उत्तरा गहै।
काँच पकाकर जोतत रहै॥ ४०२॥

उत्तरा नक्षत्र में कच्चे खेत को पकाकर जातने से जौ की पैदावार अच्छी होती है॥ ४०२॥

रहहै गेहूँ कुसहै धान।
गड़रा को जड़ जड़हन मान॥
फुली घास दुःख देत किसान।
वामे होय अन्न का हान॥ ४०३॥

खेत की अच्छी जुताई करने से गेहूं, कुश काटकर रोपने से धान तथा गड़रा काटने से जड़हन की खेती अच्छी होती है। जिस खेत में फुलही घास होती है उसमें कुछ भी पैदावार नहीं होती और किसान को बहुत दुःख होता है॥ ४०३॥

उत्तम खेती स्वयं सेती।
आधी केका? जो देखे तेकी॥
बिगड़े केकी? घर बैठे पूछे तेकी॥ ४०४॥

जो आदमी अपने हाथ खेती करता है उसकी खेती उत्तम होती है। जो लोग देखभाल करते हैं उनकी खेती आधी होती है, लेकिन घर बैठे पूछने वालों की खेती नष्ट हो जाती है॥ ४०४॥

खेती करो बेपनियाँ तब।
ऊपर कुआँ खुदा हो जब॥ ४०५॥

जिस खेत में सिंचाई का साधन हो, उसी में खेती करनी चाहिये। पानी के अभाव में खेती करना व्यर्थ है॥ ४०५॥

दिवाली को बोये दिवालिया ॥ ४०६ ॥

दिवाली के दिन बोआई करने वाले लोगों का दिवाला हो जाता है। अर्थात् उनकी पैदावारी मारी जाती है॥ ४०६ ॥

ईख तक खेती। हाथी तक बनिज ॥ ४०७ ॥

ईख के अतिरिक्त खेती और हाथी से बढ़कर दूसरा कोई लाभदायक व्यापार नहीं है॥ ४०७ ॥

खेती तो थोरी करै, मिहनत करै सिवाय।
इसी रीति से जो चलै, घाटा कबहूँ न खाय॥ ४०८ ॥

थोड़ी खेती और अधिक परिश्रम करने से अच्छा फल मिलता है। जो लोग इस नियम से काम करते हैं वे कभी घाटे में नहीं रहते ॥४०८॥

भड्डरी की कहावतें

महँगी और अकाल के लक्षण

जै दिन जेठ चलै पुरवाई।
तै दिन सावन धूरि उड़ाई ॥ १ ॥

जेठ के महीने में जितने दिन तक पुरवा हवा चलेगी, सावन के महीने में उतने ही दिनों तक सूखा पड़ेगा अर्थात् वर्षा नहीं होगी ॥ १ ॥

भादों कृष्ण एकादशी, जो नहिं छिटकै मेघ।
चार मास सूखा रहे, कहैं भड्डरी देख ॥ २ ॥

भड्डरी का कहना है कि अगर भादों बदी एकादशी को बादल टुकड़े टुकड़े न हों, तो लगातार चार महीनों तक बारिश न होगी ॥ २ ॥

सावन कृष्णा पंचमी, जोर को चले बयार।
तुम जाओ पिय मालवा, हम जायें पितुसार ॥ ३ ॥

यदि सावन के कृष्णपक्ष की पंचमी को जोरों की हवा चले तो हे स्वामी! तुम काम करने के लिए मालवा चले जाना और मैं अपने पिता के घर जाकर गुजर कर लूँगी। क्योंकि अकाल पड़ने वाला है ॥ ३ ॥

रात सफाई दिन को छाहीं।
भड्डर कहैं कि पानी नाहीं ॥ ४ ॥

यदि रात्रि के समय आकाश साफ हो और दिन के समय बादल घिर आवे और उनकी छाया पृथ्वी पर पड़े तो भड्डर कहते हैं कि बारिश नहीं होती है ॥ ४ ॥

जेठ बदी दसमी तिथि, जो शनिवासर होय।
पानी परै न धरनि पर, जीवे बिरला कोय॥ ५॥

यदि जेठ बदी दसमी को शनिवार का दिन पड़े तो समझना चाहिये कि वर्षा नहीं होगी ऐसी स्थिति में शायद ही कोई जिन्दा रह सके॥ ५॥

मंगलवार अमावसी, फागुन चैती जोय।
पशू बेच कन संचय कीजै, अवसि दुकाली होय॥ ६॥

अगर फाल्गुन और चैत्र मास की अमावस्या मङ्गलवार के दिन पड़े तो अवश्य ही अकाल पड़ता है। इसलिये पशुओं को बेंचकर पहले से ही अन्न एकत्रित कर रखना चाहिये॥ ६॥

माघ शुक्ल की सप्तमी, मङ्गलवार जो होय।
भड्डर जोसी यों कहैं, नाज किरानो लोय॥ ७॥

अगर माघ सुदी सप्तमी को मङ्गलवार का दिन पड़ता है तो भड्डर कहते हैं कि अनाजों में कीड़े लग जाते हैं॥ ७॥

माघ उजाली पंचमी, चले जो उत्तम बाय।
तो जानों की भादवों, बिन जल कोरो जाय॥ ८॥

यदि माघ सुदी पंचमी को अच्छी हवा चलती है तो जानना चाहिये कि भादों का महीना बिना पानी के चला जायगा। अर्थात् वृष्टि नहीं होगी॥ ८॥

पण्डित केतिक पढ़ि पढ़ि मरौ।
पूस अमावस की सुध करौ॥
मूल विसाखा पूर्वासाढ़।
झूरा जानो निचरे ठाढ़॥ ९॥

हे पण्डितो! ज्यादा पढ़कर क्यों मर रहे हो? यदि पौष की अमावस्या के दिन मूल, विशाखा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो तो समझ लो कि बहुत ही जल्द अकाल पड़ने वाला है॥ ९॥

पाँच मंगरो फागुनो, पौस पाँच शनि जोय।
भड्डर कहैं अकाल पड़तु हैं, बीज बये नहिं कोय ॥१०॥

अगर फाल्गुन महीने में पाँच मङ्गल और पौष में पाँच शनिवार पड़े तो भड्डर कहते हैं कि अवश्य ही अकाल पड़ता है। इसलिये बीजों को खेत में नहीं बोना चाहिये ॥ १० ॥

मंगल सोम पड़ै सिवराती, पछुवाँ बाउ बहै दिनराती।
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ै, राजा मरै कि धरती जरै ॥ ११ ॥

अगर सोमवार या मंगलवार को शिवरात्रि पड़े और रात-दिन पछुवाँ हवा चलती हो तो घोड़ा, रोड़ा तथा टिड्डियाँ उड़ेंगी। राजा की मृत्यु होगी अथवा जमीन सूखी ही रह जायगी ॥ ११ ॥

माघ सुदी नवमी तिथि, बादर रेख न होय।
तो सरवर भी सूखिहैं, सब जल जैहैं खोय ॥ १२ ॥

यदि माघ सुदी नवमी को आकाश स्वच्छ रहे तो इतना भीषण अकाल पड़ेगा कि तालाब भी सूख जायँगे और सारा जल नष्ट हो जायगा। कहीं भी पानी नहीं मिलेगा ॥ १२ ॥

सावन बदी एकादशी, मेघ गर्जि घहरात।
हम जाऊँ पिय मायके, तुम जाओ गुजरात ॥ १३ ॥

यदि श्रावण कृष्ण पक्ष की एकादशी को बादल गरजते हुए घहराते हों तो घोर अकाल पड़ता है। हे प्रीतम! मैं अपने नैहर चली जाऊँगी और तुम गुजर के लिए गुजरात चले जाना ॥ १३ ॥

चित्रा स्वाति विसाखहूँ, सावन नहिं बरसन्त।
हालो अन्ने संग्रहो, दूनो भाव बढ़न्त ॥ १४ ॥

यदि सावन में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र में भी पानी न बरसे तो शीघ्र ही अन्नों को जुटाकर अपने पास रख लेना चाहिये, नहीं तो दुगुना भाव बढ़ जायगा ॥ १४ ॥

आगे मेघा पीछे भान।
होवे बरखा ओस समान॥ १५॥

आगे मघा नक्षत्र और पीछे सूर्य हो तब वर्षा ओस के समान होती है। अर्थात् बहुत कम वृष्टि होती है॥ १५॥

आगे मंगल पीठ रवि, जो असाढ़ के मास।
चौपद नासै चहुँ दिशा, जीवन की नहिं आस॥ १६॥

अगर आषाढ़ के महीने में मंगल आगे हो और सूर्य पीछे तो चारों ओर चौपायों का नाश होता है और जीवन की आशा नहीं रह जाती॥ १६॥

माघ उजाली सप्तमी, सोमवार दीसन्त।
काल पड़ै राजा लड़ैं, मनई सकल भ्रमन्त॥ १७॥

यदि माघ सुदी सप्तमी को सोमवार का दिन पड़े तो राज्य-विग्रह होता है तथा सभी मनुष्य नाना प्रकार की चिन्ताओं में व्यग्र रहते हैं॥१७॥

माघ उजारी तीज को, बादर बिज्जू देख।
जौ गेहूँ संग्रह करै, महँगी होसी पेख॥ १८॥

अगर माघ सुदी तीज को आकाश में बादर और बिजली दिखाई पड़े तो जौ और गेहूँ आदि अन्नों को एकत्रित कर लेना चाहिये क्योंकि महँगी होने की सम्भावना है॥ १८॥

कृत्तिका तो कोरी गई, अद्रा मेंह न बूँद।
तो भड्डर यों कहत हैं, कालहिं आवे कूद॥ १९॥

जब कृत्तिका नक्षत्र वर्षा से खाली चला जाय और आर्द्रा में एक बूँद भी पानी न पड़े तो भड्डर कहते हैं कि अवश्य ही अकाल पड़ता है॥ १९॥

नवीं असाढ़ी कृष्ण को, जो गरजै घनघोर।
जोतिसी भड्डर कहत हैं, काल पड़े चहुँ ओर॥ २०॥

यदि आषाढ़ बदी नवमी को जोरों के साथ बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़े तो चारों ओर अकाल पड़ता है। ऐसा भड्डर ज्योतिषी का कथन है ॥ २० ॥

मंगल रथ आगे चलै, पीछे चलै जो सूर।
अल्प वृष्टि तब जानिये, सकलै पड़सी झूर ॥ २१ ॥

जिस समय पहले मंगल और बाद में सूर्य होता है उस समय बहुत ही थोड़ी बारिश होती है और सब स्थानों में अकाल पड़ता है ॥ २१ ॥

सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिणी होय।
तेज अन्न अरु मन्द जल, बिरला विहरै कोय ॥ २२ ॥

श्रावण के कृष्णपक्ष की दसमी तिथि को यदि रोहिणी नक्षत्र पड़े तो अनाज महँगा होता है और वर्षा भी बहुत थोड़ी होती है। ऐसे दुःख के समय में बिरला ही कोई मनुष्य आनन्द से विचरण करता है ॥ २२ ॥

आर्द्रा भरणी रोहिणी, मघा उतारा तीन।
इन मंगल आँधी चले, होवे बरखा हीन ॥ २३ ॥

अगर मंगलवार के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी और तीनों उत्तरा नक्षत्रों में आँधी चले तो वर्षा की हानि होती है ॥ २३ ॥

जेठ उजारी तीज को, अद्रा रिष बरसन्त।
भाखै जोसी भड्डरी, दुर्भिछ अवसि परन्त ॥ २४ ॥

अगर ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को आर्द्रा नक्षत्र बरसे तो भड्डर ज्योतिषी का कहना है अवश्य ही दुर्भिक्ष पड़ता है ॥ २४ ॥

रोहिणी माहीं रोहिणी, घड़ी एक जो दीख।
हाथ में खपरा मेदिना, दर-दर माँगै भीख ॥ २५ ॥

चैत्र के महीने में एक घड़ी भी रोहिणी होवे तो ऐसा अकाल पड़ता है कि संसार के प्राणी दर-दर भीख माँगते फिरते हैं ॥ २५ ॥

जेठ पहिल परिवा दिवस, बुधवासर जो होय।
मूल असाढ़ी जो रहै, धरती कम्पन होय ॥ २६ ॥

अगर ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा का बुधवार हो और आषाढ़ की पूर्णिमासी को मूल नक्षत्र पड़े तो भूचाल आता है ॥ २६ ॥

वायु न बाजै मृगसिरा, रोहिणी तपै न जेठ।
गोरी बीनत काँकरी, खड़ी खेजड़ी हेठ ॥ २७ ॥

यदि मृगशिरा में हवा न बहे और ज्येष्ठ में रोहिणी नक्षत्र न तपे तो किसान की स्त्री खेजड़ी वृक्ष के नीचे कंकड़ बटोरती है। अर्थात् पानी न बरसने से सूखा पड़ता है ॥ २७ ॥

असाढ़ी के पूनो दिना, निरमल होय जो चन्दा।
जाओ तुम पिय मालवा, आया दुख का फन्दा ॥ २८ ॥

यदि आषाढ़ की पूर्णिमा को स्वच्छ आसमान में चन्दा दिखाई पड़े तो हे प्रीतम! तुम मालवा देश को चले जाओ, क्योंकि यहाँ रहने से दुःख के फन्दे में फँसना पड़ेगा ॥ २८ ॥

पुरवा बादर पश्छिम जाय।
वासे वृष्टि अधिक बरसाय ॥
जो पच्छिम से पूरब जाय।
तो जानो वर्षा घट जाय ॥ २९ ॥

अगर बादल पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर जाता हो तो बहुत पानी बरसता है और पश्चिम से पूर्व की ओर बादल जाने पर वर्षा बहुत कम होती है ॥ २९ ॥

मीन शनीचर कर्क गुरु, तुला जो मंगल होय।
गेहूँ, गोरस, गोरड़ा, यह सब जावे खोय ॥ ३० ॥

अगर मीन का शनिश्चर, कर्क का बृहस्पति और तुलाराशि का स्वामी मंगल हो तो गेहूँ, दूध और ईख की पैदावार नष्ट हो जाती है ॥ ३० ॥

रात को बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
भाखै भड्डर जोतिसी, निहचै होय अकाल॥ ३१॥

अगर रात्रि मे कौवे और दिन में सियार की बोली सुनाई पड़े तो अवश्य ही अकाल पड़ता है। ऐसा भड्डर ज्योतिषी का कहना है॥३१॥

क्या रोहिणी बरसा करे, बचै जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़ै, बिनसै तीनों तूर॥ ३२॥

रोहिणी नक्षत्र में वर्षा होना और जेठ मे न होना बराबर ही है। अगर कहीं कृतिका नक्षत्र में एक बूँद भी पानी पड़ जाय तो सभी फसलें नष्ट हो जाती हैं॥ ३२॥

उगे सूर पच्छिम दिसा, धनुष उगन्तो जान।
चौथे या पाँचवों दिवस, रुंड-मुंड महि मान॥ ३३॥

अगर सूर्य निकलने के समय पश्चिम की ओर इन्द्रधनुष दिखलायी पड़े तो उसके चार-पाँच दिन बाद ही पृथ्वी रुण्ड-मुण्ड से आच्छादित हो जाती है॥ ३३॥

असाढ़ कृष्ण की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख।
पिया जाइके मालवा, माँगि के खइहैं भीख॥ ३४॥

आषाढ़ बदी अष्टमी को अगर चन्द्रमा बादलों से रहित हो तो स्वामी मालवा देश मे जाकर भी भीख ही मागेंगे। अर्थात् सर्वत्र अकाल का प्रभाव रहेगा॥ ३४॥

एक मास महण दो होय।
नाज जानियो महँगा होय॥ ३५॥

अगर एक महीने में दो बार ग्रहण लगे तो समझना चाहिये कि अन्नों का भाव अवश्य तेज होगा॥ ३५॥

जिन बारा रवि संक्रमै, तिनै अमावस होय।
खप्पर ले डोलत फिरै, भीख न देवै कोय॥ ३६॥

जब संक्रान्ति और अमावस्या एक ही दिन मे पड़े तो घोर अकाल पड़ता है। खप्पर लेकर घूमने पर भी कोई भिक्षा देने वाला नहीं दिखाई पड़ता ॥ ३६ ॥

माघ उजाली चौथ को, मेघ बादलो जान।
पान और नारियल तै, निहचै महँग बिकान ॥ ३७ ॥

अगर माघ सुदी चतुर्थी को बादल रहे और पानी बरसे तो पान और नारियल का भाव तेज होता है ॥ ३७ ॥

माघ उजेरी अष्टमी, जो कृतिका दिषी होय।
की फागुन रोली पड़ै, की महँगी सावन होय ॥ ३८ ॥

माघ शुक्ल अष्टमी को कृतिका नक्षत्र पड़ने से फागुन में अकाल पड़ता है अथवा सावन मे महँगी आती है ॥ ३८ ॥

माघ छठी गरजे नहीं, महँगा होय कपास।
रहे सातवों निर्मली, बीत गई सब आस ॥ ३९ ॥

अगर माघ शुक्ल षष्ठी को बादलों की गड़गड़ाहट न सुनाई पड़े तो कपास का भाव ऊँचा हो जाता है और सप्तमी को आकाश साफ रहने से सभी आशाओं पर पानी फिर जाता है ॥ ३९ ॥

असाढ़ कृष्ण परिवा दिवस, जो मेघा गरजन्त।
छत्रिय सों छत्रिन मिलि जूझैं, निहचैं काल पड़न्त ॥ ४० ॥

यदि आषाढ़ बदी परिवा को आकाश में बादलों की गरज हो तो क्षत्रिय लोग आपस में लड़ेंगे और अवश्य ही अकाल का व्यापक प्रकोप होता है ॥ ४० ॥

चित्रा स्वाती और बिसाखा, जो बरसै आषाढ़।
जाय बसो परदेश में, परिहैं काल सुगाढ़ ॥ ४१ ॥

यदि आषाढ़ के महीने में चित्रा, स्वाती और विशाखा नक्षत्र बरस जायँ तो भीषण अकाल पड़ता है। दूसरे देश में जाकर रहने से ही गुजर हो सकती है ॥ ४१ ॥

के जु सनीचर मीन को, कै जु तुला को होय।
राजा विग्रह प्रजा छय, मरण सभी का होय ॥ ४२ ॥

जब शनि मीन या तुला राशि पर चल रहा हो तो राजाओं में लड़ाई होती है और प्रजा का नाश होता है। ऐसी दशा में सभी लोगों की मरण होती है ॥ ४२ ॥

माघ शुक्ल आठें दिवस, वार पड़ै जो चन्द।
घीव तेल की जानिये, महँगी होय दुचन्द ॥ ४३ ॥

माघ सुदी अष्टमी को सोमवार का दिन पड़ने से घी और तेल के भाव की दुगुनी वृद्धि होती है ॥ ४३ ॥

सावन उजली सप्तमी, उवत जो निकलै भान।
तो जल मिलिहैं कूप में, या गंगा असनान ॥ ४४ ॥

यदि श्रावण सुदी सप्तमी को आकाश स्वच्छ रहे और सूर्य उदित हुआ दिखलायी दे तो सूखा पड़ता है। उस काल में पानी कूप या गंगा में ही मिल सकता है ॥ ४४ ॥

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहणी अखतीज।
स्रवन बिना हो सावनी, निकलै आधा बीज ॥ ४५ ॥

अमावस्या के दिन मूल, अक्षयतृतिया को रोहणी और सावन की पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र न पड़ने से खेत में बोया हुआ बीज आधा ही अंकुरित होता है ॥ ४५ ॥

सूर उगन्ते भादवाँ, अमावस हो रविवार।
धनुष उगन्ते पच्छिम, दुःख से करै पुकार ॥ ४६ ॥

अगर भादों की अमावस्या को रविवार पड़े और उस रोज सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्रधनुष दिखाई पड़जाय तो संसार के प्राणी दुःखी होकर चिल्लाने लगते हैं ॥ ४६ ॥

आश्विन कृष्ण अमावसी, दिवस रहे सनिवार।
समया होवै कीकरो, भड्डर कहैं विचार ॥ ४७ ॥

जब कुआर बदी अमावस्या को शनिवार पड़े तो वर्षा का समय सामान्य रहता है ॥ ४७ ॥

मूल गल्यो रोहणी गली, अद्रा बाजे बाय।
हाली बेंचो बधिया, खेती गुन न लखाय। ४८ ॥

मूल और रोहिणी नक्षत्र में बादल रहे और आर्द्रा में हवा बहे तो जल्दी ही बैलों को बेंच डालना चाहिये क्योंकि खेती करने से कुछ भी लाभ नहीं दिखाई पड़ता ॥ ४८ ॥

स्वाती दीपक जो बरै, खेल विसाखा गाय।
घना गयन्दा रन चढै, उपजी खेती जाय ॥ ४९ ॥

अगर कहीं स्वाती नक्षत्र में दीपावली पड़े और कार्तिक सुदी परिवा के दिन विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा दिखाई पड़े तो भयानक युद्ध होता है और खेती की फसल मारी जाती है ॥ ४९ ॥

माघ उजारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय।
तो यों भाखैं भड्डरी, महँगा अन्न बिकाय ॥ ५० ॥

अगर माघ शुक्ल द्वितीया के दिन बादलों में बिजली चमकती हो तो भड्डरी का कथन है कि अनाज बहुत ही महँगा बिकेगा ॥ ५० ॥

चैत मास की पहिली दसमी, बादल बिजुरी होय।
तो जानो मन माँहि यह, गर्भ गला सब जोय ॥ ५१ ॥

यदि चैत्र बदी दसमी को बादलों के साथ बिजली चमके तो वर्षा का गला हुआ गर्भ जानना चाहिये। अर्थात् बहुत ही कम वृष्टि होगी ॥ ५१ ॥

अखै तीज रोहिणी न होय।
पूस अमावस मूल न जोय ॥
राखी श्रवणो हीन बिचारो।
कातिक पूनो कृतिका टारो ॥

धरती पर खल बलहिं प्रकासै।
भड्डर कहते धानै नासै ॥ ५२ ॥

यदि अक्षयतृतीया के दिन रोहिणी, पूस की अमावस को मूल, सावन की पूर्णिमा को श्रवण, कार्तिक पूर्णमासी को कृतिका नक्षत्र न पड़े तो पृथ्वी पर दुष्टजनों का उपद्रव बढ़ता है और धान की फसल बर्बाद होती है। ऐसा भड्डरी का वचन है ॥ ५२ ॥

तपा जेठ में जो चुई जाय।
नखत सभी ओछे परि जाय ॥ ५३ ॥

दसतपा (मृगशिरा के अंतिम दस दिन) में यदि थोड़ी वर्षा भी हो जाती है तो आगे आने वाले सभी नक्षत्र हलके पड़ जाते हैं। अर्थात् बारिश जितनी होनी चाहिये, उतनी नहीं होती ॥ ५३ ॥

सुदी असाढ़ में बुध को, उदय भयो जो पेख।
सुक्र अस्त सावन रहे, महाकाल अवरेख ॥ ५४ ॥

यदि आषाढ़ महीने के शुक्लपक्ष में बुध उदय हो और श्रावण में शुक्रास्त हो तो भयंकर अकाल का सामना करना पड़ता है ॥ ५४ ॥

आगे मघा पीछे भान।
पानी की रट करै किसान ॥ ५५ ॥

अगर पहले मघा और बाद में सूर्य हो तो सूखा पड़ता है। किसान पानी के लिए रटन करता रहता है ॥ ५५ ॥

सावन उजली सप्तमी, चन्दा छिटिक परै।
की जल पावै कूप में, की कामिनी सीस धरै ॥ ५६ ॥

सावन सुदी सप्तमी को आसमान स्वच्छ रहे और साफ चाँद दिखाई पड़े तो फिर पानी का बहुत ही अभाव हो जाता है। यहाँ तक कि कूएँ और स्त्रियों के सिर पर के घड़े के अतिरिक्त कहीं भी पानी नजर नहीं [आ]ता ॥ ५६ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, बरसे जो अधिरात।
पिया जाव तू मालवा, हम जायें गुजरात ॥ ५७ ॥

यदि सावन सुदी सप्तमी को अर्धरात्रि के समय वर्षा हो तो हे स्वामी! तुम मालवा जाकर रहना और मैं गुजरात चली जाऊँगी। यानी अकाल पड़ने वाला है ॥ ५७ ॥

रवि के पहिले गुरु चले, ससि शुक्रा परवेस।
दिवस जु चौथे पाँचवें, रकत बहन्तो देस ॥ ५८ ॥

अगर सूर्य के पहले बृहस्पति हो और चन्द्रमा शुक्र में प्रवेश करता हो तो उसके चार-पाँच दिन बाद भयानक लड़ाई होती है। यहाँ तक कि पृथ्वी खून से लाल हो जाती है ॥ ५८ ॥

मृगसिर बाय न बादरी, रोहिणी तपै न जेठ।
अद्रा में बरसै नहीं, सहै कौन अलसेठ ॥ ५९ ॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र में हवा न बहे, बादल न दिखाई पड़े, ज्येष्ठ में कड़ाके की गर्मी न पड़े तथा आर्द्रा नक्षत्रमें वर्षा न हो तो खेती करके सिर पर झंझट मोल लेनी है ॥ ५९ ॥

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर हो या प्रात।
जो संक्रम सो जानिये, संवत महँगो जात ॥ ६० ॥

रिक्ता तिथि और क्रूर दिनों में दोपहर या सबेरे के वक्त संक्रान्ति पड़े तो पूरा वर्ष ही महँगा जानना चाहिये ॥ ६० ॥

दो भादों दो आश्विनी, दो असाढ़ के माँझ।
चाँदी सोना बेंचकर, नाज बेसाहो आज ॥ ६१ ॥

जिस साल दो भादों, दो कुआर और दो आषाढ़ का महीना पड़े तो चाँदी-सोने के सभी जेवरातों को बेंचकर पहले ही अनाज खरीद कर रख लेना चाहिये। क्योंकि आगे चलकर अकाल पड़ेगा और अन्नों का भाव बढ़ेगा ॥ ६१ ॥

सावन में पुरुवा बहे, भादों में पछियाँव।
बैलन को पिय बेंच के, लरिका जाय जियाव ॥ ६२ ॥

जब सावन में पुरुवा और भादों में पछुवाँ हवा चले तो हे नाथ! बैलों को बेंचकर बच्चों की परवरिश करनी पड़ेगी। यानी वृष्टि बहुत ही थोड़ी होगी ॥ ६२ ॥

तेरह दिन का होवे पाख।
अन्न महँग जानो बैसाख ॥ ६३ ॥

जिस महीने में तेरह दिनों का पक्ष पड़ता है तो अनाज की महँगी होती है ॥ ६३ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, उवत जो दीखे भान।
हम जायें पिय मायके, तुम करलो गुजरान ॥ ६४ ॥

यदि सावन सुदी सप्तमी को आसमान निर्मल रहे और सूर्य दिखायी पड़े तो समझो कि इस साल सूखा पड़ेगा। इसलिये हे स्वामी! मैं अपने पिता के घर चली जाऊँगी और तुम किसी तरह गुजर कर लेना ॥ ६४ ॥

ज्येष्ठा आर्द्रा सतभिखा, स्वाती सुलेखा माँहि।
संक्रम हो तो जानिये, महँगा नाज बिकाहिं ॥ ६५ ॥

यदि ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा, स्वाती और आश्लेषा नक्षत्रों में संक्रान्ति पड़तो है तो अन्नों की महँगी होती है ॥ ६५ ॥

भादों जे दिन पछुवाँ ब्यारी।
ते दिन माघे पड़ती ठारी ॥ ६६ ॥

भादों के महीने में जितने दिन तक पछियाँ हवा बहती है, माघ में उतने ही दिन पाला पड़ता है ॥ ६६ ॥

मघादि पंच नछत्तरा, शुक्र होय पच्छिम दिसि जोय।
तो यों भाखें भड्डरी, पानी पृथ्वी न होय ॥ ६७ ॥

भड्डरी का कहना है मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त तथा चित्रा नक्षत्रों में यदि शुक्र पश्चिम दिशा में रहे तो वर्षा नहीं होती है ॥ ६७ ॥

है यहाँ तक कि केवल कंकड़ भीगकर ही रह जाता है और सिंह राशि में पानी न बरसे तो टिड्डियों का प्रकोप होता है ॥ ७८ ॥

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहि बिचार।
पंद्रह महुरत की हो जोय, पूरन देश बिरानो होय ॥७९॥

यदि कर्क की संक्रान्ति मंगलवार और मकर की शनिवार को पड़े और वह पन्द्रह मुहूर्त की रहे तो सम्पूर्ण देश वीरान हो जाता है। अर्थात् बड़ा भारी अकाल पड़ता है ॥ ७९ ॥

रविवार करै धनवाना होय। सोम करै सेवा फल होय।
बुध,बिहफै सुकै भरै कोठार। सनि मंगल बीज न आवै द्वार॥८०॥

अगर रविवार के दिन से खेती करना शुरू करे तो वह व्यक्ति धनाढ्य होता है। सोमवार को करने से मेहनत की मजदूरी भर मिलती है। बुध, बृहस्पति और शुक्रवार को करे तो पैदावार अच्छी होती है और शनि मंगल को करने से हानि उठानी पड़ती है। बीज बोने भर के लिए भी अन्न नहीं पैदा होता है ॥ ८० ॥

एक राशि छः ग्रह अवलोके।
महाकाल को हीन्हों कोको ॥ ८१ ॥

अगर एक राशि के ऊपर छः ग्रह स्थित हो तो महाकाल का आगमन होता है ॥ ८१ ॥

सुदी जेठ के पाख में, आर्द्रादिक दस रिच्छ।
सजल होय निरजल कहत, निरजल सजल प्रत्यच्छ॥८२॥

अगर आर्द्रादिक दस नक्षत्र जेठ के शुक्ल पक्ष में बरसे तो चार महीने तक सूखा पड़ता है। न बरसने से चारों महीने में वर्षा होती है ॥ ८२ ॥

माघ सुदि परिवा उजरो, बादर बिज्जु जो होय।
सरसों अरु तेलन की, नित्ते महँगी होय ॥ ८३ ॥

यदि माघ सुदी प्रतिपदा को आसमान मे मेघ दिखाई पड़े और बिजली भी चमके तो घी और तेल का भाव नित्यप्रति बढ़ता जाता है ।. ८३ ॥

शनि सूर या मंगल, पूस अमावस होय ।
दूना तिगुना, चौगुना, अन्न की बढ़ती होय ॥८४॥

अगर पौष मास की अमावस्या को शनिवार, रविवार अथवा मंगलवार पड़े तो अन्नों के भाव में दुगुनी, तिगुनी और चौगुनी वृद्धि होती है ॥ ८४ ॥

कातिक मावस देखो जोसी ।
शनि रवि भौमवार जो होसी ॥
स्वाति नखत अरु आयुष जोगा ।
पड़ै काल नासै सब लोगा ॥ ८५ ॥

दिवाली के दिन अगर शनिवार, रविवार या मंगलवार पड़े, साथ ही उस दिन स्वाती नक्षत्र और आयुष्य योग भी रहे तो देशमें अकाल पड़ता है तथा आदमियों का नाश होता है । ऐसा भड्डर ज्योतिषी का कहना है ॥ ८५ ॥

कर्क रासि में बोवै ककरी, सिंह अभोनो जाय ।
तो फिर भाखै भड्डरी, कीड़ा लगि-लगि जाय ॥ ॥ ८६ ॥

अगर कर्क राशि में ककड़ी की बोआई करे और सिंह मे न करे तो उसमे बार-बार कीड़े लग जाया करते है । भड्डरी का ऐसा वचन है ॥ ८६ ॥

सुकाल और वृष्टि

बादर पर जब बादर धावै।
कह भड्डर जल तुरतै आवै॥ ८७॥

भड्डरी का कहना है कि जब बादलों के ऊपर बादल दौड़े तो बहुत जल्द ही वर्षा होती है॥ ८७॥

असाढ़ सुदी पूनो दिवस, गाज बीज बरसन्त।
नासै लच्छन काल का, खुसी मनावो कन्त॥ ८८॥

यदि आषाढ़ की पूर्णमासी को बादल गरजे, पानी बरसे और बिजली भी चमके तो हे स्वामी! तुम खुशी की गीत गाओगे॥८८॥

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो फिर बोले भड्डरी, उपज सवाई आय॥ ८९॥

अगर सावन कृष्ण चतुर्थी को पानी बरसे तो सवाया अन्न पैदा होता है। ऐसा भड्डरी का कहना है॥ ८९॥

जेठ मास जो तपै निरासा।
तब होवे बरखा की आसा॥ ९०॥

अगर जेठ के महीने में कड़ाके की गर्मी पड़े तो वर्षा होने की उम्मीद करनी चाहिये॥ ९०॥

चैत पूर्णिमा होइ जो, सोम गुरौ बुधवार।
घर घर बजे बधावड़ा, होवे मंगलचार॥ ९१॥

अगर चैत्र की पूर्णिमा को सोमवार, बृहस्पतिवार अथवा बुधवार पड़े तो घर-घर में बधाई बजती है और मंगलगान होता है॥ ९१॥

तीतर बरनी बादरी, विधवा काजर रेख।
वह बरसै यह घर करै, कहैं भड्डरी लेख॥ ९२॥

भड्डरी का निश्चयतापूर्वक कहना है कि अगर बादल का रंग तीतर के रंग के समान हो और विधवा स्त्री आँखों में काजल लगाती

हां तो वह (बादल) पानी बरसेगा और यह (विधवा) दूसरे पुरुष के साथ चली जायगी ॥ ९२ ॥

सुक्रवार की बादरी, रही शनीचर छाय।
तो यों बोलै भड्डरी, बरसे बिन नहिं जाय ॥ ९३ ॥

भड्डरी का कथन है कि अगर शुक्रवार के दिन बदली आवे और शनिवार तक आकाश में छायी रहे तो अवश्य ही पानी बरसता है ॥९३॥

सावन पहली पञ्चमी, गरभे निकले भान।
बरखा होवे अति घनी, बहुतै उपजे धान ॥ ९४ ॥

सावन बदी पंचमी को अगर सूर्य बादलों की ओट से निकलता हुआ दिखाई पड़े तो घनघोर वृष्टि होती है और धान की पैदावार भी अधिकता से होती है ॥ ९४ ॥

जेठ उतरते बोले दादर।
तो जानो बरसेगा बादर ॥ ९५ ॥

जेठ का महीना समाप्त होते ही अगर मेढ़कों की बोली सुनाई पड़े तो जानना चाहिये कि वर्षा होने वाली है ॥ ९५ ॥

फागुन बदी सुदूज दिन, रहे न बादर बीज।
बरसै सावन भादवाँ, सन्त मनाओ तीज ॥ ९६ ॥

अगर फागुन बदी द्वितीया के दिन आकाश बादल और बिजली से रहित हो तो सावन-भादोंमें अच्छी बारिश होती है। इसलिये आनन्द पूर्वक तीज के त्योहार में शामिल होना चाहिये ॥ ९६ ॥

माघ शुक्ल की सप्तमी, बिज्जु मेह हिम होय।
चार महीना बरिसै, सोच देव सब खोय ॥ ९७ ॥

माघ सुदी सप्तमी को बादल बिजली और ठण्ढक हो तो किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि चार महीने तक वर्षा होती है ॥ ९७ ॥

माघ अन्धेरी सप्तमी, मेह बिज्जु चमकन्त।
चौमासे भर बादला, सोक करो नहिं कन्त॥ ९८॥

अगर माघ बदी सप्तमी को आकाश में बादल छाये हों और बिजली चमकती हो तो हे नाथ! किसी बात का शोक न करो, क्योंकि चार महीने तक अच्छी वर्षा होगी॥ ९८॥

मार्ग बदी आठें घन दरसै।
तो जानो सावन भरि बरसै॥ ९९॥

अगर अगहन बदी अष्टमी को बादल दिखाई पड़े तो समझना चाहिये कि सावन भर पानी बरसेगा॥ ९९॥

सावन उमसे भादों जाड़।
बरखा देखै मार कछाड़॥ १००॥

अगर सावन के महीने में गर्मी और भादों में सर्दी पड़े तो समझना चाहिये कि उत्तम वर्षा होगी॥ १००॥

माघ उजेली सप्तमी, बादल मेघ करन्त।
तो असाढ़ में भड्डरी, घोर मेघ बरसन्त॥ १०१॥

अगर माघ सुदी सप्तमी को बादल रहे तो भड्डरी की राय है कि आषाढ़ में खूब वर्षा होगी॥ १०१॥

पूस अँधेरी तेरसै, जो बादर चहुँओर।
सावन पूनो मावसे, जलधर अतिहीं ओर॥ १०२॥

अगर पूस बदी तेरस के दिन चारों दिशाओं में बादल छाये रहें तो सावन की अमावस्या और पूर्णमासी को ओरों की वृष्टि होती है॥१०२॥

पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी गाज।
रहे मेघ तो जान लो, बनिहैं बिगड़ो काज॥ १०३॥

पौष शुक्ल सप्तमी, अष्टमी और नवमी तिथि को बादलों की गरज सुनाई पड़े तो जान लेना चाहिये कि बिगड़ा हुआ सारा काम बन जायगा॥ १०३॥

आर्द्रा तो बरसै नहीं, मृगसिर चले न बाय।
तो जानो फिर धरनि पर, एको बूँद न आय॥ १०३॥

यदि आर्द्रा नक्षत्र में पानी न बरसे, मृगशिरा में हवा न बहे तो समझ लो कि वर्षा की एक बूँद भी पृथ्वी पर नहीं गिरेगी॥ १०४॥

माघ पाँच जो हों रविवार।
जोसी समया करो विचार॥ १०४॥

अगर माघ के महीने में पाँच रविवार पड़े तो ज्योतिषियों को उसके फल का विचार करना आवश्यक है॥ १०५॥

असाढ़ सुक्क पूनो दिना, बादर भीनो चन्द।
तो भड्डर जोसी कहैं, विहरैं नर स्वच्छन्द॥ १०६॥

यदि आषाढ़ में पूर्णिमा को चन्द्रमा बादलों से आच्छादित हो तो भड्डरी का कहना है कि मनुष्य सुखपूर्वक विहार करेंगे॥ १०६॥

धुर असाढ़ी बिज्जुकी, चमक निरन्तर जोय।
सोमा, सुकरा सुरगुरा, बरखा भारी होय॥ १०७॥

अगर आषाढ़ शुक्ल पक्ष में सोमवार, शुक्रवार, और गुरुवार को थोड़ी-थोड़ी दूर पर बराबर बिजली की चमक दिखाई पड़े तो घनघोर बारिश होती है॥ १०७॥

असाढ़ सुक्क नवमी दिवस, बादर झीनो चन्द।
सच मानो यह भड्डरी, होवे बहुत अनन्द॥ १०८॥

आषाढ़ सुदी नौमी को चन्द्रमा के ऊपर बादलों की आभा दिखाई पड़े तो बहुत ही आनन्द मिलता है। भड्डरी के इस बात को सत्य मानना चाहिये॥ १०८॥

सावन सुक्का सतमी, छिपि के निकले भान।
तब लगि मेघ बरीसिहैं, जब लगि देव बिहान॥ १०९॥

सावन सुदी सतमी को यदि सूर्य उदय होते समय बदली के कारण

न दिखलायी पड़े तो जानना चाहिये कि कार्तिक सुदी एकादशी (देवोत्थान) तक वर्षा होती रहेगी ॥ १०९ ॥

कलसे पानी गरम है, चिरिया न्हावैं धूर।
लै अण्डा चींटी चढ़ैं, जल देवे भरपूर॥ ११० ॥

अगर मिट्टी के घड़े में रखा हुआ पानी गरम मालूम पड़े, चिड़ियाँ धूल में नहायें और चींटियाँ अण्डों के सहित चलें तो वर्षा खूब ही होती है ॥ ११० ॥

सावन पछुवाँ भादों पुरुवा, आसिन बहै इसान।
कातिक में फिर सींक न डोलै, गावैं सभी किसान॥ १११ ॥

अगर सावन के महीने मे पछुवाँ, भादों में पुरुवा और कुआर में ईशान कोण की हवा चले तो कार्तिक में एक पत्ती भी नहीं हिलती है। इसलिए सभी किसान खुशी का गीत गाते हैं। क्योंकि कार्तिक के महीने में हवा बन्द रहने से फसल अच्छी होती है ॥ १११ ॥

जिन बाराँ रवि सँक्रमै, तासों चौथे बार।
असुभ परन्ती सुभ करै, भड्डर कहैं विचार॥ ११२ ॥

जिस दिन संक्रान्ति रहे उसके चौथे दिन खराब दिन पड़ने पर भी कोई काम करने से शुभ फलदायक होता है। ऐसा भड्डर का विचार है ॥ ११२ ॥

उत्तरा उत्तर दै गई, हस्त लियो मुँह मोर।
भली बिचारी चित्रा, परजा लेय बहोर॥ ११३ ॥

उत्तरा नक्षत्र ने कोरा जवाब दे दिया और हस्त ने भी मुँह फेर लिया अर्थात् यदि इन नक्षत्रों में पानी न बरसे तो भी अगर चित्रा बरस दे तो भागती हुई प्रजा फिर से वापस आ जाती है। क्योंकि अच्छी फसल होने की आशा रहती है ॥ ११३ ॥

पूर्ण तपै जो रोहिणी, तपै पूर्ण जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ में, होवे सातो तूर॥ ११४ ॥

अगर रोहिणी और मूल नक्षत्र पूरा तप जाय और जेठ की परिवा तिथि भी तपै यानी पानी न बरसे तो सभी फसलें अच्छी होती हैं ॥११४॥

मोर पंख बादर उठै, काजर देखो विधवा माहिं।
वह बरसे वह घर करै, यामें संशय नाहिं ॥ ११५ ॥

अगर मोरपंख की तरह बादल उमड़े और विधवा स्त्री आँखों में काजल दे तो समझ लो कि बादल से पानी बरसेगा और विधवा पर-पुरुष का संग करेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं ॥ ११५ ॥

अद्रा भद्रा कृत्तिका, आद्र रेखा जु मघाहिं।
चन्दा उगै दूज को, सब नर सुखी लखाहिं ॥ ११६ ॥

यदि दूज का चाँद आर्द्रा, कृतिका, आश्लेषा, मघा आदि नक्षत्रों में अथवा भद्रा योग में उदय हो तो सभी मनुष्य सुखी दिखाई पड़ते हैं ॥ ११६ ॥

कर्क के मङ्गल होय भवानी।
निहचै जानो बरसै पानी ॥ ११७ ॥

अगर कर्कराशि पर मङ्गल हो तो जानना चाहिये कि अवश्य ही बारिश होगी ॥ ११७ ॥

जो पुरवा पुरुवाई पावे।
सूखी नदिया नाव चलावे।
ओरी क पानी बड़ेरी धावे ॥ ११८ ॥

यदि पूर्वा नक्षत्र में पुरवा हवा बहे तो इतनी अधिक वृष्टि होगी कि सूखी नदियों में भी नाव चलेगी अर्थात् पानी से भर जायेगी और ओलती का पानी खपरैल पर चला जायगा ॥ ११८ ॥

तीतर बरनी बादरी, आसमान पर छाय।
तो फिर भाखै भड्डरी, बिन बरसे नहिं जाय ॥ ११९ ॥

भड्डरी का कथन है कि जिस बदली का रंग तीतर के पंख के समान हो, वह अवश्य ही बरसती है ॥ ११९ ॥

पूरब को घन पच्छिम चलै, हँसि के राँड़ बतकही करै।
वह बरसै वह करै भतार, कहैं भड्डरी सगुन विचार ॥१२०॥

भड्डरी का विचार है कि यदि पूर्व का बादल पश्चिम की ओर जाता हो और राँड़ स्त्री दूसरे पुरुष के साथ हँसकर बातें करती हो तो बादल से पानी बरसेगा और विधवा पराये आदमी का साथ अवश्य ही कर लेगी ॥ १२० ॥

सावन केरे प्रथम दिन, उगत न दीसै भान।
चार महीना मेघा बरसै, बात साँच यह जान ॥ १२१ ॥

अगर सावन सुदी परिवा का सूर्योदय के समय बादल रहें और सूर्य न दिखाई पड़े तो लगातार चार मास तक वर्षा होती है। यह बात सत्य माननी चाहिये ॥ १२१ ॥

जाड़े में सूतो भलो, बैठो बरखा काल।
गरमी में ऊभो भलो, आवे बहुत सुकाल ॥ १२२ ॥

अगर दूइज का चन्द्रमा जाड़े में सोया हुआ हो, बरसात में बैठा रहे और गर्मी में खड़ा हुआ हो तो शुभ फलदायक होता है। अर्थात् समय अच्छा आता है ॥ १२२ ॥

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़-खाबड़ बोय दे, उपज घनेरी होय ॥ १२३ ॥

भादों सुदी छठ को अनुराधा नक्षत्र पड़ने से चाहे कैसी भी जमीन में बोआई की जाय, तब भी फसल अच्छी होती है ॥ १२३ ॥

आसाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चन्द।
तो फिर बोलै भड्डरी, सकल नरा चित्त्चरन्द ॥ १२४ ॥

अगर आषाढ़ की पूर्णिमा को चन्द्रमा बादलों से ढँका हो तो भड्डरी का वचन है कि सभी मनुष्य आनन्दपूर्वक विचरण करेंगे ॥१२४॥

सावन बदी एकादशी, बादल ऊगै सूर।
तो भड्डर जोशी कहैं, घर-घर बजै तँबूर ॥ १२५ ॥

सावन बदी एकादशी को अगर सूर्योदय के समय बादल छाये रहे तो भड्डर ज्योतिषी का कहना है कि समय बहुत ही उत्तम होगा। प्रत्येक घरों मे अमन-चैन रहेगा ॥ १२५ ॥

जो बादर-बादर माँ समसे।
भड्डर कहैं कि पानी बरसे ॥ १२६ ॥

भड्डरी कहते हैं कि जब बादल आपस मे मिलने लगे तो अवश्य ही वर्षा दिखायी पड़ती है ॥ १२६ ॥

दसी असाढ़ी कृष्ण को, मंगल रोहिनी होय।
सस्ता धान बिकायगो, हाथ न छुइहैं कोय ॥ १२७ ॥

आषाढ़ के कृष्ण पक्ष मे मंगलवार और रोहिणी नक्षत्र पड़ जाय तो धान का भाव बहुत सस्ता हो जायगा। यहाँ तक कि उसका कोई लेनदार नहीं रहेगा ॥ १२७ ॥

जो चित्रा में खेलै गाई।
खाली साख जाय नहिं भाई ॥ १२८ ॥

अगर कार्तिक शुक्ल परिवा अर्थात् अन्नकूट के दिन चित्रा नक्षत्र में चन्द्रमा रहे तो अच्छी पैदावार होती है ॥ १२८ ॥

अगहन द्वादस मेघ अखाड़।
असाढ़ बरसे मूसलाधार ॥ १२९ ॥

अगर अगहन बदी द्वादशी को घनी बदली हो तो आषाढ़ में मूसलाधार वृष्टि होती है ॥ १२९ ॥

असाढ़ मास आठैं अँधियारी।
जो उगै चन्दा जलधारी ॥
चन्दा निकले बादल फोड़।
साढ़े तीन मास बरखा का जोड़ ॥ १३० ॥

अगर आषाढ़ बदी अष्टमी को बादलों के भीतर से चाँद निकलता दिखाई पड़े तो साढ़े तीन महीने तक वर्षा की उम्मीद करनी चाहिये ॥ १२० ॥

चैत मास जो बिज्जु बिजोवै।
भरि वैसाखहिं टेसू धोवै ॥ १२१ ॥

जब चैत के महीने में बिजली चमके तो वैशाख में पानी की अधिकता से टेसू के फूल का रंग धुल कर साफ हो जाता है ॥ १२१ ॥

चैत मास दसमी खड़ा, जो कहुँ खाली जाय।
चार महीना अम्बरा, भली भाँति बरसाय ॥ १२२ ॥

यदि चैत महीने की दसमी को बादलों से आकाश स्वच्छ हो तो चार महीने तक निरन्तर वर्षा होती है ॥ १२१ ॥

माघ जो साते कज्जली, आठैं बादर जोय।
तो असाढ़ में धूरवा, भड्डर बरखा होय ॥ १२३ ॥

अगर माघ बदी सप्तमी और अष्टमी को बादल दिखाई पड़े तो जानना चाहिये कि निश्चय ही वर्षा होगी ॥ १२३ ॥

सोम सुक्र सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
घर-घर बजे बधावड़ा, सुखी रहे सब कोय ॥ १२४ ॥

यदि पौष की अमावस्या को सोमवार, शुक्रवार, और बृहस्पतिवार पड़े तो घर-घर में खुशी की बधाई बजती है और सब लोग सुखी रहते हैं ॥ १२४ ॥

पूस अँधारी सप्तमी, बिनु जल बारिद जोय।
सावन में पूनो दिना, अवसहिं बरखा होय ॥ १२५ ॥

यदि पौष कृष्णा सप्तमी को आसमान में जलरहित बादल दिखाई दे तो सावन सुदी पूर्णिमा को निश्चय ही पानी बरसता है ॥ १२५ ॥

पूस अमावस मूल को, सरसै चारों बाय।
तो फिर जानो भड्डरी, बरखा पृथी अघाय ॥ १२६ ॥

यदि पूस बदी अमावस्या को मूल नक्षत्र हो और चारों ओर से हवा चलती हो तो भड्डरी कहते हैं कि पानी से पृथ्वी सन्तुष्ट हो जाता है ॥ १३६ ॥

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवे सजूत।
तो बोलैं यों भड्डरी, उपजै अन्न अकूत ॥ १३७ ॥

अगर वैशाख सुदी तृतीया के दिन बृहस्पति हो तो भड्डरी का कहना है कि बहुत ही अधिक पैदावार होती है ॥ १३७ ॥

पौस अँधेरी दसम दिन, बादल चमकै बीज।
तो बरसै भर भादवाँ, साधो देखो तीज ॥ १३८ ॥

यदि पौष बदी दसमी को बादल छाये हों और बिजली चमके तो भादों में महीने भर वर्षा होती है। इसलिए सब लोगों को खुशी से तीज का पर्व मनाना चाहिये ॥ १३८ ॥

कातिक उजली ग्यारहैं, बादल बिजुली जोय ॥
तो फिर बोलै भड्डरी, असाढ़े बरखा होय ॥

अगर कार्तिक शुक्ल एकादशी को बादल और बिजली दिखाई पड़े तो भड्डरी कहते हैं कि आषाढ़ में खूब वृष्टि होगी ॥ १३९ ॥

पूस अँधेरी सप्तमी, जो पानी नहिं आय।
तो अद्रा बरसै सही, जल थल एक मिलाय ॥ १३९ ॥

यदि पूस बदी सप्तमी को पानी न बरसे तो आर्द्रा नक्षत्र में वृष्टि से पृथ्वी जलमग्न हो जायगी ॥ १४० ॥

मार्ग महीना माँहि जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।
तो फिर जानो भड्डरी, खोवै सातो तूर ॥ १४० ॥

अगर अगहन में ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र न तपै तो भड्डरी कहते हैं कि सभी प्रकार के अन्नों की पैदावार मारी जाती है ॥ १४० ॥

माघ अँधेरी नवम दिन, मूला रिच्छ को भेद।
तो भादों नवमी दिवस, बरसै जल बिन खेद ॥ १४१ ॥

यदि माघ कृष्ण नवमी के दिन मूल नक्षत्र पड़ जाय तो भादों बदी नवमी को अवश्य ही वृष्टि होती है ॥ १४१ ॥

कातिक उजली पूनिमा, कृतिका रिष हो जोय।
तामें बादर बीजुरी, जो संजोग सों होय॥
चार मास तो बरखा होसी।
साँच बात भाखैं यह जोसी ॥ १४२ ॥

जब कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र पड़े और आकाश में बादल बिजुली हो तो समझना चाहिये कि चार महीने तक पानी बरसेगा ॥ १४२ ॥

मार्ग बदी आठैं दिवस, बादर बिज्जु हो जोय।
तो सावन बरसो भलो, उपज सवाई होय ॥ १४३ ॥

यदि अगहन बदी अष्टमी को आकाश में बादलों के साथ बिजली भी चमके तो सावन के महीने में अच्छी बारिश होती है और उपज भी सवाई होती है ॥ १४३ ॥

मिश्रित विषय

सावन बदी एकादशी, जेती रोहिणी होय।
तेतो अन्न उपजिहैं, सोच करो जनि कोय ॥ १४४ ॥

सावन बदी एकादशी को जितने समय तक रोहिणी रहेगी उसी के हिसाब से अन्नों की उपज भी होगी। इसलिए किसी बात की फिकर नहीं करनी चाहिये ॥ १४४ ॥

मास रिक्ष जो तीज अँधारी, ताहि जोतिषी लेहु बिचारी।
तिहि नक्षत्र हो पूरनमासी, तो फिर चन्द्रगहन लग जासी।१४५।

'किसी महीने के कृष्णपक्ष की तृतीया को जो नक्षत्र पड़े और

पूर्णिमा को भी वही नक्षत्र रहे तो अवश्य ही चन्द्रग्रहण का योग पड़ता है ॥ १४५ ॥

सोम सनीचर पूरब न चाल, मंगल बुध उत्तर दिसि काल।
बीफे दक्खिन करै पयाना, ताको समझो फिर नहिं आना ॥
बुद्ध कहैं मैं बड़ा सयाना, हमरे दिन जो करै पयाना।
कौड़ी से नहिं भेट कराऊँ, छेम कुशल से घर ले जाऊँ ॥१४६॥

सोमवार और शनिवार के दिन पूर्व दिशा की यात्रा निषेध होती है। मंगलवार और बुधवार को उत्तर की ओर नहीं जाना चाहिये। जो बृहस्पतिवार को दक्षिण की यात्रा करता है उसका लौटकर पुनः वापस आना सम्भव नहीं है। बुद्ध का कहना है कि मैं बड़ा चालाक हूँ, मेरे दिन कहीं की भी यात्रा न करना चाहिये नहीं तो एक कौड़ी भी नहीं मिलती; लेकिन उस आदमी को किसी प्रकार राजी खुशी से घर पहुँचा देता हूँ ॥ १४६ ॥

लोवा फिरि फिरि दरस दिखावै, बायें ते दहिने मृग आवै।
भड्डर जोसी सगुन सुनावै। सगरे काज सिद्ध हो जावै ॥१४७॥

भड्डरी का कहना है कि अगर यात्रा के समय रास्ते में बार बार लोमड़ी दिखाई दे और बायीं ओर से दाहिनी ओर को हरिण आता दिखाई पड़े तो सगुन अच्छा होता है ॥ १४७ ॥

नारि सुहागिन घट भरि लावै।
दही मीन जो सन्मुख आवै ॥
सनमुख धेनु पियावै बच्छा।
सगुन होत है सबसे अच्छा ॥ १४८ ॥

यात्रा में जाते समय यदि सौभाग्यवती स्त्री जल से भरा हुआ कलश लिये मिले, सामने दही या मछली मिल जाय, सामने गाय बछड़े को दूध पिलाती हुई दीख पड़े तो शकुन बहुत ही अच्छा होता है ॥ १४८ ॥

चलत समय नकुला दरसाय, बाम भाग चाराचख खाय।
काग दाहिने स्वेत सुहाय, मनोरथ सकल पूर्ण हो जाय।१४६।

बाहर जाते समय अगर राह में नेवला आजाय अथवा नीलकण्ठ पक्षी बाईं ओर चारा चुँगता हुआ दीख पड़े या दाहिनी ओर कौवा बैठा दिखाई दे तो जानना चाहिये कि सब काम पूर्ण हो जायगा।१४६।

भैंस पाँच षट स्वान, एक बैल यक बकरा जान।
तीन गऊ गज सात प्रमान, राह मिले जनि करो पयान।१५०।

यात्रा के समय राह में यदि पाँच भैंसें, छः कुत्ते, एक बैल, एक बकरा, तीन गायें और सात हाथी आते दिखाई पड़े तो अपशकुन समझ कर घर लौट आना चाहिये ॥ १५० ॥

पूरब गोधूलि पश्चिम प्रात, उत्तर दुपहर दक्खिन रात।
का करै भद्रा का दिगसूल, कहै भड्डरी भागे दूर ॥ १५१ ॥

अगर किसी विशेष कारण वश दिशाशूल में ही यात्रा करनी पड़े तो भड्डरी कहते हैं कि पूर्व दिशा में गोधूली के समय, पश्चिम में प्रातःकाल उत्तर में दोपहर को और दक्षिण के लिए रात्रि के समय जाने से दोष नहीं होता है ॥ १५१ ॥

रवि को पान सोम के दरपन।
भौमवार गुड़ धनियाँ चरबन ॥
बुद्ध मिठाई बिहफै राई।
सुक्रै खावे दही मँगाई ॥
सन्नी भाभीरंगी भावै।
इन्द्रौ जीत पुत्र फिरि आवै ॥ १५२ ॥

घर से यात्रा में जाते समय रविवार के दिन पान खाकर, सोमवार के दिन शीशा देखकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, शुक्रवार को दही तथा शनिवार के दिन भाभीरंग (वायविडंग) खाकर जाने से मनुष्य इन्द्र को भी जीतकर वापस लौट आता है ॥ १५२ ॥

गवन समय जो स्वान, फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो बैस असार, तीन बिप्र औ छत्री चार॥
सनमुख आवैं जो नौ नार, तो भड्डर फिर जाओ द्वार॥१५३॥

यात्रा के समय यदि कुत्ता कान फड़फड़ावे, एक शूद्र, दो वैश्य, तीन ब्राह्मण, चार क्षत्रिय या नो स्त्रियाँ सामने से आती हुई दिखाई पड़ें तो भड्डरी का कहना है कि घर को लौट आना चाहिये, क्योंकि ये अशुभ लक्षण होते हैं॥ १५३॥

सावन सुक्ला सप्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसे तो सूखा पड़े, नीको समय लखात॥ १५४॥

अगर सावन सुदी सप्तमी को आधीरात के समय बादल गरजे और पानी बरसे तो अकाल पड़ता है और न बरसने से अच्छा समय आता है॥ १५४॥

कपड़ा पहिरै तीन बार, बुद्ध बीफे सुक्रवार।
हारे खारे इतवार, भड्डर का है यही विचार॥ १५५॥

नवीन वस्त्र पहनने के लिए बुध, बृहस्पति और शुक्रवार के दिन अच्छे होते हैं। विशेष आवश्यक होने पर रविवार के दिन भी पहना जा सकता है॥ १५५॥

मेदिनी मेघा भैंस किसान।
मोर पपीहा धोड़ा धान॥
बाढ़ै मच्छ लता अरुमानी।
दसो सुखी जब बरसै पानी॥ १५६॥

पृथ्वी, मैढ़क, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान और लताएँ पानी बरसने से सुखी होती हैं॥ १५६॥

कुक्कुर लोटै भूमि पर, धुनता हो निज अङ्ग।
जानि इहीं कुलसुल मानिये, हो निज कारज भङ्ग॥ १५७॥

अगर यात्रा के समय कुत्ता जमीन पर सोकर अँगड़ाई लेता हो तो अपशकुन जानकर यात्रा बन्द कर देनी चाहिये ॥ १५७ ॥

बिजै दसै जो बारी होय।
संवतसर को राजा सोय ॥ १५८ ॥

जिस दिन विजया दशमी पड़ती है, वही दिन वर्षा का राजा माना जाता है ॥ १५८ ॥

सिर पर गिरै बहुत सुख पावै। औ ललाट ऐश्वर्य बढ़ावै।
कंठ मिलावे पिय को लाई। काँधे पड़े विजय हो जाई ॥
जुगल कान औ जुगुल भुजाहू। गोधा गिरे होय धन लाहू।
हाथन ऊपर जो कहुँ परई। संपति सकल गेह में भरई ॥
निश्चय पीठ परे सुख लावै। काँख गिरे प्रिय बन्धु दिखावै।
कटि के परे वस्त्र बहु रंगा। गुदा परै मिल मित्र अभंगा ॥
जुगल जाँघ पर आन जो परई। धन गन सकल मनोरथ सरई।
जाँघ परे नर होइ निरोगी। पग्ग परे तन जीव वियोगी ॥
यहि विधि पल्ली सरट विचारा। भड्डर कहते जोतिस सारा ॥१५९॥

भड्डरी के मतानुसार छिपकली और गिरगिट के गिरने का निम्न-लिखित शुभाशुभ फल होता है:—सिर के ऊपर गिरने से अत्यधिक सुख की प्राप्ति और ललाट पर गिरने से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। कंठ पर गिरने से प्रियजनों से मिलाप और कन्धे से विजय की प्राप्ति होती है। अगर छिपकली या गिरगिट दोनों कानों और भुजाओं पर गिरे तो धन लाभ होता है। हाथों पर गिरे तो घर सम्पत्तिपूर्ण होता है। पीठ पर गिरने से अवश्य ही सुख मिलता है अगर काँख पर गिरे तो प्रियबन्धुओं से मिलाप होता है। कमर पर गिरने से तरह-तरह के वस्त्रों की प्राप्ति होती है, गुदा पर गिरे तो सच्चे मित्र से भेंट होती है। दोनों जाँघों पर गिरने से धन मिलता तथा सभी आशाएँ पूर्ण होती हैं।

एक जाँघ पर गिरने से मनुष्य रोगरहित होता है तथा किसी त्योहार के दिन गिरने से मृत्यु होती है ॥ १५९ ॥

न गिनब चैत न गिनब बैसाख।
न गिनब बार तीन सौ साठ॥
गनब एक मास असाढ़।
नवमी शुक्ला बार बखान॥
मंगल पड़े तो हर पड़े, बुध पड़े दुःख आन।
बाम बिधाता होय जो, पड़े शनीचर वार॥
सोमे सुक्रे रवि गुरु, भूमे अन्न भराय।
टूटे छत्र औ महि हिगै, पुनः शनीचर आय॥ १६० ॥

भड्डरी का कहना है कि चैत्र, बैशाख या पूरे मास के ऊपर विचारने की आवश्यकता नहीं है, केवल आषाढ़ सुदी नवमी पर विचार करना चाहिये। अगर अषाढ़ सुदी नवमी को मंगलवार पड़े तो हर पड़ता है, बुधवार होने से दुःख आता है। यदि शनिवार हो तो विधाता को वाम समझना चाहिये। अर्थात् बहुत बड़ी विपत्ति आती है। सोम, शुक्र, रवि और गुरुवार पड़ने से खेतों में अन्नों की बहुत उपज होती है। अगर लगातार दो साल तक आषाढ़ सुदी नवमी को शनिवार पड़े तो राजभंग और भूचाल होता है॥ १६० ॥

आदित हस्ता गुरु पुष्य योग।
बुधा अनुराधा, शनि रोहिणी च॥
सोमे च श्रवणे भृगु रेवती च।
भौमे च अश्विनि अमृत सिद्धि योग॥ १६१ ॥

रविवार को हस्त, गुरुवार को पुष्य, बुध को अनुराधा शनि को रोहिणी, सोम को श्रवण, शुक्र को रेवती और मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र पड़ने से अमृत सिद्धि योग माना जाता है॥ १६१ ॥

रवि को पान, सोम को दरपन; धनिया खावे भूमि के संग।
बुध को दही, गुरु को गुड़, शुक्रै राई शनि को भाभो रंग ॥१६२॥

यात्रा से पूर्व रविवार को पान खाना, सोमवार को शीशे में देखना, मंगल को धनियाँ, बुध को दही, बृहस्पति को गुड़, शुक्र को राई और शनिवार को भाभीरंग खाना शकुन होता है ॥ १६२ ॥

परिवा मूल, पञ्चमी भरनी, छठ के आद्रा नौमी रोहिनी।
अष्टमी हस्त में जा रहिया।

सत्तमी मघारे चित्तउ रे भाई, छहो शून्य पड़ा है जाई।
जनमें सो जीवे नहीं, बसे तो चौपट होय॥
संगर चढ़े विजय नहिं पावे, धरती अन्नै खोय।
कूआँ पोखर जो कोई खन्नै, वारि बिना हो जावे सुन्नै ।१६३।

प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पञ्चमी को भरणी, छठ को आर्द्रा, नौमी को रोहिणी, अष्टमी को हस्त, सप्तमी को मघा। ये तिथियाँ सभी कामों के लिए वर्जित हैं। इन तिथियों और योगों में पैदा होने वाला बालक काल-कवलित हो जाता है। किसी जगह जाकर बसने वाला बर्बाद होता है। युद्ध करने से हार होती है। खेती करने से पैदावार नहीं होती। कूआँ-तालाब आदि खोदने से जल-विहीन होता है। अर्थात् कोई भी शुभ कार्य करने में सफलता नहीं मिलती ॥ १६३ ॥

रवि गुरु मङ्गल एकै रेखा, कृतिका भरनी औ असलेखा।
दूइज सतमी आठैं जीया, तामें भई विष कौड़र बीया॥
आप मरे या माता खाय, धन नासै जो पर घर जाय।
चमारी जो नरकटिया करै, जेठै पुत्र बहू का मरै॥
नाउन सौर कमावे जोय, बरिस दिना रोजी को खोय।
ब्रह्मा बिसनू उतर के आवें, भाँवर पड़त राँड हो जावे॥१६४।

रविवार, गुरुवार या मंगलवार को कृतिका, भरणी अथवा

आश्लेषा नक्षत्र तथा दूइज, सप्तमी या अष्टमी तिथि पड़े तो ऐसे योग में उत्पन्न होनेवाली कन्या हलाहल होती है। या तो वह स्वयं मर जाती है या माता को ही खा डालती है। जीवित रहने पर विवाहोपरान्त पति के धन का नाश करती है। ऐसी कन्या का नालोच्छेदन करनेवाली चमाइन का जेठा लड़का मरता है। सौरी में काम करने वाली नाईन साल भर तक रोजी से हाथ धो बैठती है। विवाह के समय भाँवर पड़ते ही ऐसी कन्याएँ विधवा हो जाती हैं। स्वयं भगवान् ब्रह्मा, विष्णु भी इसको नहीं टाल सकते ॥ १६४ ॥

भरणी बिसाखा कृत्तिका, आर्द्रा औ मघमूल।
इनमें काटे कुक्कुरा, भद्रा उपजै शूल ॥ १६५ ॥

भरणी, विशाखा, कृत्तिका, आर्द्रा, मघा और मूल नक्षत्रों में कुत्ता काटने से अनिष्टकारी फल होता है ॥ १६५ ॥

होली सूक सनीचरी, मङ्गलवारी होय।
चाक चकोड़े मेदिनी, जीवे बिरला कोय ॥ १६६ ॥

शुक्र, शनि या मङ्गलवार को होली पड़ने से भारी अकाल पड़ता है। शायद ही कोई मनुष्य बच रहता है ॥ १६६ ॥

जिहि नक्षत्र में रवि तपै, तिहि अमावस होय।
साँझ समै परिवा मिलै, सूर्यग्रहण तब होय ॥ १६७ ॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य होता है उसी में अमावस्या पड़ती है और जब शाम को परिवा आ जाय तो सूर्यग्रहण लगता है ॥ १६७ ॥

सावन घड़ी एकादशी, जितनी घड़ी क होय।
तितनो सेर बिकायगो, सोच करो जनि कोय ॥ १६८ ॥

सावन बदी एकादशी को जितनी घड़ी तक एकादशी रहती है, उतने ही सेर का अन्न बिकता है। इसलिए सोच-फिकर नहीं करनी चाहिये ॥ १६८ ॥

सनमुख छींक लड़ाई भाखै।
पीठ पाछिली सुख अभिलाखै ॥
छींक दाहिनी धन बिनसावे।
बाम छींक सुख सदा दिखावे ॥
ऊँची छींक महा सुभकारी।
नीची छींक महा भयकारी ॥
अपनी छींक सदा दुखदाई।
भड्डर जोसी कह समुझाई ॥ १६९ ॥

सामने की छींक से विग्रह, पीठ पीछे से सुख, दाहिनी ओर होने से धन का नाश और बायीं ओर से सुख मिलता है। ऊँची छींक शुभ और नीची छींक अशुभ होती है। अपनी छींक सदा ही कष्टदायक होती है। ऐसा भड्डरी का वचन है ॥ १६९ ॥